1. भारतीय प्राचीन इतिहास

इतिहास 'इति + ह + आस' नामक तीन शब्दों का योग है। इसका अर्थ है कि निश्चित रूप से ऐसा हुआ। इस व्याख्या के अनुसार अतीत के जिन वृत्तान्तों को विश्वास के साथ प्रमाणित कर सकें, उसे इतिहास कहा जाता है।

प्रारंभ से लेकर वर्तमान समय तक मानव सभ्यता के विकास को तीन भागों में बांटा जाता है–

1. **प्रागैतिहास–** वह काल जब लिपि का आविष्कार नहीं हुआ था। इसके अंतर्गत मानव सभ्यता के इतिहास का अधिकतम भाग आ जाता है। इसे पुरापाषाण काल, मध्य पाषाण काल एवं नवपाषाण काल में विभाजित किया जाता है।
2. **आध इतिहास–**वह काल जिसमें लिपि का साक्ष्य तो है,लेकिन पढ़ा नहीं जा सका है। जैसे–सिन्धु सभ्यता'।
3. **इतिहास–** वह काल जिसके अध्ययन के लिए लिपि के साक्ष्य उपलब्ध होते हैं तथा इसे पढ़ा जा सका है। जैसे–मौर्य काल, गुप्त काल।

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्त्रोत

1. **धर्म ग्रंथ –**

ब्राह्मण धर्म ग्रंथ

वेद | ब्राह्मण | आरण्यक | उपनिषद् | वेदांग | स्मृतियाँ

वेद– वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। वेद शब्द का अर्थ ज्ञान होता है। कुछ लोग वेदों को अपौरूषेय अर्थात् दैवकृत मानते हैं।

ऐसा माना जाता है कि वेद की रचना तब की गई जब आर्य पंजाब में थे।

ब्राह्मण– यज्ञों एवं कर्मकाण्डों के विधान एवं इनकी क्रियाओं को समझने के लिए इसकी रचना हुई। इसे ब्रंह्म साहित्य के नाम से भी जाना जाता है। प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण होते हैं–

वेद	**ब्राह्मण**
ऋग्वेद	ऐतरेय एवं कौषितकी
यजुर्वेद	शतपथ या वाजसनेय
सामवेद	पंचविश या ताण्ड्य
अथर्ववेद	गोपथ

उपवेद	**संबंधित**
आयुर्वेद (चिकित्सा)	ऋग्वेद
गंधर्ववेद (संगीत)	सामवेद
धनुर्वेद (धनुविद्यि)	यजुर्वेद
शिल्पवेद (शिल्पकला)	अथर्ववेद

आरण्यक – दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन। इनकी कुल संख्या सात है।

उपनिषद् – इसका शाब्दिक अर्थ है– 'समीप बैठना'। अर्थात् ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरु के समीप बैठना। ब्रह्म विषयक होने के कारण इन्हें ब्रह्मविद्या भी कहा जाता है। वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग होने के कारण इन्हें वेदांत भी कहा जाता है। प्रमुख उपनिषद् है– ईश, केन, कठ, माण्डूक आदि।

वेदांग – वेदों के अर्थ को अच्छी तरह समझने के लिए, इनकी संख्या छः है। शिक्षा, व्याकरण, कल्प निरूक्त, छंद, ज्योतिष!

स्मृतियाँ – स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। मनुष्य के पूरे जीवन से सम्बन्धित अनेक क्रियाकलापों के बारे में असंख्य विधि -निषेधों की जानकारी इन स्मृतियों से मिलती है। मनुस्मृति सबसे प्राचीन है।

EduBull.com

महाकाव्य

रामायण: रामायण की रचना बाल्मीकि द्वारा पहली एवं दूसरी शताब्दी के दौरान संस्कृत भाषा में की गयी। प्रारंभ में इसमें मात्र 6000 श्लोक थे पर वर्तमान में इसमें करीब 24000 श्लोक हैं। सात काण्डों में विभाजित। भुशुण्डि रामायण को आदि रामायण कहा जाता है।

महाभारत: महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित। प्रारम्भ में मात्र 8,800 श्लोक वाले इस महाकाव्य को जयसंहिता कहा गया। वर्तमान में इसके श्लोकों 1,00,000 हो गई है और अब यह **सत साहस्त्री संहिता** या **महाभारत** कहलाता है। महाभारत का प्रारंभिक उल्लेख आश्वलायन के गृहसूत्र में मिलता है। यह 18 पर्वों में विभाजित है।

पुराण–

- प्राचीन आख्याणों से युक्त ग्रंथ को पुराण कहा जाता है। इनकी संख्या 18 है।
- 5वीं से चौथी शताब्दी ई॰ पू॰ तक पुराण अस्तित्व में आ चुके थे।
- सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक पुराण मत्स्य पुराण है।

बौद्ध साहित्य

महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के उपरान्त आयोजित विभिन्न बौद्ध संगीतियों में संकलित किये गये। त्रिपिटक संभवत: सर्वाधिक प्राचीन धर्मग्रंथ है।

त्रिपिटक तीन हैं–

- **सुत्त पिटक:** बुद्ध के धार्मिक विचारों एवं उपदेशों का संग्रह। यह पांच निकायों में विभाजित है।
- **विनय पिटक** – मठ निवासियों के अनुशासन संबंधी नियम। यह तीन भागों में विभक्त हैं।

अभिधम्म पिटक – बौद्ध मतों की दार्शनिक व्याख्या।

[**नोट–** बौद्ध धर्म की पुस्तक मिलिन्दपन्हो में यूनानी नरेश मीनान्डर (मिलिन्द) एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच वार्त्तालाप का वर्णन है।]

जैन साहित्य

प्राकृत एवं संस्कृत भाषा।

- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है। इस आगम साहित्यों की रचना श्वेताम्बर सम्प्रदाय द्वारा की गयी थी। आचरंग सूत्र से जैन भिक्षुओं के आचार-विचार का विवरण मिलता है।
- भगवती सूत्र से महावीर स्वामी के जीवन-शिक्षा के विषय में जानकारी मिलती है।
- **लौकिक साहित्य:** ऐतिहासिक एवं समसामयिक साहित्य।
- **अर्थशास्त्र:** कौटिल्य द्वारा रचित। यह मौर्यो की जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक स्त्रोत हैं।

  भारत का पहला राजनीतिक ग्रंथ।

  15 खण्डों में विभाजित। 6000 श्लोक।

मुद्राराक्षस-

विशाखादत्त द्वारा रचित।

मौर्य वंश के संबंध में जानकारी।

अष्टाध्यायी-

पाणिनि द्वारा रचित।

व्याकरण के सबसे प्राचीन ग्रंथ।

2. विदेशी विवरण-

यूनानी लेखक	**चीनी लेखक**	**अरबी लेखक**
नियार्कस	फाह्यान	अलबरूनी
आनेसिकिटस	ह्वेनसांग	सुलेमान
अरिस्टोबुलास	इत्सिंग	अल मसूदी
मेगास्थनीज		

3. अभिलेख-

नाम	**राजा**
हाथी गुम्फा अभिलेख	खारवेल
प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख	हरिषेण।
गौतमी पुत्र शातकर्णी	नासिक अभिलेख
मंदसौर अभिलेख	यशोधर्मन।
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन द्वितीय।

प्रागैतिहास काल

- प्रागैतिहासिक काल वह काल है जिसका कोई लिखित साक्ष्य नहीं है।

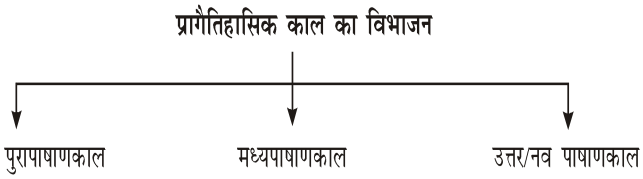

Add. 41-42A, Ashok Park Main, New Rohtak Road, New Delhi-110035
+91-9350679141

- इस काल के मनुष्य मुख्यत: निग्रोट जाति के थे।

मध्य पाषाण काल

- इस काल से पशुपालन की शुरुआत हुई।
- स्थाई कृषि की अभी भी शुरुआत नहीं हुई थी।
- मानव द्वारा छोटे औजारों का प्रयोग की शुरुआत हुई थी।
- भारत में मानव अस्थिपंजर इसी काल से ही सर्वप्रथम प्राप्त होने लगा था।
- इसी काल से मछली पकड़ने की शुरुआत हुई।

नवपाषाण काल

- स्थायी जीवन व स्थायी कृषि व्यवस्था की शुरुआत हुई।
- स्थायी जीवन की शुरुआत भारतीय महाद्वीपों के उत्तर – पश्चिम क्षेत्र में हुई।
- इस काल में सती प्रथा थी।
- इसी काल में चावल का सर्वप्रथम साक्ष्य कोल्डिहवा (यू. पी) से मिला है।
- चिरांद (बिहार) से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण पाये गये हैं।
- मेहरगढ़ (पाकिस्तान) से कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य मिला है।
- बुर्जहोम (कश्मीर) से कुत्ता के साथ मनुष्य को दफनाये जाने का साक्ष्य मिला है।

Add. 41-42A, Ashok Park Main, New Rohtak Road, New Delhi-110035
+91-9350679141

2. सिन्धु घाटी सभ्यता

- भारतीय पुरातत्व विभाग के जन्मदाता अलेक्जेन्डर कनिंघम को माना जाता है।
- भारतीय पुरातत्व विभाग की नीव वॉयसराय लार्ड कर्जन के काल में पड़ी।
- यह एक नागरीय सभ्यता थी
- इस सभ्यता की खोज का श्रेय **राय बहादुर दयाराम** (दयाराम साहनी) को जाता है।
- मृतको का शहर लोथल व मोहनजोदड़ो को कहा जाता है।

हड़प्पा

- हड़प्पा वर्तमान पाकिस्तान के मोंटगोमरी जिले में स्थित है।
- यह पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में रावी नदी के तट पर स्थित है।
- यहाँ से अभिलेख युक्त मुहरें सर्वाधिक मिले है।
- यह सिंधु सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा स्थल था।
- यहाँ से अन्नागार, अनाज कूटने के वृत्तकार चबूतरे व श्रमिक अवास के साक्ष्य मिले है।

मोहनजोदड़ो

- यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी के तट पर स्थित था।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल था।
- मोहनजोदड़ों का अर्थ 'मृतको का टीला' होता है।
- यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण स्थल विशाल स्नानागार है।
- मोहनजोदड़ो से नर्तकी की एक कांस्य मुर्ति मिली है।
- सर्वाधिक हड़पाकालीन मुहरे मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई।
- पशुपति (शिव) नाथ की मूर्ति मोहनजोदड़ो में मिली।

कालिबंगा

- यह राजस्थान राज्य में है।
- इसका अर्थ काली चुड़िया होता है।
- यहाँ से हल के निशान पाये गये है।
- यहाँ से एक ऐसा शव मिला है जो हड़प्पा के उत्तर - दक्षिण के विपरीत पूर्व -पश्चिम में दफनाये गये है।
- यहाँ दो फसलों को एक साथ बोने के साक्ष्य मिले है।

लोथल

- यह गुजरात राज्य में है।
- यहाँ से चावल का साक्ष्य मिले है।
- यहाँ से वृत्ताकार व चौकौर अग्निकुण्ड का साक्ष्य मिला है।
- यह हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध बंदरगाह नगर था।
- यहाँ से एक मृद्‌भाण्ड पर पंचतत्र की कहानी लोमड़ी का चित्रण किया गया साक्ष्य मिला है।
- लोथल से चावल का प्रमाण मिला है।
- गोदीवाड़ा (बंदरगाह) का प्रमाण लोथल से मिला है।

धौलावीरा

- यह गुजरात राज्य में है।
- यहाँ से साइन बोर्ड, जलाशय, स्टेडियम का साक्ष्य मिला है।
- यह एकमात्र हड़प्पा कालीन नगर था जो तीन भागों में विभाजित था।

रोजदी

- यह गुजरात राज्य में है।
- यहाँ से चेसबोर्ड का साक्ष्य मिला है।

सुरकोरदा

- यह गुजरात राज्य में है।
- यहाँ से घोड़े की आस्थियाँ मिली है।

चन्हूदरो

- यहाँ से वक्राकार ईटों के साक्ष्य मिले हैं।
- यहाँ से खिलौना बनाने का कारखाना मिला है।

बनवाली

- यह हरियाणा राज्य में है।
- यहाँ से बैल गाड़ियों का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ से जल निकासी का कोई साक्ष्य नहीं मिला है।

आमरी

- यहाँ सबसे पहले प्राकृ - हडप्पा कालीन अवशेष मिला है
- यहाँ से बारहसिंहा के साक्ष्य मिले है।

रोपड़

- यह पंजाब राज्य में है।
- यहाँ मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।

सभ्यता का विस्तार

मांदा (उत्तर)

सुतकागेनडोर (पश्चिम) — आलमगीरपुर (पूर्व)

दैमाबाद (दक्षिण)

- हड़प्पा सभ्यता की आकृति त्रिभुजाकार है।
- हड़प्पा सभ्यता के लोग लौहा के बारे में नहीं जानते थे।
- हड़प्पा सभ्यता में सर्वप्रथम कांसे का प्रयोग हुआ।
- विश्व में सर्वप्रथम कपास उगाने का श्रेय हड़प्पाईयों को जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता के मुख्य फसल गेहूँ और जौ थी।।

मुख्य शहर	**खोजकर्त्ता**
हड़प्पा	दयाराम साहनी
मोहनजोदड़ो	राखाल दास बनर्जी
लोथल	रंगनाथ राव
चान्हुदड़ो	गोपाल मजुमदार
आलमगीर	यज्ञदत्त शर्मा
रंगपुर	रंगनाथ राव
बनवाली	रवीन्द्र सिंह विष्ट
सुरकोटदा	जगपति जोशी
कालीबंगा	अमलानन्द घोष, बी.बी. लाल

मुख्य शहर	**नदी**
हड़प्पा	रावी
मोहनजोदड़ो	सिन्धु
लोथल	भोगवा
कालीबंगा	घग्घर (ळींहहींत)
रंगपुर	मादर नदी
बनवाली	सरस्वती नदी
सुरकोतदा	शादीकौर

आलमगीरपुर	हिण्डन

- हड़प्पा सभ्यता की मुहरों पर सर्वाधिक चिंन्ह एकश्रृंगी पशु के मिले है
- अग्निकुण्ड लोथल व कालीबंगा से प्राप्त हुये है।
- लोथल व कालीबंगा में युग्म समाधियाँ मिली है।
- मेसोपोटामिया के अभिलेख में वर्णित शब्द मेहुला का अर्थ सिंधु सभ्यता है।
- हड़प्पा सभ्यता में किसी भी मंदिर का अवशेष नहीं मिला है।
- हड़प्पाई मुहरें सेलखड़ी की बनी होती थी।
- मुख्य पुरुष देवता पशुपति महादेव थे।
- मुख्य देवी मातृ देवी (पृथ्वी देवी) थी।
- हड़प्पा सभ्यता में भावचित्रात्मक लिपि का प्रयोग होता था।
- माप-तोल की इकाई 16 के अनुपात में थी।
- हड़प्पाई लोगों का प्रिय वृक्ष पीपल था।
- भारत में चांदी सर्वप्रथम सिन्धु-सभ्यता में पाई गई।
- चन्हुदड़ो से लिपिस्टिक के अवशेष मिले हैं।
- अग्निवेदिका का साक्ष्य कालीबंगा से मिला है।
- जुते हुए खेत का प्रमाण कालीबंगा से मिला है।
- समाधि आर. 37 कब्रिस्तान हड़प्पा से मिला है।
- प्रचलित मृद्भांड - काले एवं लाल मृद्भांड है।

विभिन्न क्षेत्रों से आयात किये गये कच्चे माल

कच्चा माल	**क्षेत्र**
टिन	अफगानिस्तान, ईरान
तांबा	खेतड़ी (राजस्थान), ब्लूचिस्तान

Add. 41-42A, Ashok Park Main, New Rohtak Road, New Delhi-110035
+91-9350679141

चांदी	ईरान, अफगानिस्तान
सोना	अफगानिस्तान, फारस, दक्षिणी भारत (कर्नाटक)
लाजवर्द	मेसोपोटामिया
सेलखड़ी	ब्लूचिस्तान, राजस्थान, गुजरात
शिलाजीत	हिमालय क्षेत्र

मुख्य शहर	**वर्तमान राज्य/प्रान्त**
मोहनजोदड़ो	सिन्ध
हड़प्पा	पंजाब (पाकिस्तान)
रोपड़	पंजाब (भारत)
कालीबंगा	राजस्थान
लोथल	गुजरात
रंगपुर	गुजरात
मांदा	जम्मु कश्मीर
बनवाली, राखीगढ़ी	हरियाणा
आलमगीरपुर	उत्तर प्रदेश

- पिग्गट महोदय ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को 'एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी बताया है।'
- 'झूकर संस्कृति' एवं 'झाकर संस्कृति' के अवशेष चन्हुदड़ो से मिले हैं।
- धान (चावल), फारस की मुहरों एवं घोड़ों की लघु मृण्मूर्तियों के अवशेष लोथल से मिले हैं।

3. वैदिक काल

वैदिक संस्कृति

वेद

- ऋग्वेद
- सामवेद
- यजुर्वेद
- अथर्ववेद

ऋग्वेद

- चार वर्गो में समाज का विभाजन ऋग्वेद के 10 वें मंडल के पुरूष सूक्त में है।
- ऋग्वेद में सर्वाधिक इन्द्र की 250 बार चर्चा की गई है।
- यह ऋचाओं में बद्ध है।
- इसमें कुल दस मण्डल एवं 1028 सूक्त हैं।
- दूसरे एवं सातवें मण्डल की ऋचायें सर्वाधिक प्राचीन हैं।
- आठवें मण्डल को 'खिल' कहा गया है।
- पहले व दसवें मण्डल की ऋचाये को बाद में जोड़ा गया।

सामवेद

- इसमें संकलित मंत्रों को देवताओं की स्तुति के समय गाया जाता था।
- कुल 1549 ऋचायें हैं जिनमें 75 के अतिरिक्त शेष ऋग्वेद से ली गयी है।
- इसका भारतीय संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

यजुर्वेद

- इसमें अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पन्न करने की विधियों का उल्लेख।
- यह पांच शाखाओं में विभक्त है। इसमें चार कृष्ण यजुर्वेद के एवं एक शुक्ल यजुर्वेद के अन्तर्गत आती है।
- यह गद्य व पद्य दोनों में लिखा गया है।

अथर्ववेद

- अथर्वा ऋषि द्वारा रचित।
- इसमें कुल 40 अध्याय एवं 71 सूक्त हैं
- महत्वपूर्ण विषय- ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, तन्त्र-मन्त्र, टोना-टोटका आदि।

ऋग्वैदिक काल

- ऋग्वैदिक काल का एक मात्र स्रोत **ऋग्वेद** है।
- आर्यो की भाषा संस्कृत थी।
- सर्वप्रथम आर्य पंजाब में आकर बसे थे।
- ऋग्वेद में आर्यो के पांच कबीले थे

1. पुरू **2.** द्रुहय
3. अनु **4.** यदु
5. तुर्वस

ख आर्यों का मूल निवास स्थान मध्य एशिया है।

ख आर्य सबसे पहले सप्तसैन्धव प्रदेश में आकर बसे।

नदी	वर्तमान नाम
कुभ	काबुल
परुष्णी	रावी
सुवस्तु	स्वात
विपाशा	व्यास
वितस्ता	झेलम
अस्किनी	चेनाब
शतुद्री	सतलज
सदानीरा	गंडक

EduBull.com

Add. 41-42A, Ashok Park Main, New Rohtak Road, New Delhi-110035
+91-9350679141

आर्य	प्रसिद्ध
प्रमुख देवता	इन्द्र
प्रमुख नदी	सिन्धु
पवित्र नदी	सरस्वती
भाषा	संस्कृत
व्यवसाय	पशुपालन
पेय पदार्थ	सोमरस

- पुरू कबीले को 'त्रास दस्यु' कहा जाता था
- ऋग्वेद में आम सभा जो समिति कहलाती थी राजा को चुनती थी ।
- सभा समृध लोगों की संस्था थी।
- ऋग्वेद में दस मण्डल, आठ अष्टक एवं 1028 सुक्त है।
- दाशराज युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद के सातवें मंडल में है। यह युद्ध रावी (परूष्णी) नदी के तट पर लड़ा गया।
- सती प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था।
- ऋग्वेद में विधवा विवाह की जानकारी मिलती है।
- ऋग्वेद के मण्डूक सूक्त में ऋग्वैदिक शिक्षा पद्धति की झलक मिलती है।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में शूद्रों का उल्लेख है।
- गविष्टी शब्द का प्रयोग युद्ध के लिए किया जाता था जिसका अर्थ है गायों की खोज।
- गाय को अघन्या (न मारने योग्य) कहा गया है।
- अग्नि को मनुष्य एवं देवता के बीच मध्यस्थ का देवता माना गया है।

प्राचीन नाम संबंधित आधुनिक नाम

	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
1.	**उर्वरा**	जुते हुए खेत
2.	**लांगल**	हल
3.	**बृक**	बैल
4.	**सीता**	हल से बनी नालियाँ
5.	**करीष**	गोबर की खाद
6.	**पर्जन्य**	बादल
7.	**घन्त**	मरूस्थल

- अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियों के समान माना है।
- वैदिककाल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पशु घोड़ा है।
- आर्य लोग धार्मिक अवसरों पर सोमरस पीते थी।

	वेद	मुख्य ब्राह्मण
•	ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण
•	युजवेद	शतपथ ब्राह्मण

	वेद	मुख्य उपनिषद्
•	सामवेद	छांदोग्य उपनिषद
•	अथर्ववेद	मुण्डकोपनिषद

- ऋग्वैदिक काल में ऋण देकर ब्याज लेने वाले को बैकनाट कहा जाता था।
- आजीवन अविवाहित रहने वाली महिलाओं को अमाजु कहते थे।

उत्तरवैदिक काल

- लोहे की खोज उतर वैदिक काल में सर्वप्रथम आर्यों ने की।
- पुनर्जन्म का सिद्धान्त सर्वप्रथम शतपथ ब्राहमण में दिखाई देता है।
- उतर वैदिक काल में उच्च शासकीय अधिकारीयों को रत्नी कहते थे। जिनके संख्या 12 थी।
- इस काल में यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद एवं उपनिषदों की रचना हुई।
- उपनिषदों की कुल संख्या – 108
- पुराणों की संख्या – 18
- वेदांग की संख्या – 6
- **वेदांग–** शिक्षा, कला, व्याकरण, निरूक्त, छंद, ज्योतिष।

वेद	पुरोहित	दर्शन	प्रवर्तक
ऋग्वेद	होतृ	योग	पतंजलि
सामवेद	उदगातृ	सांख्य	कपिल
यजुर्वेद	अध्वर्यु	न्याय	गौतम
अथर्ववेद	ब्रह्मा	वैशेषिक	कणाद (उलूक)
पूर्वमीमांसा	जैमिनि	उत्तरमीमांसा	बादरायण

- उतरवैदिक काल में निस्क और शतमान मुद्रा ईकाई थी।
- 'गौत्र' नामक संस्था का जन्म उतरवैदिक काल में हुआ।
- याज्ञवल्क्य– गार्गी संवाद का उल्लेख बृहदारणयक उपनिषद में है।
- इन्द्र के स्थान पर प्रजापति सर्वाधिक प्रिय देवता हो गए।
- सत्यमेव जयते का उल्लेख मुण्डकोपनिषद में है।
- यम–नचिकेता वार्ता का उल्लेख कठोपनिषद में है।
- महाकाव्य की संख्या दो है- महाभारत एवं रामायण।

- महाभारत को जयसंहिता भी कहते है।
- महाभारत के लेखक महर्षि व्यास है जबकि रामायण के लेखक वाल्मीकि हैं।
- सबसे बड़ा तथा सर्वाधिक लौह पंज अंतरजीखेड़ा से मिला है।
- इस काल में गोत्र व्यवस्था स्थापित हुई।

महाजनपद

- महाजनपदों का उल्लेख छठी शताब्दी ई०पू० में हुआ। महाजनपद का उल्लेख बौद्ध धर्म के अंगुत्तर निकाय एवं जैन धर्म के भगवती सूत्र में मिलता है।
- वज्जि एवं मल्ल गणतंत्र थे।
- सोलह महाजनपदों में सबसे शक्तिशाली मगध था।

महाजनपद	राजधानी
पांचाल	अहिच्छत्र, कांपिल्य
अंग	चम्पा
चेदि	शक्तिमती
मगध	राजगृह/गिरीव्रज
कुरू	इन्द्रप्रस्थ
काशी	वाराणसी
मत्स्य	विराट नगर
वत्स	कौशाम्बी
कम्बोज	हाटक/लाजपुर
वज्जि	मिथिला/ वैशाली/विदेह
शुरसेन	मथुरा
कौशल	श्रावस्ती/अयोध्या
अस्मक	पोतन/पोटली
अवन्ति	उज्जैन
गांधार	तक्षशिला
मल्ल	कुशीनारा/पावा

- बौद्ध काल का सबसे बड़ा व शक्तिशाली बैशाली की लिच्छिवि गणराज्य था।
- गांधार व कम्बोज के क्षत्रियों को वर्ताशस्त्रोंप जीविन कहा जाता है।

4. मगध साम्राज्य

- मगध साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक बिम्बिसार था। इसकी राजधानी राजगृह थी। बिम्बिसार की हत्या पुत्र अजातशत्रु ने कर दी एवं स्वयं सम्राट बना।
- अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन ने की थी।
- उदायिन ने पाटलिपुत्र को बसाया एवं पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बनाया।
- हर्यक वंश का अन्तिम राजा नागदशक था।
- शिशुनाग वंश का संस्थापक शिशुनाग था। इसने अवन्ति को मगध में मिलाया।
- शिशुनाग ने पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली अपनी दूसरी राजधानी बनायी।
- शिशुनाग वंश के अंतिम शासक नन्दिवर्द्धन था।
- नन्द वंश का संस्थापक महापद्म नंद था।
- नन्द वंश का अंतिम शासक धनानंद था। इसे चंद्रगुप्त मौर्य ने हराकर मौर्य वंश की स्थापना की।

5. धार्मिक आंदोलन

जैन धर्म

- जैन धर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।
- जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे। ये काशी नरेश अश्वसेन के पुत्र थे।
- महावीर जैन धर्म के चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर थे।
- जैन धर्मानुसार ज्ञान के तीन स्रोत है:

1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान 3. तीर्थकरो के वचन

- जैन धर्म पुनर्जन्म व कर्मवाद में विश्वास रखता था।
- जैन धर्म में 'संलेखना' से तात्पर्य है- उपवास द्वारा शरीर का त्याग।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर को माना जाता है।

महावीर जैन

जन्म – कुण्डग्राम (वैशाली)
सन् – 540 ई॰पू॰
पिता – सिद्धार्थ
माता – त्रिशला/विदेहदत्ता
कुल – ज्ञातृक
पत्नी – यशोदा
पुत्री – अनोज्जा/प्रियदर्शना
बचपन का नाम – वर्धमान
प्रतीक चिन्ह – सिंह
ज्ञान – साल वृक्ष के नीचे

जैन संगतियाँ

प्रथम–

समय – 322 से 298 ई॰पू॰
स्थल – पाटलिपुत्र
अध्यक्ष – स्थूलभद्र
शासक – चन्द्रगुप्त मौर्य

द्वितीय–

समय – 512 ई॰
स्थल – वल्लभी
अध्यक्ष – देवर्धिक्षमाश्रमण

- महावीर के माता- पिता भी पार्श्वनाथ के अनुयायी थे।
- स्थूलभद्र एवं उनके अनुयायियों को श्वेताम्बर कहा गया जो सफेद वस्त्र धारण करते थे।
- जैन धर्म के ग्रंथ अर्द्ध मागधी भाषा में लिखा गया है।
- महावीर को ज्ञान ऋजुपालिका (जुम्भिक ग्राम) नदी के तट पर प्राप्त हुआ था। इसके बाद महावीर जिन (विजेता), अर्हंत (पूज्य), निर्गंथ (बंधन रहित) कहलाये।
- जैनो के उतर भारत में मथुरा व उज्जैन केन्द्र थे।
- महावीर ने अपना उपदेश प्राकृत/अर्द्ध मागधी भाषा में दिया।
- जैन धर्म के त्रिरत्न - सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् आचरण।
- जैन धर्म के पंच महाव्रत - अहिंसा, सत्य वचन, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य। इसमें चार व्रत पहले से थे जबकि महावीर ने पांचवा व्रत ब्रह्मचर्य को जोड़ा।
- जैन धर्म के सप्तभंगी ज्ञान के अन्य नाम स्याद्वाद और अनेकान्तवाद है।
- महावीर को निर्वाण (मृत्यु) 468 ई॰पू॰ में पावापुरी में मल्लराज्य शक्ति पाल के राजप्रसाद में हुआ था।
- कलिंग नरेश खारखेल जैन धर्म का अनुयायी था।
- जैन धर्म के दो संप्रदाय

(1) तेरापंथी (श्वेताम्बर)
(2) सभैया (दिगम्बर)

- जैन मठो को बसादि कहा जाता है।

तीर्थकर		प्रतिक चिन्ह
ऋषभदेव	-	वृषभ
शांतिनाथ	-	हिरण
पार्श्वनाथ	-	सर्प

- भद्रबाहु एवं उनके अनुयायियों को दिगम्बर कहा गया। ये दक्षिणी जैनी कहे जाते थे। ये वस्त्र धारण नहीं करते थे।
- राष्ट्रकूट राजाओं के शासन काल में दक्षिणी भारत में जैन धर्म का काफी विकास हुआ।
- ऋग्वेद में केवल दो तीर्थकरो ऋषभदेव तथा अरिष्ठनेमि का उल्लेख किया गया है।
- जैन दर्शन हिन्दू सांख्य दर्शन के निकट है।
- राजा में उदयन, बिम्बिसार, अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, खारवेल आदि ने जैन धर्म का समर्थन किया।
- प्रथम जैन भिक्षुणी चम्पा के शासक दधिवाहन की पुत्री

चन्दना थी।

- जैन धर्म ईश्वर को नहीं मानता जबकि आत्मा को मानता है।
- महावीर ने अपना प्रथम उपदेश राजगीर में प्राकृत भाषा में दिया था।
- बाहुबली (गोमतेश्वर) की मूर्ति का निर्माण चामुण्डश्रवणबेलगोला में किया था।
- जैन तीर्थकरों की जीवनी कल्पसूत्र की रचना भद्रबाहु ने की थी।
- प्रथम जैन भिक्षु उनके दामाद जामलि बने।

बौद्ध धर्म

गौतम बुद्ध–

जन्म	–	563 ई॰पू॰
स्थान	–	लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
पिता	–	शुद्धोधन
माता	–	महामाया
कुल	–	शाक्य
बचपन का नाम	–	सिद्धार्थ
पत्नी	–	यशोधरा
पुत्र	–	राहुल
पालन-पोषण	–	गौतमी

- बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाऐं जातक कथाऐं का वर्णन सुप्तपिटक में मिलता है।

बौद्ध धर्म:

(1) अनीश्वरवादी है।

(2) आत्मा की परिकलपना नहीं

(3) पुनर्जन्म को मान्यता दी।

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे।
- नागार्जुन को भारत का आइन्सटीन
- महायान सम्प्रदाय का उदय आंध्र प्रदेश में हुआ है।
- महायान संम्प्रदाय की स्थापना नागार्जुन ने की थी
- शुन्यवाद के प्रवर्तक नार्गाजुन थे, इनकी प्रसिद्ध रचना माध्यमिककारिका है। इसे सापेक्षवाद भी कहा जाता है।
- विज्ञानवाद (योगाचार) की स्थापना मैत्रेयनाथ ने की थी।
- बुद्ध का पंचशील सिद्धान्त का वर्णन छायोग्य उपनिषद में मिलता है।
- शंकराचार्य को प्रच्छन्न बौद्ध कहा जाता है।
- चार आर्य सत्य :

(1) दुख :

(2) दुख : का कारण

(3) दुख : का अन्त

(4) दुख : के अन्त का उपाय।

- मैत्रेय को संभावित बुद्ध के रूप में जाना जाता है।

त्रिपिटक

- **बौद्ध धर्म के बारे में ज्ञान त्रिपिटक से मिलता है।**

I wfi Vd %बुद्ध के धार्मिक विचारों का संकलन तथा बुद्ध का उपदेशों का संकलन

अभिधम्म पिटक : बौद्ध दर्शन का उल्लेख।

विनय पिटक : बौद्ध संघ के नियमों का उल्लेख।

- बौद्ध ने अपने उपदेश पालि भाषा में दिए थे।
- सिद्धार्थ को योग की शिक्षा आलारकलाम ने दी थी।
- वेद और उपनिषद की शिक्षा रूद्रक ने बौद्ध को दी थी।
- बौद्ध धर्म का सबसे पवित्र एवं महत्वपूर्ण त्यौहार पूर्णिमा है। जिसे बुद्ध पूणिमा के नाम से जाना जाता है।

बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रतीक–

जन्म	कमल एवं सांड़
गृहत्याग	घोड़ा
ज्ञान	पीपल/ बोधिवृक्ष
निर्वाण	पदचिन्ह
मृत्यु	स्तूप

जीवन की घटना–

गृह त्याग	– महाभिनिष्क्रमण
ज्ञान प्राप्त होने की घटना	– सम्बोधी
उपदेश देने की घटना	– धर्मचक्रप्रवर्तन
निर्वाण/मृत्यु	– महापरिनिर्वाण

- बुद्ध को निरंजना नदी के किनारे पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।
- बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया।
- निर्वाण बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य है जिसका अर्थ है दीपक का बुझ जाना। अर्थात् जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाना।
- अण्टांमिकमार्ग बौद्ध धर्म के निर्वाण प्राप्ति का साधन है।
- बुद्ध ने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये।
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं– बुद्ध, संघ एवं धम्म।
- बुद्ध का महापरिनिर्वाण (मृत्यु) कुशीनारा (मल्ल राज्य) में

हुई।

- बौद्ध धर्म दो भागों हीनयान एवं महायान में विभाजित हो गया।
- अशोक, मिनाण्डर कनिष्क तथा हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म में विशेष योगदान दिया है।
- बुद्ध के अण्टांगिकमार्ग का स्त्रोत तैत्तिरीय उपनिषद है।
- बुद्ध की प्रथम मुर्ति मथुरा कला में बनी थी।
- बुद्ध की सर्वाधिक मुर्तियां गंधार कला में बनी है।

बौद्ध सभाएँ

सभा	शासनकाल	समय	स्थान	अध्यक्ष	उद्देश्य
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई॰पू॰	राजगृह	महाकश्यप	अजातशत्रु	सुत व विनय पिटक संकलन
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई॰पू॰	वैशाली	सबाकामी	कालाशोक	
तृतीय बौद्ध संगीति	255 ई॰पू॰	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्र तिस्स	अशोक	अभिधम्म पिट का संकलन
चतुर्थ बौद्ध संगीति	ई॰ की प्रथम शताब्दी	कुण्डलवन	वसुमित्र/अश्वघोष	कनिष्क	हिनयान व महायन में बौद्ध धर्म का विभाज

- बुद्ध का ही सर्वप्रथम मानव रूप मूर्ति में पूजा किया गया था।
- सांसारिक दु:खों से निर्वाण हेतु अष्टांगिक मार्ग की बात है।
- प्रतीत्य समुत्पाद बुद्ध के उपदेशों का सार है।
- सूत्तपिटक को प्रारंभिक बौद्ध धर्म का इनसाइक्लोपीडिया कहा जाता है।

धर्म के अन्य तथ्य

सम्प्रदाय	संस्थापक
आजीवक	मक्खलिपुत्र गोशाल
घोर अक्रियवाद	पूरण कश्यप
उच्छेदवादी (भोतिकवादी)	आचार्य अजित
नित्यवादी	पकुध कच्चायन
अनिश्चयवाद	संजय वेट्ठलिपुत्र

सम्प्रदाय	संस्थापक	पुस्तक
परमार्थ	रामदास	दासबोध
श्रीवैस्णव	रामानुज	ब्रहासूत्र
बरकरी	नामदेव	रामभक्त
रामानन्द	अध्यात्म	रामायण

प्रमुख सम्प्रदाय	मत	आचार्य
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैत	आनन्दतीर्थ/ माधव
रूद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य/विष्णु स्वामी
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्क

- सबसे प्राचीन सम्प्रदाय थेरवाद है।
- पशुपत सम्प्रदाय के संस्थापनक लकुलीश थे।
- इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद थे।
- पैगम्बर मुहम्मद के उत्तराधिकारी 'खलीफा' कहलाए।
- कापालिक सम्प्रदाय के संस्थापक व इष्टदेव भैरव थे।
- नाथ सम्प्रदाय की स्थापना मत्स्येन्द्रनाथ ने की।
- मुहम्मद पैगम्बर के जन्मदिन पर **ईद** पर्व मनाया जाता है।
- ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह थे।
- ईसाई धर्म का प्रमुख ग्रंथ बाइबिल है।
- ईसा मसीह का जन्म येरूसेलम के निकट **बेथलेहम** नामक स्थान पर हुआ था।
- क्रिसमस ईसा मसीह के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है।
- ईसाई धर्म का पवित्र चिन्ह क्रॉस है।

6. मौर्य वंश

चन्द्र गुप्त मौर्य (322BC–298BC)

- मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था।
- चाणक्य/ कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था।
- मेगास्थनीज चन्द्रगुप्त मौय के दरबार में आया था।
- इंडिका की रचना मेगास्थनीज ने की थी।
- चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश के धनानंद को हराकर पाटलीपुत्र में मौर्य वंश की स्थापना की।
- चंद्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था।
- चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु से ली।
- सेल्युकस निकेटर ने चन्द्रगुप्त को चार प्रांप्त दिए:
  (1) काबुल
  (2) कांधार
  (3) हेरात
  (4) मकारान
- 305 ई॰ में चंद्रगुप्त ने सेल्युकस को हराया।
- चंद्रगुप्त की मृत्यु 298 ई॰पू॰ में श्रवणबेलगोला में उपवास के दौरान हुई।

बिन्दुसार (298 - 273 ई.पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी बिन्दुसार हुआ। इसे **अमित्रघात** के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है शत्रुओं का नाश करने वाला।
- यूनानी लेखों में उसे अमित्रचेटस, वायुपूराण में मद्रसार तथा जैन ग्रंथों में सिहसेन कहा गया है।
- यह आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- स्ट्रैबो के अनुसार सीरियन नरेश एण्टियोकस ने बिन्दुसार के दरबार में डाइमेकस नामक राजदूत भेजा।

अशोक (269 - 232 ई.पू.)

- कलहण की राजतरंगिनी के अनुसार श्रीनगर की स्थापना अशोक द्वारा हुई।
- बिन्दुसार का उत्तराधिकारी अशोक हुआ।
- मास्की एवं गुर्जर अभिलेख में अशोक का नाम अशोक मिलता है।
- 261 ई॰पू॰ में अशोक ने कलिंग पर अधिकार किया।
- अशोक ने धम्म की परिभाषा राहुलोवाद सन्त से ली गयी है।
- भब्रु लघु शिलालेख में अशोक ने त्रिसंध (बुद्ध, धम्म एवं संघ) में विश्वास प्रकट किया है।
- भारत में सर्वप्रथम जनगणना अशोक द्वारा करायी गयी।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष धर्म महामात्र की नियुक्ति की।
- अशोक के शिलालेखों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक–अरमाइक लिपि का प्रयोग किया है।
- **अशोक के 14 शिलालेखों में वर्णित विषय–**

प्रथम	–	पशु बलि की निन्दा
द्वितीय	–	मनुष्य और पशु दोनों की चिकित्सा व्यवस्था
पांचवा	–	धर्म महामात्र की नियुक्ति
सातवां एवं आठवां	–	तीर्थ यात्राओं का उल्लेख
तेरहवां	–	कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक का हृदय परिवर्तन।

- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गुप्तचरो को 'गूढ़ पुरुष' कहा गया है।
- अशोक ने देवानाम और प्रियदर्शी की उपाधि धारण की।
- मौर्य शासन में दो तरह के गुप्तचर होते थे–
  क. संस्था– एक ही स्थान पर कार्य करने वाले
  ख. संचार– एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करने वाले।
- सांची का स्तूप (मध्य प्रदेश) अशोक ने बनवाया था।
  अशोक का सबसे बड़ा स्तम्भ सातवां है।
  अशोक : पुराणों में अशोक का नाम अशोक वर्धन है।
- उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु से अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।
- अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था।
- नागार्जुनी का गुहा मंदिर अशोक ने बनवाया था।
- अशोक ने आजीविकों के लिए बराबर की पहाड़ियों में चार गुफाओं का निर्माण किया।
- भारत में शिलालेख का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने किया।
- अशोक के शिलालेख में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक - अरमाइक लिपि का प्रयोग हुआ है।
- ब्राह्मी - बायीं से दायीं ओर

- खरोष्ठी – दायीं से बायीं ओर
- तेरहवें शिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन है।
- कौशाम्बी अभिलेख को रानी का अभिलेख कहा जाता है।
- प्रयाग स्तम्भ लेख पहले कौशाम्बी में स्थित था। इसे अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित कराया।
- दिल्ली टोपरा स्तम्भ लेख फिरोजशाह तुगलक के द्वारा टोपरा से दिल्ली लाया गया।
- दिल्ली मेरठ स्तम्भ लेख फिरोजशाह तुगलक द्वारा मेरठ से दिल्ली लाया गया।
- अशोक के अभिलेख को पढ़ने में सफलता सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप को 1837 में मिली।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। शार-ए-कुना (कांधार) का अभिलेख ग्रीक एवं आर्मेइक लिपि में है।

अशोक के उत्तराधिकारी–

कुणाल
–
दशरथ
–
सम्प्रति
–
शालिशूक
–
देववर्मन
–
शतधनुस
–
बृहद्रथ

[**नोट–** अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग द्वारा कर दी गयी।]

- मेगस्थनीज के अनुसार प्रशासन के लिए 6 समितिया थी जिनमें प्रत्येक में 5 सदस्य थे:

समिति	**कार्य**
(1) प्रथम	समिति उद्योग शिल्पों का निरिक्षण
(2) द्वितिय समिति	विदेशीयों की देखरेख
(3) तृतीय समिति	जन्म मरण का लेखाकरण
(4) चतुर्थ समिति	व्यापार/वाणिज्य
(5) पंचम समिति	निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरिक्षण
(6) छठी समिति	पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष

मौर्य काल के अधिकारी

रज्जुक – जनपदीय न्यायालय का न्यायाधीश। यह अधिकारी अशोक द्वारा नियुक्त किया गया।

प्रादेशिक – आधुनिक जिलाधिकारी के समान।

शुद्रो का प्रथम बार कृषि कार्यो में मौर्य काल मेंही लगाया गया था।

महामात्र – नगर प्रशासन का उच्च अधिकारी

युक्त – राजस्व अधिकारियों का सहायक

प्रतिवेदक – राजा को हर तरह की सूचना देने वाला।

समाहर्त्ता – राजस्व विभाग का प्रमुख अधिकारी।

वदेहक – व्यापारी एंव दुकानदार।

सन्निधाता – कोषाध्यक्ष।

दण्डपाल – पुलिस अधिकारी।

प्रदेष्टा – फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश।

व्यवहारिक – नगर का प्रमुख न्यायाधीश।

अन्तपाल – सीमावर्ती दुर्गो का रक्षक।

- राज्य के सप्तांग सिद्धान्त की सर्वप्रथम व्याख्या कौटिल्य ने की। ये हैं– राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड एवं मित्र।

  [**नोट–** याद करने का सूत्र– **आम जनता** ने **दुर्ग को** छोड़कर **राजा** के **मित्र** को **दंड** दिया।]
- अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में तीर्थ का उल्लेख मिलता है, इन्हें महामात्र भी कहा जाता था। इनकी संख्या अठारह थी।

  अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ लेख रुम्मिदेइ तथा सबसे बड़ा भवरू लेख है।
- मण्डल कूपो का सर्वप्रथम प्रयोग मौर्य काल में हुआ।
- मौर्यकाल का महत्वपूर्ण बन्द्रगाह ताम्रलिपि था।
- पुरोहित, महामंत्री एवं सेनापति को करीब 48,000 पण वार्षिक वेतन के रूप में मिलते थे।
- अर्थशास्त्र में 28 अध्यक्षों का विवरण मिलता है जो विभिन्न विभागों में अध्यक्ष के रूप में मंत्रियों के नीचे काम करते थे। यूनानी लेखकों ने इन्हें मजिस्ट्रेट की संज्ञा दी थी।

  सूनाध्यक्ष – बूचड़ खाने का अध्यक्ष।

  अकराध्यक्ष – खानों का अध्यक्ष।

  पौतवाध्यक्ष – माप-तौल का अध्यक्ष।

  गणिकाध्यक्ष – वैश्याओं का निरीक्षक।

सीताध्यक्ष – कृषि विभाग का अध्यक्ष।
विविताध्यक्ष – चारागाह का अध्यक्ष।

कर :–

(1) **प्रणय** – आपातकालीन कर।
(2) **हिरण्य** – अनाज के रूप में लिया जानेवाला कर।
(3) **विष्टि** – निशुल्क श्रम एंव बेगार।
(4) **क्षेत्रक** – भूस्वामी को कहा जाता था।
(5) **उपवास** – काश्तकारो कहा जाता था।

मौर्यकालीन मुद्रा	**धातु**	
कार्षापण/ पण/ धरण	–	चांदी से बना
सुवर्ण	–	सोने का
भाषक	–	तांबे का सिक्का
काकणी	–	तांबे से बना

- इन मुद्राओं को जारी करने का अधिकार लक्षणाध्यक्ष एवं सौवर्णिक का होता था।
- बलि एक प्रकार का धार्मिक कर था।
- भूमि कर में राजा के हिस्से को भाग कहा जाता था।
- जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर पुष्यगुप्त ने सौराष्ट्र प्रांत में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।
- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज का सात भागों में विभाजन किया था।
- कौटिल्य ने नौ प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।
- मौर्य काल में भूमि का उपज का 1/6 भाग या 1/4 भाग लिया जाता था।
- मौर्य काल में सिंचाई कर 1/5 से 1/3 भाग होता था। जो उदायभाग के रूप में लिया जाता था।

प्रमुख वस्तु	**प्रसिद्ध स्थान**
सूती वस्त्र	काशी, बंग, पुण्ड्, कलिंग, मालवा
मलमल	बंग
रेशम	काशी एवं पुण्ड्

- कौटिल्य के अनुसार **संयानपथ** समुद्री मार्गों का नाम था।
- मौर्य काल में पुनर्विवाह एवं नियोग प्रथा का प्रचलन था।
- मौर्यकाल में सती प्रथा का कोई प्रमाण नहीं मिलता।
- अर्थशास्त्र में दो प्रकार के न्यायालयों का वर्णन है:

(1) धर्मस्थीय न्यायालय – दिवानी अदालतें
(2) कण्टक शोधन न्यायालय – फौजदारी अदालतें

- अरत्नी वर्षा मापने का उपकरण था।
- अर्थशास्त्र में शुद्रों को आर्य कहा जाता है।
- रूपाजीवा वे स्त्रियां होती थी जो स्वतंत्र वैश्यावृत्ति को अपनाती थी।
- इस समय पश्चिमी तट पर स्थित बन्दरगाह सोपारा बहुत महत्वपूर्ण था।
- मयूर, पर्वत और अर्द्धचन्द्र की छाप वाली आहत मुद्राऐ मौर्य साम्राज्यकी मान्य मुद्राऐं थी।

कर	**भाग**
(1) महशूल	वस्तु के मूल्य का 1/5 भाग
(2) व्यापारिक कर	महशूल का 1/5 भाग

- पारिहारिक – वैसे गॉव जो कर से मुक्त थे।
- वार्ता – कृषि, पशुपालन और वाणिज्य व्यापार को संयुक्त रूप से कहते है।

मौर्य साम्राज्य के पांच प्रान्त–

मौर्य प्रांत	**राजधानी**
उत्तरापथ	तक्षशिला
अवन्ति राष्ट्र	उज्जैनी
कलिंग	तोसली
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
प्राशी	पाटलिपुत्र

- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज का वर्गीकरण सात भागों में किया।
- सरकारी भूमि को सीता भूमि कहा जाता था।
- बिना वर्षा के अच्छी खेती होने वाली भूमि को अदेव-मातृक कहा गया।
- मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहद्रथ था जिसकी हत्या सेनापति पुण्यमित्र शुंग द्वारा की गई।

7. मौर्योत्तर काल

ब्राह्मण वंश	संस्थापक
शुंग	पुण्यमित्र शुंग
कण्व	वासुदेव कण्व
आन्ध्र सातवाहन	सिमुक
वाकाटक	विंध्य शक्ति

- शुंग वंश को अंतिम शासक देवभूति था।
- कण्व वंश का अंतिम शासक सुशर्मा।
- मौर्य वंश के पतन के बाद ब्राह्मण वंश का उदय हुआ।
- शुंगों की राजधानी विदिशा थी।
- पुण्यमित्र शुंग ने इन्डो-ग्रीक/हिन्द-यूनानी शासक मेनान्डर को पराजित किया।
- भरहुत स्तूप का निर्माण पुण्यमित्र शुंग ने करवाया।
- सातवाहनों की राजधानी प्रतिष्ठान थी।
- हाल ने 'गाथासप्तशती' पुस्तक की रचना की।
- सातवाहनों ने सीसे के सिक्के चलाए।
- सातवाहनों की भाषा प्राकृत व लिपि ब्राही थी।
- ब्राह्मणों को भूमि अनुदान देने की प्रथा का प्रारम्भ सातवाहन काल में हुआ।
- सातवाहनों का समाज मातृसतात्मक था।
- अजंता और एलोरा की गुफाऐं सातवाहन काल में बनाई गई थी।

मौर्योत्तर काल में भारत में विदेशी आक्रमण

विदेशी नाम	भारतीय नाम
बैक्ट्रियन	यवन
पार्थियन	पहलव
सीथियन	शक
यू-ची	कुषाण

बैक्ट्रियन/यवन

- मेनान्डर की राजधानी शाकल थी।

ख सबसे प्रसिद्ध शासक मेनान्डर था।

- मेनांडर को मिलिन्द पन्हो में मिलिन्द कहा गया है।
- मिलिन्द पन्हो में 'मेनाडंर एवं नागसेन के बीच वार्त्तालाप का वर्णन है।
- भारत में सबसे पहले हिन्द-यूनानी ने सोने के सिक्के जारी किये।
- भारत पर सर्वप्रथम आक्रमण बैक्ट्रिया के शासक डेमिट्रियस ने किया था।
- लेखवाले सिक्के सर्वप्रथम हिन्द-यूनानीयों ने जारी किऐ थे।
- पहला यवन आक्रमण पुष्यमित्र शुंग के शासन काल में हुआ।

शक

- शक मूलत: मध्य एशिया के निवासी थे।
- सर्वाधिक प्रसिद्ध शक शासक रुद्रदामन तथा नहपान थे।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से सुदर्शन झील के जीर्णोद्धार का पता चलता है। यह संस्कृत का पहला अभिलेख है।
- शक राजा अपने को क्षत्रप कहते थे।
- विक्रम संवत (57 ई॰पू॰) शकों पर स्थानीय राजा के विजय के उपलक्ष्य में प्रारंभ किया गया था।
- अंतिम शक शासक रूद्रसिह था।

कुषाण

- कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था।
- कुषाण वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क था।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरुषपुर/पेशावर बनाया। जबकि दुसरी राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क ने गद्दी पर बैठने के समय 78 ई॰ में एक नया संवत् शक् संवत् (78 ।क में) चलाया।
- बौद्ध धर्म की चौथी संगीति कनिष्क के समय में हुई।
- कनिष्क का राजकवि अश्वघोष था।
- कनिष्क का समकालीन नागार्जुन था। इसे भारत का आईस्टीन भी कहा जाता है।
- नागार्जुन ने अपनी पुस्तक माध्यमिकसूत्र में सापेक्षता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।
- कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।
- कनिष्क का राजवैद्य आयुर्वेद का विख्यात विद्वान जिसने चरक संहिता की रचना की।
- अश्वघोष की प्रसिद्ध रचनाऐ: बुद्धचरित्र, सौन्दरानंद, सुत्रालंकार।
- गांधार शैली व मथुरा शैली का विकास कनिष्क के शासनकाल में हुआ।
- बौद्धधर्म का विश्वकोष 'महाविभाषशूत्र' की रचना कुषाणकाल

में हुई।

- कुषाणकालीन स्वर्ण मुद्राओं की शुद्धता सर्वोतम थी।
- मुद्राध्यक्ष – पासपोर्ट विभाग का अध्यक्ष
- कनिष्क के दरबार की विभूतिया/विद्वान :

(1) अश्वघोष (2) वसुमित्र
(3) पार्श्व (4) चरक
(5) नागार्जुन (6) महाचेत
(7) संघरक्ष

- सुदूर दक्षिण के जीवन पर पहले संगय साहित्य से ही स्पष्ट प्रकाश पड़ता है।
- समुद्र व्यापार में दक्षिण के महत्व पर 'पेरिप्लस ऑफ दि एरिथ्रियन सी' नामक कृति द्वारा प्रर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- संगम तमिल कवियों का संघ/मंडल था। इन संघों का आयोजन पाण्ड्य शासकों के संरक्षण में किया गया।
- इस समय के साहित्य में तीन महत्वपूर्ण राज्य चोल, चेर तथा पाण्ड्य का उल्लेख है।

संगय युग

संगम	अध्यक्ष	संरक्षक	स्थल
प्रथम	अगस्त्य ऋषि	पाण्ड्य शासक	मदुरा (मदुरै)
द्वितीय	तोलकाप्पियर	पाण्ड्य शासक	कपाटपुरम
तृतीय	नक्कीरर	पाण्ड्य शासक	उत्तरी मदुरा (मदुरै)

राज्य	राजधानी	प्रतिक चिन्ह
चेर	वांजि/करुपूर	धनुष
चोल	प्रारंभिक उत्तरी मनलूर बाद में उरैपुर	बाघ
पाण्ड्य	मदुरैं	कार्ष (एक प्रकार की मछली)

EduBull.com

8. गुप्त साम्राज्य

- गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319 - 335 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही गुप्तवंश को एक साम्राज्य की प्रतिष्ठा प्रदान की।
- चन्द्रगुप्त ने महाराजाधिराज का उपाधि ग्रहण किया।
- उसने एक नया संवत गुप्त संवत 319 AD में चलाया। गुप्त संवत् तथा शंक संवत् के बीच 241 वर्षो का अंतर होता है।

समुद्रगुप्त (335 - 375 ई)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना।
- उसके काल में गुप्त साम्राज्य का विस्तार सबसे अधिक हुआ।
- विंसेंट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है।
- उसके सामरिक विजयों का विवरण हरिषेण प्रयाग प्रशस्ति से मिलता है।
- यह विजेता के साथ-साथ कवि संगीतज्ञ व विद्या का संरक्षक था।
- उसके सिक्कों पर उसे वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।
- उसने कविराज की उपाधि प्रदान की गई है।
- इलाहाबाद के स्तम्भ लेख में समुद्र गुप्त की धर्म प्रचार बंधु उपाधि का उल्लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त ने महान बौद्ध भिक्षु वसुबन्धु को संरक्षण दिया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (380 - 412 ई.)

- गुप्त वंश में सर्वप्रथम रजत (चांदी) मुद्राओं का प्रचलन चन्द्रगुप्त द्वितीय ने प्रचलन करवाया था।
- इसके दिग्विजयों का उल्लेख उसके उदयगिरि गुहालेख से होता है।
- उसके समय में पाटलिपुत्र व उज्जैयिनि विद्या के प्रमुख केन्द्र थे।
- उसका दूसरा राजधानी उज्जैयिनि भी थी।
- उसके शासन काल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया तथा अपने यात्रा वृत्तांत में मध्य प्रदेश को ब्राह्मणों का देश कहा है।
- इसके काल में ब्राह्मण धर्म का चरमोत्कर्ष का काल था।

कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य (415 - 454 ई)

- गुप्त वंश में सर्वाधिक अभिलेख कुमार गुप्त के मिलते है।
- उसके शासन काल में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- विलसड़ अभिलेख से ही कुमारगुप्त एक गुप्तों की वंशावली प्राप्त होती है।
- मध्यभारत में रजत सिक्कों का प्रचलन उसी के काल में हुआ।
- इसके सिक्के पर मयूर की आकृति अंकित है।
- इसने महेन्द्रादित्य, श्रीमहेन्द्र, तथा अश्वमेध महेन्द्र आदि उपाधियां धारण की।

स्कन्दगुप्त (455 - 467 ई.)

- इसी के शासन काल में हूणों का आक्रमण हुआ।
- इसने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनरूद्धार कराया जिसका निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया था।
- इसने अपनी राजधानी अयोध्या स्थानांतरित किया।

9. प्राचीन इतिहास पर परीक्षा उपयोगी तथ्य

- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- गुप्त काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पूर्ण व्यापारिक केन्द्र उज्जैन था।
- गुप्त वंश का प्रथम महान शासक चंद्रगुप्त प्रथम था। इसने 319 ई॰ में गुप्त संवत् चलाया।
- समुद्र गुप्त को उसके विजयी अभियान के कारण भारत का नेपोलियन कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त का दरबारी कवि हरिषेण था। इसने इलाहाबाद प्रशस्ति लेख की रचना की।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी बौद्ध यात्री फाहियान भारत आया।
- इसने शकों पर विजय के उपलक्ष्य में चांदी का सिक्का चलाया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमार गुप्त ने की थी।
- स्कन्दगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनरुद्धार किया।
- स्कन्धगुप्त के शासनकाल में हूणों का आक्रमण शुरू हुआ।
- गुप्त राजाओं ने सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी किये! सोने के सिक्को को दिनार कहते थे।
- पहली बार सती होने का अभिलेखीय प्रमाण 510 ई॰ में भानूगुप्त के ऐरण अभिलेख से मिलता है।
- गुप्तकाल में देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर एवं कानपुर का भीतर-गांव मंदिर का निर्माण हुआ।
- कालीदास चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबारी कवि थे।
- गुप्तकाल में धनवन्तरी प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य हुए।
- आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीय एवं सूर्य सिद्धान्त नामक ग्रंथ लिखे।
- मंदिर बनाने की कला की शुरूआत गुप्तकाल में हुई।
- गुप्तकाल को स्वर्ण युग भी कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त ने विक्रमांक की उपाधि धारण की। इसे कविराज भी कहां जाता है।
- सबसे ज्यादा भूमि अनुदान गुप्तकाल में ही किया गया था।
- रामायण व महाभारत का अंतिम रूप से सम्पादन गुप्तकाल में हुआ था।
- सांस्कृतिक उपलब्यिों के कारण गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।
- **प्रशासनिक इकाई अधिकारी**

(1) देश	गोप्ता
(2) मुक्ति	उपरिक
(3) विषय	विषयपति
(4) पेठ	पेठपति
(5) ग्राम	महतर (ग्रामपति)

अधिकारी	**विभाग / पद**
(1) महाबलाधिकृत	सेना का सेनापति
(2) महादण्डनायक	न्यायधीश
(3) संधिविग्राहक युद्ध	मंत्री
(4) दण्डपाशिक	पुलिस अधिकारी
(5) सार्थवाह	व्यापारिक प्रधान
(6) महापक्षरलिक	लेखा विभाग का सर्वोच्च अधिकारी

- **गुप्तकालीक कर**
  - (1) भाग : भूमि उपज का 1/6 भाग
  - (2) भोग : राजा को प्रतिदिन दी जाने वाली सब्जी, फल
  - (3) उद्रंग व उपरिकर : भूमि कर
  - (4) हिरण्य : नकद कर
  - (5) मेय : अन्न के रूप में लिया जाने वाला कर
- **भूमि के प्रकार :**
  - (1) क्षेत्र : खेती के लिए उपयुक्त भूमि
  - (2) वास्तु : वास करने योग्य
  - (3) खिल : जो भूमि जोती नहीं जाती हो
  - (4) अप्रहत : बिना जोती गई जंगली भूमि

गुप्तकालीन मंदिर

(1) लक्ष्मण मंदिर	शिरपुर (छत्तीसगढ़)
(2) धमेख स्तूप	सारनाथ
(3) पार्वती मंदिर	नचना कुठार (मध्य प्रदेश)
(4) दशावतार मंदिर	देवगढ़
(5) भीतरगांव	कानपुर
(6) शिव मंदिर	भूमरा (एम.पी)

पुष्यभूति वंश

- पुष्यमूति वंश की स्थापना नरवर्द्धन ने की थी।
- इस वंश की शुरूआत थानेश्वर नामक स्थान पर हुई।
- सबसे प्रसिद्ध शासक हर्षवर्धन था। इसने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया।
- हर्ष शिलादित्य के नाम से जाना जाता था।
- हर्षचरित का लेखक बाणभट्ट हर्षवर्धन का दरबारी कवि था।
- हर्ष ने कन्नौज व प्रयाग में दो धार्मिक समाओ का आयोजन किया था।
- हर्षवर्धन की रचना- नागानंद, रत्नावली, प्रियदर्शिका।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्षवर्धन के समय भारत आया।

वंश	संस्थापक	राजधानी
पल्लव	सिंह विष्णु	कांची
राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग	मान्यखेत
चालुक्य (कल्याणी)	तैलप द्वितीय	मान्यखेत
चालुक्य (वेंगी)	विष्णु वर्धन	वातापी
चोल	विजयालय	तंजौर
पाल	गोपाल	मुंगेर
सेन वंश	सामन्त सेन	नदिया
प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम	कन्नौज
चौहान	वासुदेव	अजमेर
गहड़वाल	चन्द्रदेव	काशी/वाराणसी

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य :-

- लक्ष्मीधर गोविदंचद गडवाल के दरबार में रहता था। उसने प्रसिद्ध विधिग्रंथ कल्पद्रुम की रचना की।
- एलोरा का कैलाश मंदिर कृष्ण प्रथम ने बनवाया
- अमोघवर्ष जैनधर्म का अनुयायी था। इसने कविराज मार्ग की रचना की।
- इन्द्र III के शासनकाल में अरब निवासी अलमसूदी भारत आया।
- मिताक्षिरा की रचना विज्ञानेश्वर ने की ।
- चोल काल में काशु सोने के सिक्के थे।
- ऐलोरा एवं एलीफैंटा के गुहा मंदिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय हुआ।
- खजुराहों का मंदिर चंदेलों ने बनवाया।
- राजाराज प्रथम ने तंजौर में राजराजेश्वर का शिव मंदिर बनवाया।
- स्थानीय स्वशासन चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी।
- पाल वंश के धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण कराया।
- पल्लव शासक नरसिंह वर्मन द्वितीय ने कांचीपुरम के कैलाश मंदिर का निर्माण किया।
- पल्लव शासक नरसिम्ह वर्मन द्वितीय ने महाबलिपुरम के मंदिर का निर्माण किया।
- कल्हण हर्ष का दरबारी कवि था।
- राजा भोज परमार वंश के थे।

लेखक		पुस्तक
पाणिनी	–	अष्टाध्यायी
कौटिल्य/चाणक्य	–	अर्थशास्त्र
मेगास्थनीज	–	इंडिका
पतंजली	–	महाभाष्य
अश्वघोष	–	बुद्ध चरित
कालीदास	–	अभिज्ञानशाकुन्तल, कुमार
सम्भव, मेघदूत, शुद्रक	–	मृच्छ कटिकम
विशाखादत्त	–	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रम
विष्णुशर्मा	–	पंचतत्र
वात्स्यायन	–	कामसूत्र
सिद्धसेन	–	न्यायावतार
असंग	–	योगाचार
भारवि	–	किरातर्जुनियम
महेन्द्र वर्मन	–	मत्त विलास प्रहसन
भवभूति	–	मालती माधव
विल्हण	–	विक्रमांक देवचरित
जयदेव	–	गीत गोविन्द
चन्दरबरदाई	–	पृथ्वीराजरासो
कल्हण	–	राज तरंगिनी
जयनक	–	पृथ्वी राज विजय
जिनसेन	–	आदिपुराण
वराहमिहिर	–	वृहत्तसंहिता, पंचसिद्धान्तिका
आर्यभट्ट	–	आर्यभट्टीय, सूर्य सिद्धान्त
ब्रह्मगुप्त	–	ब्रह्म-सिद्धान्त

वाग्भट्ट	–	अष्टांग हृदय
हर्षवर्धन	–	नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका
बाण भट्ट	–	हर्षचरित,कादम्बरी
दण्डिन	–	काव्य दर्शन, दशकुमारचरित

प्रमुख विदेशी यात्री	**दरबार**
मेगास्थनीज (यूनानी)	चन्द्रगुप्त मौर्य
डायोनिसियस (मिस्र)	बिन्दुसारा
फाहयान	चन्द्रगुप्त द्वितीय
ह्वेनसांग	हर्षवर्धन

- हेरोडोटस को 'इतिहास का पिता' कहा जाता है। इन्होंने 5वीं शताब्दी ई०पू० में 'हिस्टोरिका' नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें भारत और फ्रांस के बीच सम्बन्धों का वर्णन है।
- अलबरूनी ने किताबुल-हिन्द की रचना की। इसमें राजपूत कालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है।
- शाहनामा की रचना फिरदौसी ने की है।

10. दिल्ली सल्तन

मध्यकालीन भारत

दिल्ली सल्तनत	क्षेत्रीय राज्य	मुगल
(1206-1526)	विजयनगर	(1526-1707)
गुलाम वंश	बहमनी	बाबर
खिलजी वंश	मालवा	हुमायूँ
तुगलक वंश	गुजरात	अकबर
सैय्यद वंश	बंगाल	जहांगीर
लोदी वंश		शाहजहां
		औरंगजेब

महमूद गज़नी/ मुहम्मद गौरी

- भारत पर प्रथम आक्रमण मुहम्मद बिन कासिम ने किया।
- महमूद गजनी ने पहला आक्रमण 1000 ई. में किया।
- महमूद गजनी ने 1025 ई॰ में सोमनाथ मंदिर को लूटा।
- मुहम्मद गौरी ने 1192 ई॰ में तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर भारत में तुर्क शासन की स्थापना की। गौरी का पहला आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान के विरुद्ध किया।
- गजनी के दरबार में अलबरूनी, फिरूदौली, उत्बी तथा फारूखी रहते थे।

सल्तनत काल

गुलाम वंश (1206 - 1290)

कुतमबुद्दीन ऐबक :

- गुलाम वंश का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई।
- नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला बख्तियार खिलजी था।
- ऐबक को लाख बख्श (लाखों का दान देने वाला) कहा जाता था।
- कुतुबमीनार का निर्माण ऐबक ने शुरू करवाया।
- सल्तनत काल की राज भाषा फारसी थी।
- कुब्बत उल-इस्लाम मस्जिद तथा अजमेर में ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण ऐबक ने करवाया।
- ऐबक की मृत्यु 1210 ई॰ में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरकर हो गयी। इसे लाहौर में दफनाया गया।

इल्तुतमिश

- इल्तुतमिश ने राजधानी को दिल्ली स्थानांतरित किया।
- मकबरों का निर्माण सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने ही कराया।
- इल्तुतमिश ने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये – चाँदी का टंका एवं तांबे का जीतल।
- इल्तुतमिश ने इक्ता व्यवस्था को लागू किया। इसने मंगोलों का सामना अप्रत्यक्ष रूप से किया।
- इल्तुतमिश ने तुर्कान-ए-चिहलगानी का निर्माण किया। (चालीस गुलाम सरदारों का संगठन)

रजिया

- दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासिका रजिया सुल्तान थी।
- राजिया ने याकूत को अमीर -ए-अखूर नियूक्त किया।
- रजिया ने पर्दा प्रथा का त्यागकर पुरुषों की तरह चोगा एवं कुलह को पहनना शुरू किया।
- रजिया की शादी अल्तुनिया से हुई।
- नाइब का पद बदरामशाह ने शुरू किया।

बलबन

- तुर्कान-ए-चिहगानी का विनाश बलबन ने किया।
- यह गुलाम वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- बलबन ने लौह एवं रक्त नीति को अपनाया।
- बलबन तुर्कान -ए- चिहालगानी का हिस्सा था।

- सिजदा एवं पैबोस की प्रथा बलबन ने शुरू की।
- मंगोलों को रक्षा के लिए सैन्य विभाग दीवान-ए-आरिज की स्थापना बलबन ने की।
- बलबन ने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नौरोज उत्सव को प्रारंभ किया।
- इसने कुरान के नियम को शासन का आधार बनाया।
- गुलाम वंश का अंतिम शासक शम्मुदीन क्यूमर्स था।

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

- जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की तथा किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया।
- जलालुद्दीन खिलजी की हत्या उसके भतीजे अली गूरशास्प (अलाउद्दीन खिजली) ने की।
- दक्षिण भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रमण जलालुद्दीन खिलजी ने किया था।

अलाउद्दीन खिलजी

- बचपन का नाम–अली गूरशास्प
- इसने सैनिको को नकद वेतन देना शुरू किया। व स्थायी सेना रखने की प्रथा शुरू की।
- इसने विद्रोहों को रोकने के लिए चार अध्यादेश जारी किये।
- इसने बाजार नियंत्रण प्रणाली की शुरूआत की।
- प्रत्येक बाजार शहना-ए-मंडी के अंतर्गत था।
- इसने घोड़ो को दागने एवं सैनिकों को हुलिया रखने की प्रथा की शुरूआत की।
- दक्षिण भारत अभियान के लिए मलिक काफूर को भेजा।
- अमीर खुसरो अलाउद्दीन का दरबारी कवि था। इसने सितार एवं तबले का अविष्कार किया।
- आलाई दरवाजा का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने किया।
- अमीर खुसरो को तुती-ए-हिन्द (भारत का तोता) के नाम से भी जाना जाता है। इसने कव्वाली, तबला, सितार का विकास किया।
- अलाउदीन ने राशनीग व्यवस्था भी प्रारम्भ की।

नाजिर	–	नाप तौल अधिकारी
शहना ए मंडी	–	बाजार का अधीक्षक
बरीद	–	घुमकर बाजार का निरीक्षण
मुनहियान	–	गुप्त सूचना
मुहतासिब	–	सेंसर अधिकारी

सबसे ज्यादा मंगोलो का आक्रमण अलाउद्दीन के समय में हुआ था।

- अलाउद्दीन खिलजी की व्यापारीक नीति की जानकारी बरनी की कृति तारीख–ए– फिरोशाही से मिलती हे।
- विस्वाह भूमि मापन की ईकाइ थी।
- दिवान एंव मुस्तकराज राजस्व विभाग था।

कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी

- इसे नग्न स्त्री-पुरुष की संगत पसंद थी।
- इसने स्वयं को **खलीफा** घोषित किया।

तुगलक वंश

- संस्थापक- गाजी मलिक (गयासुद्दीन तुगलक)
- नहर निर्माण करने वाला प्रथम शासक गयासुद्दीन तुगलक था।
- इसने सबसे अधिक बार मंगोल आक्रमण विफल किया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप तुगलकाबाद नामक नगर की स्थापना की। इसे छप्पन कोट के नाम से जाना जाता है।
- दक्षिण भारत के किसी राज्य को पहली बार दिल्ली सल्तनत में मिलाया।
- गयासुद्दीन तुगलक के संदर्भ में निजामुद्दीन औलिया का कथन है– "दिल्ली दूर है"।
- गयासुद्दीन के बाद जौनखाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) शासक बना।

मुहम्मद बिन तुगलक

- सभी सुल्तानों में सर्वाधिक शिक्षित एवं योग्य व्यक्ति था।
- अपनी सनक भरी योजनाओं के कारण इसे पागल बादशाह भी कहा जाता है।
- दौलताबाद को कुतुबुल इस्लाम भी कहते है।
- इसने राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानन्तरित किया।
- इसने कृषि के विकास के लिए दीवान-ए-कोही नामक विभाग की स्थापना की।
- इसने सांकेतिक मुद्रा चलायी। जो कांसे की थी।
- मुहमम्द बिन तुगलक के शासनकाल में दक्षिण में विजय नगर और बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई।
- इन्होने चॉदी का सिक्का ''अदली'' चलाया था।
- जैन संत जीनप्रभाशुरी से इनके सम्बध थे।
- तकावी कृषि ऋण को कहते थे।

- मुहम्मद बिन तुगलक के काल में सर्वाधिक विद्रोह (34 बार) हुऐ जिनमें अधिकांशत दक्षिण भारत में हुऐ।
- मोरक्को यात्री इब्नबतुता भारत आया। इसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया।
- इब्नबतुता की पुस्तक का नाम **रेहला** है।
- मुहम्मद तुगलक के बारे में कथन है– "राजा को प्रजा से मुक्ति मिली और प्रजा को राजा से।"
- तुगलक वंश का अंतिम शासक नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह था। इसी के समय तैमूर लंग का आक्रमण हुआ।
- मुहम्मद एक कवि व संगीत प्रेमी था। वह हिन्दुओं के त्यौहार होली आदि में भाग लेता था।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु 1351 में थट्टा में हुई।
- इन्होने सुल्तान की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद का निर्माण किया, जिसे मजलिस-ए-खलवत कहा गया।

फिरोजशाह तुगलक

- फिरोज तुगलक ने नगरकोट के प्रसिद्ध ज्वालामुख मंदिर को लूटा।
- 300 संस्कृत ग्रंथों का फारसी अनुवाद ''दलाल-ए-फिरोजशाही'' है।
- प्रथम मुस्लिम शासक जिसने जजियां को खराज से अलग किया।
- इनकें शासनकाल में रिश्वत को बढ़ावा मिला था।
- फिरोज शाह तुगलक– ने अपने शासनकाल में 24 करो को समाप्त किया सिर्फ खराज, खम्स, जजिया, जकात को छोड़कर।
- इसने इस्लामिक पद्धति के द्वारा प्रचलित चार करों को छोड़कर अन्य करो को समाप्त कर दिया।
- इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया लगाया।
- इसने सिंचाई कर 10% लगाया।
- इन्होंने शशगनी नामक सिक्का चलाया।
- इसके द्वारा निर्मित्त नगर– हिसार, फिरोजाबाद, फतेहाबाद, फिरोजपुर, जौनपुर।
- सल्तनतकालीन सुल्तानों में दासों की सर्वाधिक संख्या फिरोज के शासनकाल में थी।
- इसके द्वारा स्थापित विभाग–

दीवान-ए-खैरात	–	दान विभाग
दीवान-ए-बंदगान	–	दास विभाग
दीवान-ए-इस्तिफाक	–	पेंशन विभाग

- इसने अपनी आत्मकथा फुतूहात-ए-फिरोजशाही के नाम से लिखी।
- इसने चांदी एवं तांबे के मिश्रण से निर्मित्त सिक्के जारी किये, जिसे **अद्धा** एवं **बिख** कहा जाता था।
- इसने दिल्ली में कोटला-ए-फिरोजशाही दुर्ग का निर्माण किया।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

- संस्थापक– खिज्र खां (रैय्यत-ए-आला की उपाधि) जो तैमूरलंग का सेनापति था।
- याहिवा-बिन-अहमद-सरहिन्दी को संरक्षण मुबारक शाह ने दिया।
- सैय्यद वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलमशाह था।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- संस्थापक– बहलोल लोदी। यह सरहिन्द का गवर्नर था।
- प्रथम अफगान राज्य का संस्थापक बहलोल लोदी था।
- सिकंदर लोदी ने आगरा शहर की स्थापना की तथा राजधानी बनाया।
- भूमि मापन के लिए गज-ए-सिकन्दरी का प्रचलन कराया।
- सिकन्दर ने जौनपुर को अपने शासन में मिलाया था।
- लोदी वंश का अंतिम शासक इब्राहीम लोदी था।
- पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित किया।

सल्तनतकालीन शासन व्यवस्था

मुशरिफ - ए- मुमालिक	-	महालेखाकार
काजी -उल् - कजात	-	सर्वोच्च न्यायाधिकारी
वकील -ए- दर	-	सुल्तान की देखभाल
खासखेल	-	सुल्तान की स्थायी सेना
मंगलीक तथा अर्राद	-	बारूद का गोला फेकने वाली मशीन

विभाग		**संबंध**
दीवान-ए-विजारत	–	वजीर/ प्रधानमंत्री
दीवान-ए-आरिज	–	सैन्य विभाग
दीवान-ए-इंशा	–	पत्र-व्यवहार विभाग
दीवान-ए-रसालत	–	विदेश विभाग
भद्र-उस-सुदूर	–	धार्मिक विभाग

- सिकन्दर लोदी के आदेश पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में **फरहगें सिकन्दरी** नाम से अनुवाद करवाया।

- जजिया – गैर मुस्लिमों से वसूला जाने वाला कर
- जकात – मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर
- उस्र – मुस्लिमों से लिया जाने वाला भूमि कर
- खुम्स – लुट का धन

पुस्तक	**रचयिता**
तारिखे - ए- यमिनी	उत्बी
सियासतनामा	तुसी
नूह सिपीहर	अमीर खुसरो
किताब–उल–हिन्द	अलबरूनी
ताज–उल–मासिर	हसन निजामी
तबकाते नासिरी	मिनहाज उल सिराज
खजाईन–उल–फुतुह	अमीर खुसरो
तुगलकनामा	अमीर खुसरो
किताब–उल–रेहला	इब्नाबतुता
तारीख–ए–फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी
चचनामा	अबुकूकी
शाहनामा	फिरदौसी
देवल रानी	अमीर खुसरो

- इक्ता प्रथा को अलाउदीन ने समाप्त किया।
- जहांपनाह नगर (दिल्ली) का निर्माण मुहम्मद तुगलक ने किया।

सल्तनत कालीन स्थापत्य कला

- इस कला शैली को 'इण्डो-इस्लामिक' स्थापत्य कला शैली कहा गया। सल्तनत काल में पहली बार वैज्ञानिक ढंग से मेहराब एवं गुम्बद का प्रयोग किया गया। यह कला भारतीयों ने अरबों से सीखी। तुर्क सुल्तानों ने गुम्बद और मेहराब के निर्माण में शिला एवं शहतीर दोनों प्रणालियों का उपयोग किया।

गुलाम तथा खिलजी काल

- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद–** 1192 में तराइन के युद्ध में पृथ्वी राज चौहान के हारने पर उसके किले 'राय पिथौरा' पर अधिकार कर वहाँ पर 'कुव्वत-उल-इस्लाम' मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया। इण्डो-इस्लामिक शैली में निर्मित्त स्थापत्य कला का यह पहला ऐसा उदाहरण है जिसमें स्पष्ट हिन्दू प्रभाव परिलक्षित होता है।
- फिरोज तुगलक की सभी इमारतों में कमल के फुलों का प्रयोग किया गया है।
- **कुतुब मीनार–** दिल्ली के मेहरौली गांव में स्थित है। ऐबक ने इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया। परन्तु एक मंजिल के निर्माण के बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। बाद में इसकी शेष मंजिलों का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया। कुतुब मीनार का निर्माण ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कराया गया।
- **अढाई दिन का झोपड़ा–** कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढाई दिन का झोपड़ा, जो वास्तव में एक मस्जिद है, का निर्माण अजमेर में करवाया।
- **नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा या सुल्तान गढ़ी–** तुर्क सुल्तानों द्वारा भारत में निर्मित यह पहला मकबरा था इसलिए इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता भी कहा जाता है। इस मकबरे का निर्माण इल्तुतमिश ने नासिरुद्दीन महमूद की याद में करवाया। सुल्तान गढी का मकबरा प्रथम सल्तनतकालीन मकबरा था।
- **इल्तुतमिश का मकबरा–** 1235 में इल्तुतमिश द्वारा मकबरे की दीवारों पर कुरान की आयतें खुदी हैं। इसमें स्क्रीन शैली का प्रयोग हुआ है।
- **अलाई दरवाजा–** अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1310–11 में। इसके गुम्बद में पहली बार विशुद्ध वैज्ञानिक विधि का प्रयोग। अलाई दरवाजा के साज-सज्जा में बौद्ध तत्वों के मिश्रण का आभास होता है।

तुगलक काल

- तुगलक काल सादगी एवं विशालता पर अधिक जोर।
- **तुगलकाबाद–** गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित्त। यह रोमन शैली में निर्मित्त है। इस दुर्ग को छप्पनकोट के नाम से भी जाना जाता है।
- **कोटला फिरोजशाह–** फिरोजशाह तुगलक द्वारा इस दुर्ग का निर्माण कराया गया।

लोदी काल

- **बहलोल लोदी का मकबरा–** 1418 में सिकंदर लोदी द्वारा।
- **सिंकदर लोदी का मकबरा–** इब्राहिम लोदी द्वारा 1517 में बनाया गया।
- **मोठ की मस्जिद–** सिंकदर लोदी के वजीर द्वारा बनाई गई।
- लोदी काल को मकबरों का काल भी कहते है।
- मेहराव का प्रचलन सर्वप्रथम बलबन के मकबरे से ही प्रारंभ हुआ था।

सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था

- इल्तुतमिश द्वारा स्थापित सेना को **हश्म-ए-कल्ब** (केन्द्रीय सेना) या **कल्ब-ए-सुल्तानी** कहा जाता था। इल्तुतमिश के समय में सामन्तों व प्रान्तपतियों की सेना को **'हश्म-ए-अतराफ'** कहा जाता था। शाही घुड़सवार सेना को **सवार-ए-कल्ब** कहा जाता था। सल्तनत कालीन सेना मुख्यत: तीन भागों में विभक्त थी–
    1. घुड़सवार सेना
    2. गज (हाथी) सेना
    3. पदाति (पैदल) सेना।
- मंगोल सेना के वर्गीकरण की दशमलव प्रणाली को सल्तनत कालीन सैन्य व्यवस्था का आधार बनाया गया।

10 अश्वारोही	–	1 सर-ए-खेल
10 सर-ए-खेल	–	1 सिपहसालार
10 सिपहसालार	–	1 अमीर
10 अमीर	–	1 मलिक
10 मलिक	–	1 खान
मांगलिक तथा अरदि	–	गोला फेंकने की मशीन
चर्ख	–	शिला प्रक्षेपास्त्र
फलाखून	–	चलायमान मंच
सवल	–	सुरक्षित गाड़ी

- "साहिब-ए-वडीद-ए-लश्कर विभाग' युद्ध के समय की समस्त जानकारी राजधानी भेजता था।
- तले-अद एवं यज्की नामक गुप्तचर शत्रु की सेना की गतिविधियों की सूचना एकत्र करता था।
- सल्तनत काल में अच्छी नस्ल के घोडे, तुर्की, अरब एवं रूस से मंगाये जाते थे। हाथी मुख्यत: बंगाल से प्राप्त होते थे।

न्याय तथा दण्ड व्यवस्था

- सुल्तान राज्य का सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। इस समय इस्लामी कानून शरीयत, कुरान एवं हदीस पर आधारित था।
- **मुस्लिम कानून के चार स्रोत–**

कुरान	–	मुस्लिम कानून का मुख्य स्रोत
हदीस	–	पैगम्बर के कार्यों एवं कथनों का उल्लेख
इजमा	–	व्याख्यायित कानून
कयास	–	तर्क के आधार पर विश्लेक्षित कानून

दण्ड व्यवस्था

फिकह	–	मुस्लिम दण्ड विधि
जिहाद	–	धर्म युद्ध
दारूल-हर्ब	–	काफिरों का देश
दारूल-इस्लाम	–	इस्लाम का देश

वित्त विभाग

- सल्तनत कालीन वित्त व्यवस्था सुन्नी विधिविज्ञों की हनीकी शाखा के वित्त सिद्धान्तों पर आधारित थी।
- **जकात–** मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर। यह आय का 2.5 प्रतिशत लिया जाता था। इस कर का सम्पूर्ण भाग मुसलमानों के कल्याण पर खर्च किया जाता था।
- **उश्र–** केवल मुसलमानों से लिया जाने वाला यह कर भूमि की उपज पर लिया जाता था। यह कर प्राकृतिक साधनों से सिंचित भूमि की उपज का 1/10 भाग तथा मनुष्यकृत साध नों से सिंचित भूमि की उपज का 1/5 भाग लिया जाता था।
- **जजिया–** गैर-मुसलमानों से वसूले जाने वाला कर। इस कर से स्त्रियां, बच्चे, भिखारी एवं लंगड़े मुक्त थे। फिरोज तुगलक ने इसे ब्राह्मणों पर भी लगाया। यह कर सम्पन्न वर्ग से 40 टंका, मध्यम वर्ग से 20 टंका एवं सामान्य वर्ग से 10 टंका प्रतिवर्ष लिया जाता था।
- **खराज–** गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर। यह उपज का 1/3 से 1/2 तक वसूला गया।
- **खम्स–** लूट का धन। इस धन का 1/5 भाग राजकोष में तथा 4/5 भाग सैनिकों में बांटा जाता था। अलाउद्दीन ने इसे पलट दिया।
- **सदकन–** धार्मिक कर।
- **बटाई–** लगान निर्धारित करने की एक प्रणाली।
- जब तैयार फसलों की माप-तोल के आधार पर कर का निर्धारण किया जाता था तो उसे बटाई, किस्मत-ए-गल्ला, गल्ला बक्शी व हासिल कहा गया। सल्तनत काल में तीन प्रकार की बंटाई प्रचलन में थी–
    1. खेत बटाई– खड़ी फसल के आधार पर
    2. लंक बटाई– खेत काटने के बाद खलिहान में लाये गये अनाज से भूसा निकालने के पूर्व।
    3. रास बटाई– अनाज से भूसा अलग करने के बाद।
- सल्तनत काल में राज्य की समस्त भूमि 4 वर्गों में विभक्त थी–

खालसा भूमि	–	केन्द्र के नियंत्रण में
इक्ता भूमि	–	देखभाल मुक्ति द्वारा

सामन्तों की भूमि – अधीनस्थ हिन्दू सामन्त केअधीन

इनाम व वक्फ – कर मुक्त भूमि

- अलाउद्दीन के समय भूमि कर को 50 प्रतिशत कर दिया गया।
- अलाउद्दीन एवं मुहम्मद तुगलक ने भूमि की पैमाइश के आधार पर लगान को निर्धारित किया।

स्थान	**प्रसिद्धि**
आगरा	नील
बनारस	सोने, चांदी, जरी का काम
अन्हिलवाड़	व्यापारियों के तीर्थस्थल
देवल	बन्दरगाह
सरसुती	चावल
सतगांव	रेशमी रजाई

EduBull.com

11. मुगल साम्राज्य

बाबर (1526–1530)–

- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। इन्होने पद पदशाही की स्थापना की।
- इसने कलन्दर की उपाधि धारण की।
- बाबर फरगना की गद्दी पर 8 जून, 1494 को बैठा।
- बाबर ने 1507 में बादशाह की उपाधि धारण की।
- बाबर ने भारत पर पांच बार आक्रमण किया।
- मुबईयान नामक पद्यशैली का जन्मदाता।
- **बाबर द्वारा लड़े गए युद्ध–**

युद्ध	शासक	समय		विशेष घटना
पानीपत का प्रथम युद्ध	बाबर एवं इब्राहिम लोदी	1526	–	तोप का प्रयोग
खानवा का युद्ध	बाबर एवं राणा सांगा	1527	–	जेहाद का नारा दिया
चन्देरी का युद्ध	बाबर एवं मेदनी राय	1528		
घाघरा का युद्ध	बाबर एवं अफगान	1529	–	बाबर का भारत में अंतिम युद्ध

- पानीपत के युद्ध में 'तुगलुमा युद्ध पद्धति' का प्रयोग किया।
- बाबर के चार पुत्र थे–
  हुमायु, कामरान, अस्करी तथा हिंदाल
- बाबर को काबुल में दफनाया गया।
- बाबर ने गज–ए–बाबरी नामक माप का प्रयोग सड़कों को मापने के लिए किया गया।
- 1519 में बाबर ने पहला आक्रमण बाजौर पर किया था।
- खानवा युद्ध में विजय के बाद बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा की रचना तुर्की भाषा में की
- बाबर ने अपनी पुस्तक में सात राज्यों की चर्चा की:
  (1) बंगाल (2) दिल्ली
  (3) मालवा (4) गुजरात
  (5) बहमनी (6) विजयनगर
  (7) मेवाड़
- बाबरनामा का फारसी में अनुवाद अब्दुल रहीम खानखाना ने किया।

हुमायूँ (1530–1540) (1555–56)

- आगरा में 23 वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा।
- 1533 में दीनपनाह नगर की स्थापना।
- हुमायू 1539 में चौसा के युद्ध में शेर खां से हारा।
- 1540 में बिलग्राम/कन्नौज युद्ध में शेर खां से हार के बाद शेरखां ने दिल्ली व आगरा पर कब्जा कर लिया था।
- बिलग्राम युद्ध के बाद हुमायूँ सिन्ध चला गया।
- हुमायु ज्योतिष में विश्वास करता था इसलिए सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनता था।
- हुमायूंनामा की रचना गुलबदन बेगम ने की थी।

शेरशाह

- सूर साम्राज्य का संस्थापक शेरशाह था।
- बचपन का नाम फरीद खां।
- एक शेर को तलवार के एक ही वार से मारने के कारण बहार खां लोहानी ने इसे शेरखां की उपाधि दी। शेरशाह ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य को 47 सरकारो में विभाजित किया था।
- शेरशाह का मकबरा सासाराम में है।
- ग्रैंड ट्रंक रोड की मरम्मत।
- डाक–प्रथा का प्रचलन।
- फसलदारों की सूची को रई कहते थे।
- 178 ग्रेन चांदी का रुपया एवं 380 ग्रेन तांबे के दाम चलाया।
- कबूलियत एवं पट्टा प्रथा की शुरूआत।
- पुराना किला के निर्माण शेरशाह ने करवाया था।
- रोहतास गढ़ किला एवं किला–ए–कुहना मस्जिद का निर्माण।
- सूर साम्राज्य का अंतिम शासक आदिलशाह सूर था।

अकबर

- जन्म– 15 अक्टूबर, 1542 को हमीदा बानू बेगम के गर्भ से। (अमरकोट में)
- राज्याभिषेक– 14 फरवरी, 1556 को कालानौर (पंजाब)में।
- शिक्षक– अब्दुल लतीफ ईरानी
- बैरम खां 1556 से 1560 तक अकबर का संरक्षक रहा।
- पानीपत का द्वितीय युद्ध 1556 में अकबर एवं हेमू के बीच हुआ।

- हल्दीघाटी का युद्ध 1576 में अकबर और मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप के बीच हुआ।
- 1560-1562 तक के शासन काल को पेटीकोट शासन कहते है।
- हेमू ''विक्रमाद्वित्य'' की उपाधि धारण करने वाला भारत का 14 वां शासक था।
- अकबर ने दाऊद खॉ को पराजित कर भारत से अन्तिम अफगान शासक का अन्त कर दिया (1576)
- अकबर का प्रथम और अंतिम विजय मालवा और आसीरगढ़ था।

अकबर द्वारा किये गये कार्य–

दास प्रथा की समाप्ति	–	1562
तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति	–	1563
जजिया कर की समाप्ति	–	1564
फतेहपुर सिकरी की स्थापना	–	1571 जो अकबर की दुसरी राजधानी थी
इबादत खाने की स्थापना	–	1575
मजहर की घोषणा	–	1579
दिन-ए-इलाही की घोषणा	–	1582

- अकबर का सेनापति मानसिंह था।
- गुजरात विजय के दौरान अकबर सर्वप्रथम पुर्तगालियों से मिला। यहीं उसने सर्वप्रथम समुद्र को देखा।
- दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान अकबर था।
- दीन-ए-इलाही धर्म स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अंतिम व्यक्ति बीरबल था।
- अकबर ने जैनाचार्य हरिविजय सूरि को जगतगुरु की उपाधि प्रदान की।
- अकबर ने जब्ती प्रणाली प्रचलित की।
- आइने-दहसाला व्यवस्था राजा टोडरमल ने लागू किया।
- अकबर के दरबार का प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन था।
- दसवंत एवं बसावन प्रसिद्ध चित्रकार थे।
- अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था की शुरूआत की।
- सूफी संत शेख सलीम चिश्ती अकबर के समकालीन थे।

शासक	**मकबरा**
बाबर	काबुल
हुमायूँ	दिल्ली
अकबर	सिकंदरा (आगरा)
जहांगीर	लाहौर
शाहजहां	आगरा
औरंगजेब	औरंगाबाद

- अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की।
- अकबर के दरबार को सुशोभित करने वाले नौ रत्न थे। जिसमें प्रमुख थे– बीरबल, अबुलफजल, टोडरमल, तानसेन, भगवान दास।
- अबुल फजल ने अकबरनामा ग्रंथ की रचना की।
- अकबर ने बीरबल को कविप्रिय एवं नरहरि को महापात्र की उपाधि प्रदान की।
- बुलन्द दरवाजा का निर्माण अकबर ने गुजरात विजय के उपलक्ष्य में करवाया।
- मुगलों की राजकीय भाषा फारसी थी।
- अकबर के शासन को हिन्दी सहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है।
- अकबर ने झरोखा दर्शन व तुलादान को प्रारम्भ किया। बीरबल के बचपन का नाम महेशदास था।

जहांगीर

- बचपन का नाम – सलीम
- पिता – अकबर
- माता – मरियम उज्जमानी
- जन्म स्थान – सलीम चिश्ती की कुटिया में
- जहॉगीर ने 'न्याय की जंजीर' लगाई थी।
- प्रथम विवाह – भगवानदास की पुत्री मानबाई के साथ।
- जहांगीर ने अबुलफजल की हत्या बुन्देला द्वारा करवाई थी।
- जहॉगीर ने 12 घोषाणायें प्रकासित करवाई जिसका नाम आइन-ए-जहांगीरी था।
- 1611 में जहांगीर ने नूरजहां से विवाह किया।
- नूरजहां की माँ अस्मत बेगम ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि खोजी थी।
- जहांगीर की मृत्यु 1627 में भीमवार नामक स्थान पर हुई।
- जहांगीर के समय मुगल चित्रकला चरमोत्कर्ष पर था। प्रमुख चित्रकार– मंसूर, अबुल हसन, बिशनदास, मनोहर, फरूख बेग।
- खूसरों को सहायता देने के कारण जॅहागीर ने सिक्खों के पाचवें गुरू अर्जुनदेव को फांसी दी थी।
- मंसूर को नादिर-उल-अज्र एवं अबुल हसन को नादिर-उज-जमां की उपाधि जहांगीर ने दी थी।
- एतमादुद्दौला का मकबरा नूरजहां ने बनवाया था। सर्वप्रथम इसी इमारत में पितरादयूरा नामक जड़ाउ का काम किया गया।
- अशोक के कौशाम्बी स्तम्भ लेख पर समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति तथा जहांगीर का लेख उत्कीर्ण है।
- जहांगीर के मकबरे का निर्माण नूरजहां ने करवाया था।
- नूरजहां का नाम मेहरुन्निसा था।
- कैप्टन हॉकिन्स, टॉमस रों जहांगीर के काल में भारत आये।

शाहजहां

- पिता – जहांगीर
- शाहजांह ने महावत खाँ को खानेखाना की उपाधि दी।

- माता – जगत गोसाई
- जन्म स्थान – लाहौर
- बचपन का नाम – खुर्रम
- अमीन का पद शाहजांह के शासनकाल में आया।
- विवाह – अर्जुमन्द बानो बेगम (मुमताज महल)
- वास्तुकला की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा जाता है।
- इसने प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण अपनी बेगम मुमताज महल की याद में आगरा में करवाया।
- ताजमहल के मुख्य स्थापत्य कलाकार उस्ताद अहमद लाहौरी था।
- मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहां ने किया।
- शाहजहां के शासनकाल में बनवाई गई कुछ इमारतें– दिल्ली का लाल किला, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की मोती मस्जिद, ताजमहल, दीवाने आम, दीवाने खास।
- दारा शिकोह ने 'मजमउल बहरैन' पुस्तक की रचना की।
- शाहजहां राजधानी को आगरा से दिल्ली लाया।
- शाहजहां के दरबार के प्रमुख चित्रकार– मुहम्मद फकीर एवं मीर हासिम।
- शाहजहां के पुत्र दाराशिकोह ने भगवतगीता, योगवशिष्ठ, उपनिषद् एवं रामायण का अनुवाद फारसी में करवाया।
- शाह बुंलद इकबाल दाराशिकोह को कहा गया।
- शाहजांह ने 'हिजरी संवत' को ईलाही संवत की जगह चलाया था।

औरंगजेब

- औरंगजेब को 'जिन्दा पीर' कहा जाता था।
- पिता – शाहजहां
- माता – मुमताजमहल
- औरंगजेब ने दो बार राज्याभिषेक कराया था।
- झरोखा दर्शन पर रोक लगाई।
- नौरोज उत्सव पर रोक लगाई।
- संगीत पर प्रतिबंध लगाया।
- सार्वजनिक संगीत समारोह पर रोक।
- सिक्कों पर कलमा खुदवाना बंद।
- औरंगजेब का मुख्य उद्देश्य भारत को 'दारूल इस्लाम' बनाना था।
- एक मात्र मुगल शासक जो विणा वादक था।

औरंगजेब द्वारा किये गये कार्य

कार्य		समय
सती प्रथा पर प्रतिबंध	–	1663
हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगाया	–	1663
झरोखा दर्शन की समाप्ति	–	1670
तुलादान प्रथा की समाप्ति	–	1671
जजिया कर लगाया	–	1679

विद्रोह	नेता
(1) जाट विद्रोह	गोकूला, राजाराम, चुणामल
(2) सतनामी	सतनामीयो द्वारा
(3) अफगान	भामू, अकमल खां
(4) बुंदेला	चम्पतराय, छत्रसाल

- 1699 में मंदिर तोड़ने का आदेश जारी किया।
- औरंगजेब के समय तेग बहादुर को फांसी दे दी गई।
- औरंगजेब के समय हिन्दू अधिकारियों की संख्या सर्वाधिक थी।
- औरंगजेब सुन्नी धर्म को मानता था, इसे जिन्दापीर कहा जाता था।
- औरंगजेब ने बीबी के मकबरे का निर्माण 1679 में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में करवाया।
- बीजापुर एवं गोलकुण्डा को औरंगजेब ने अपने साम्राज्य में मिलाया।

मुगलकालीन महत्वपूर्ण तथ्यः

शेरशाहकालीन प्रशासनः-	आधिकारी
(1) केन्द्रीय प्रशासन	दीवाने वजारत, दीवाने अर्ज दीवाने रसालत, दीवाने इंशा
(2) प्रांतीय प्रशासन	सिकदार
(3) सरकार (जिला) प्रशासन	सिकदार -ए-सिकदारन
(4) परगना प्रशासन	सिकदार, मुंसिफ, फोतदार
(5) ग्राम प्रशासन	चौकीदार, पटवारी, प्रधान

- शेरशाह की लगान व्यवस्था रैयतवाड़ी थी।

सिक्काः	धातुः	राजाः
(1) मुहर	सोना	अकबर
(2) सनशब	सोना	अकबर
(3) ईलाही (गोला आकार)	सोना	अकबर
(4) जलाली	चांदी	अकबर
(5) रूपया	चांदी	शेरशाह
(6) दाम	तांबा	शेरशाह
(7) निसार	तांबा	जाहांगीर

- जात से व्यक्ति के वेतन एंव प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था जबकि सवार पद से घुड़सवार दस्तों की सख्या का ज्ञान होता था।
- मनसबदारी पद्धति मंगोलो की दशमलव प्रणाली पर आधारित थी।
- बाबर नक्शबंदी सम्प्रदाय का अनुयायी।

मुगल काल के प्रमुख अधिकारी एवं कार्य

पद	कार्य

सूबेदार	प्रान्तों में शान्ति स्थापित करना
दीवान	प्रांतीय राजस्व का प्रधान
बख्शी	प्रांतीय सैन्य प्रधान
आमिल	जिले का राजस्व अधिकारी
कोतवाल	नगर प्रधान

- मंत्रिपरिषद को विजारत कहा जाता था।
- सम्राट के घरेलू विभागों का प्रधान मीर समान कहलाता था।
- अकबर के शासनकाल में 15 सुबे थे।

साम्राज्य का विभाजन

–

सूबा

–

सरकार

–

परगना/महल

–

जिला/दस्तूर

–

ग्राम

अधिकारी	**पद**
मीर -ए-बहर	जल सेना प्रधान
मीर-ए-बर्र	वन विभाग अध्यक्ष
खुफिया नवीस	गुप्त पत्र लेखक
वाकिया नवीस	समाचार लेखक
अमिल	करोड़ी
मुसदी	बन्द्रगाहों का प्रशासक

- शाहजहां के काल में सरकार एवं परगना के बीच **चकला** नामक नई इकाई की स्थापना की गई।
- अनुदान में दी गई भूमि को सयूरगल/ मदद-ए-माश कहा जाता था।
- 1580 में अकबर ने दहसाला नामक नई कर प्रणाली आरंभ की। इसे टोडरमल व्यवस्था भी कहा जाता है।
- आना सिक्के का प्रचलन शाहजहां ने करवाया।
- स्वर्ण का सबसे प्रचलित सिक्का इलाही था।
- मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार चांदी का रुपया था।
- जहांगीर ने दु-अस्पा-सिंह-अस्पा व्यवस्था की शुरूआत मनसबदारी प्रथा में की।

पुस्तक	**लेखक**
बाबरनामा	बाबर
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
तोहफा-ए-अकबरशाही	अब्बास खां सरवानी
अकबरनामा	अबुलफजल
मजमउल बहरैन	दाराशिकोह
फुतुहात-ए-आलमगीरी	ईश्वरदास नागा

- राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद मौलाना शेरी ने किया।
- अथर्ववेद का अनुवाद फारसी में हाजी इब्राहीम सरहिन्दी ने किया।
- महाभारत का फारसी भाषा में **रज्मनामा** नाम से अनुवाद बदायूँनी, नकीब खां एवं अब्दुल कादिर ने किया।
- रामायण का अनुवाद फारसी में नकीब खां एवं अब्दुल कादिर बदायूँनी ने किया।
- भागवत पुराण का अनुवाद फारसी में टोडरमल ने किया।

मुगल कालीन राजस्व प्रणाली

- भूमिकर के विभाजन के आधार पर मुगल साम्राज्य की समस्त भूमि 3 वर्गों में विभक्त थी–

1. **खालसा भूमि–** यह भूमि प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में थी। इस आय का उपयोग व्यक्तिगत खर्च पर (शाही परिवार), राजा के अंगरक्षक एवं निजी सैनिक, युद्ध की तैयारी आदि पर किया जाता था। यह सम्पूर्ण साम्राज्य का लगभग बीस प्रतिशत था।
2. **जागीर भूमि–** यह भूमि राज्य के प्रमुख कर्मचारियों को उनकी तनख्वाह के बदले दी जाती थी। साम्राज्य की अधिकांश भूमि जागीर भूमि के अन्तर्गत होती थी।
3. **सयूरगल व 'मदद-ए-माश'–** यह भूमि अनुदान के रूप में धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति को दे दी जाती थी। इस भूमि को **'मिल्क'** भी कहा जाता था।

अकबर ने 1580 में **'दहसाला'** नाम की नवीन प्रणाली को प्रारम्भ किया। इस प्रणाली के अन्तर्गत करीब 10 वर्ष का औसत निकालकर उस औसत का एक तिहाई भू-राजस्व के रूप में निश्चित किया गया। आइने दहसाला व्यवस्था को टोडरमल व्यवस्था भी कहा जाता था। इस व्यवस्था के अंतर्गत भूमि को पैमाइश हेतु 4 भागों में विभाजित किया गया।

1. **पोलज–** इस भूमि पर नियमित रूप से खेती होती थी।
2. **परती–** यह भूमि उर्वरा-शक्ति प्राप्त करने हेतु एक या दो वर्ष तक परती पड़ी रहती थी।
3. **छच्छर या चाचर–** जिस भूमि पर करीब तीन या चार वर्षों तक खेती नहीं की जाती थी।
4. **बंजर–** निकृष्ट कोटि की भूमि जिसे करीब 5 वर्षों तक काश्त में प्रयोग में न लाया गया हो।

कानकूत प्रथा में खेतों को पैरो से मापा जाता था फिर पैदावार के आधार के राजस्व वसुला जाता था।

मुद्रा व्यवस्था

- चांदी का रुपया मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार था। यह 175.5 ग्रेन का था। अकबर ने **जलाली** नाम का चौकोर आकार का रुपया चलाया।
- तांबे का **दाम** व **पैसा** या **फलूस** 323.5 ग्रेन का था।
- स्वर्ण का सर्वाधिक प्रचलित सिक्का 'इलाही' एवं सबसे बड़ा सिक्का 'शंसब' था।
- टकसाल का अधिकारी चौधरी कहलाता था।
- शाहजहॉं ने दाम और रुपये के मध्य एक नये 'आना' सिक्के का प्रचलन करवाया।
- मुगलकाल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई औरंगजेब के काल में हुई।
- जहांगीर ने अपने समय में सिक्कों पर अपनी आकृति बनवायी। साथ ही अपना नाम तथा नूरजहॉं का नाम उस पर अंकित करवाया।
- औरंगजेब के समय में रुपये का वजन 180 ग्रेन होता था। एक रुपये में '40 दाम' होता था।
- औरंगजेब ने सिक्को पर कलमा खुदवाने पर रोक लगा दी।
- गल्ला बख्शी सबसे पुरानी मुगलकालीन कर प्रणाली थी
- अकबर ने इलाही गज का भूमि मापने में प्रयोग किया।

कृषि

- अबुल फजल ने आईने अकबरी में रबी की 16 तथा खरीफ की 25 फसलों का उल्लेख किया है।

मुख्य फसलें	उत्पादक क्षेत्र
गन्ना	उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार
नील	मध्यभारत
गेहूँ	पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार
अफीम	मालवा, बिहार
चावल	मद्रास, कश्मीर
नमक	सांभर झील, गुजरात, सिंध

मुगलकालीन वास्तुकला

- मुगलकाल में वास्तुकला के क्षेत्र में पहली बार 'आकार' एवं 'डिजाइन' की विविधता का प्रयोग तथा निर्माण की सामग्री के रूप में पत्थर के अलावा पलस्तर एवं गचकरी का प्रयोग किया गया। सजावट के क्षेत्र में संगमरमर पर जवाहरात में की गयी जड़ावट (च्पमजतं क्नतं) का प्रयोग भी इस काल की एक विशेषता थी।
- मुगलकाल को उसकी सांस्कृतिक विधियों के कारण भारतीय इतिहास का दूसरा स्वर्ण काल कहा जाता है।
- **बाबर–** बाबर ने आगरा में ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान का निर्माण करवाया।

ख **हुमायूँ–** 1533 में दीनपनाह (धर्म का शरणस्थल) नामक नगर की नींव डाली। इसे 'पुराना किला' भी कहा जाता है।

- **शेरशाह–** वास्तुकला के क्षेत्र में 'संक्रमण काल' माना जाता है। इसने दिल्ली में 'शेरगढ़' या 'दिल्ली शेरशाही' की नींव डाली।
- शेरशाह ने दीनपनाह को तुड़वाकर उसके मलवे पर 'पुराने किले' का निर्माण करवाया। 1542 में शेरशाह ने इस किले के अन्दर 'किला-ए-कुहना' नामक मस्जिद का निर्माण करवाया। शेरशाह का **सासाराम** (बिहार) का मकबरा वास्तुकला का श्रेष्ठ नमूना है।

अकबर

- **हुमायूँ का मकबरा–** इसका निर्माण अकबर की सौतेली माँ 'हाजी बेगम' की देखरेख में 1564 में हुआ। ईरानी प्रभाव के साथ-साथ इस मकबरे में हिन्दू शैली की 'पंचरथ' से भी प्रेरणा ली गई है।
- **आगरा का किला–** 1566 में अकबर के वास्तुकार 'कासिम खां' के नेतृत्व में इस किले का निर्माण कराया।
- पंचमहल का निर्माण अकबर ने करवाया।
- **फतेहपुर सीकरी–** अकबर ने सलीम के जन्म के बाद 1571 में 'शेख सलीम चिश्ती' के प्रति आदर प्रकट करने के उद्देश्य से फतेहपुर सीकरी के निर्माण का आदेश दिया। 1570 में अकबर ने गुजरात को जीतकर इस स्थान का नाम 'फतेहपुर सीकरी' रखा।
- **बुलन्द दरवाजा–** इसका निर्माण गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर द्वारा।

जहांगीर

- **अकबर का मकबरा–** सिकन्दरा में स्थित इस मकबरे की योजना स्वयं अकबर ने बनाई थी परंतु 1613 तक अन्तिम रूप से इसका निर्माण कार्य जहांगीर ने पूरा करवाया।
- **जहांगीर का मकबरा–** लाहौर में रावी नदी के किनारे स्थित 'शहादरा' नामक स्थान पर निर्मित इस मकबरे के अधिकांश भाग का निर्माण जहांगीर की पत्नी नूरजहां ने करवाया था।
- **एतमाद-उद्-दौला का मकबरा–** इसका निर्माण 1626 में नूरजहां बेगम ने करवाया। मुगलकाल की यह प्रथम ऐसी इमारत है जो पूर्ण रूप से बेदाग सफेद संगमरमर से निर्मित्त है। सर्वप्रथम इसी इमारत में 'पित्रादुरा' नाम की जड़ाऊ का काम किया गया।

शाहजहाँ

- सफेद संगमरमर के प्रयोग का चरमोत्कर्ष काल।
- **जामा मस्जिद–** आगरा किले में स्थित इस मस्जिद का निर्माण शाहजहां की पुत्री जहांआरा बेगम ने 1648 में करवाया।
- **जामा मस्जिद–** दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने 1648 में करवाया।
- **ताजमहल–** आगरा में यमुना नदी के तट पर स्थित ताजमहल

का निर्माण शाहजहां की देख-रेख में 'उस्ताद इसा खां' ने सम्पन्न करवाया। मकबरे की योजना 'उस्ताद अहमद लाहौरी' ने तैयार की थी। शाहजहां ने लाहौरी को 'उस्ताद-उल-असर' की उपाधि प्रदान की।

औरंगजेब

- बादशाही मस्जिद लाहौर का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।
- रबिया दुरानी का मकबरा, मोतीमस्जिद (दिल्ली के लालकिला में) का निर्माण भी औरंगजेब ने ही करवाया।

चित्रकला

- तैमूरी चित्रकला को चरमोत्कर्ष पर ले जाने का श्रेय 'बेहजाद' को जाता है। बेहजाद को 'पूर्व का राफेल' भी कहा जाता है। यह बाबर के समय का महत्वपूर्ण चित्रकार था।
- 'मीर सैय्यद अली' एवं 'ख्वाजा अब्दुस्समद' हुमायूँ के चित्रकार थे। अब्दुस्समद द्वारा बनाई गई कुछ कृतियों का संकलन जहांगीर के 'गुलशन चित्रावली' में किया गया है।
- हम्जानामा मुगल चित्रशाला की प्रथम महत्वपूर्ण कृति है, इसे 'दास्ताने-अमीर-हम्जा' भी कहा जाता है। इसमें कुल करीब 1200 चित्रों का संग्रह है।
- आइने अकबरी में अबुल फजल ने करीब 17 चित्रकारों का उल्लेख किया है जिनका संबंध अकबर के राजदरबार से था। जिनमें प्रमुख हैं– दसवंत, बसावन, केशवलाल इत्यादि।
- बसावन को अकबर के समय का सर्वोत्कृष्ट चित्रकार माना जाता है। अकबर के समय में पहली बार 'मित्ती चित्रकारी' की शुरूआत हुई।
- जहांगीर ने हेरात के आगारजा के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रणशाला की स्थापना की। जहांगीर के समय प्रमुख चित्रकार थे– फारूख बेग, दौलत, मनोहर, बिसनलाल, मंसूर एवं अबुल हसन।
- उस्ताद मंसूर एवं अबुल हसन को जहांगीर ने 'नादिर-उल-अस्र' एवं 'नादिर-उज-जमा' की उपाधि प्रदान की। उस्ताद मंसूर की महत्वपूर्ण कृति में 'साइबेरिया का बिरला सारस' एवं 'बंगाल का एक पुष्प' है।
- मुहम्मद फकीर एवं मीर हासिम शाहजहां के प्रमुख चित्रकार थे।
- चित्रकार दंशवत ने आत्महत्या कर ली थी।

मुगलकालीन संगीत

- अकबर के समय में 'ध्रुपद' गायनशौली एवं वीना (वाणी) का प्रचार हुआ। तानसेन अकबर के नवरत्नों में से एक था।
- तानसेन के अतिरिक्त अन्य ध्रुपद गायके थे– बैजबख्श, गोपाल, हरिदास, सूरदास आदि।
- अकबर ने तानसेन को 'कण्ठाभरणवाणी विलास' की उपाधि दी।
- तानसेन की प्रमुख रचनाएँ थीं– मियाँ की टोड़ी, मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग, दरबारी कान्हरा आदि।
- 'राम सागर' ग्रंथ की रचना अकबर के दरबार में की गयी।
- जहांगीर के दरबार के प्रमुख कलाकारों में तानसेन के पुत्र विलास खां, छत्तर खां एवं हमजान थे।
- एक गजल गायक 'शोकी' को जहांगीर ने आनन्द खां की उपाधि दी।
- शाहजहां ने विलास खां के दामाद लाल खां को 'गुन समन्दर' की उपाधि दी।
- औरंगजेब के काल में फकीरूल्लाह ने 'मान कुतूहल' का अनुवाद 'राग दर्पण' नाम से करके औरंगजेब को अर्पित किया।

12. उत्तरकालीन मुगल साम्राज्य

जिस मुगल साम्राज्य ने सम्पूर्ण संसार को अपने विस्तृत प्रदेश, विशाल सेना तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों से चकाचौध कर दिया था, अठारही शताब्दी के आरम्भ में वह अवनति की ओर जा रहा था। औरंगजेब का राज्यकाल मुगलों का सांध्यकाल था। साम्राज्य को अनेक व्याधियों ने घेर रखा था और यह रोग शनैः शनैः समस्त देश में फैला रहा था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् आने वाले 52 वर्षो में 8 सम्राट दिल्ली के हिंसासन पर आरूढ़ हुए। भारत के भिन्न-भिन्न भागों में देशी और विदेशी शक्तियों ने अनेक छोटे-बड़े राज्य स्थापित किए।

1737 में बाजीराव प्रथम और 1739 में नादिर शाह के दिल्ली पर आक्रमणों ने मुगल साम्राज्य के खोखलेपन की पोल खोल दी और 1740 तक यह पतन स्पष्ट हो गया।

- 1526 - 1707 तक मुगल
- 1707 -1857 तक उत्तरवर्ती मुगल
- **बहादुर शाह प्रथम (1707-12) :**
- औरंगजेब के बाद मुगल सत्ता कमजोर होने लगी और गद्दी के लिए संघर्ष में वजीर शासक से अधिक शक्तिशाली होने लगे। बहादुर शाह प्रथम के बाद।
- उपाधी शाहे वेखबर
- गुरू गोविन्द सिंह से मित्रवत्त सम्बंध किन्तु वंदा बहादुर जो सिखों का नया नेतृत्व कर्त्ता था से संघर्ष।
- जाजिया की दरों में कमी की और मराठो को कुछ अधिकार बढ़ाया।

जहांदर शाह (1712-13)

- उपाधी लम्पट मुर्ख।
- इरानी मूल के वजीर जुल्फिकार खां के समर्थन से शासक बना।

फर्रूखसियर (1713-19)

- कृणित कायर
- हिन्दुस्तानी समूह के सैयद बन्धु ने शासक बनाया जिसे राजा बनाने वाले की उपाधी दी। बाद में फर्रूखसियर से इनके कटु सम्बन्ध तो इन्होने इसकी हत्या करवा दी।
- फर्रूखसियर ने बंदा बहादुर को मौत की सजा दी। 1717 मे अंगेजों को फरमान देकर उनकी महत्वाकंक्षा को बढ़ा दिया।

मौहम्मद शाह (1719-48)

- उपाधी रंगीला।
- उसका वास्तविक नाम रोशन अक्खतर था।
- तुरानी समुह के निजाममुल्क के सहयोग से बना।
- जजिया की समाप्ती।
- उर्दू भाषा को प्रभावी संरक्षण व लोकप्रिय बनाया।
- फूलबालों की सैर नामक महोत्सव शुरू किया जो आज भी जारी है।

शाह आलम द्वितीय (1759-06)

- इसके शासनकाल में 1803 मे अंगेजों ने पहली बार लार्ड लेक के नेतृत्व मे लाल किले पर झण्डा फैराया और आफ्टर लोनी ने लाल किले में पहला बिट्रिश टेजीमेन्ट बनाया।

अकबर द्वितीय

- राम मोहन राय को राजा की उपाधी दी।

बहादुर शाह द्वितीय (1837-57)

- जफर उपनाम में शायरी लिखते थे।
- इनके बाद अंग्रेजों ने मुगल सत्ता समाप्त कर अपना प्रत्यक्ष नियंत्रण के बाद इन्हें रंगून (यांगून) निर्वासित कर दिया और इनकी मजार वही स्थापित है।

13. 18वीं शताब्दी में क्षेत्रीय शक्ति

मराठा

- **अष्ट दिग्गज :** विजय नगर (कृष्णदेव राय से) कवियों का समूह
- **अष्ट प्रधान :** मराठा (शिवाजी)

बालाजी विश्वनाथ (1712-19)

- पेशवा पद शिवाजी द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था मे अष्ट प्रधान का प्रधानमंत्री जैसा अधिकारी था। और इसी क्रम में बालाजी विश्वनाथ सातवें पेशवा थे। किन्तु पेशवा को केन्द्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने का श्रेय इन्हें ही दिया जाता है।
- दिल्ली की गद्दी के संघर्ष में इन्होंने सैयद बंधुओं का साथ दिया और साथ ही मुगल शासक से मराठो को अधिक अधिकार दिलाया और शाहू (शिवाजी की पौत) के मुगलों की कैद से छुड़वाया।
- यह औरंगजेब के मकबरे तक नंगे पैर गया।

वाजीराव प्रथम (1720-40)

- मराठा संघ का वास्तविक संस्थापक वाजीराव प्रथम
- मस्तानी वाई युवती से सम्बध
- हिन्दूपदपादशाही के आदर्श का प्रचार जिसके तहत हिन्दू शासकों को एकजुट करने का प्रयास किया गया।
- शिवाजी के बाद गुरिल्ला युद्ध में सर्वाधिक कुशल।

नोट : महाराणा प्रताप जनक है, शिवाजी ने अच्छी तरह प्रयोग तथा वाजीराव ने पूर्णत्तः सर्वाधिक कुशल।

बालाजी वाजीराव (1740-61)

- नाना साहब के नाम से लोकप्रिय।
- 1750 मे संखौला की संधि से पेशवा वास्तविक व संवैधानिक दोनों शक्तियां बना (उसे मराठो की संवैधानिक क्रांति कहते है)
- अपनी राजधानी सतारा से पूना ले आया।
- मराठा शक्ति का चर्म और हिन्दूपक्षपादशाही का उल्लंघन
- दिल्ली की राजनीत्ति में हस्तक्षेप और यहाँ तक कि पंजाब से अहमद शाह अब्दाली के प्रतिनिधि को हटाकर अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया। और यही 1761 पानीपत के त्रितीय युद्ध का कारण बना।
- पानीपत्त त्रितीय युद्ध में मराठा सेना का प्रतिनिधित्व सदाशिव राव कर रहा था और तोप का संचालन ''इब्राहिम गार्दी'' कर रहा था। इस युद्ध में अफगानों ने मराठों को शिशक्त दी और अत्याधिक संख्या मे मराठे मारे गये।
- ''अभी तक यह माना जा रहा था कि मुगलो के उत्तराधिकारी मराठे ही होगे किन्तु उस युद्ध ने यह निर्णय कर दिया कि अब भारत पर शासन कौन नही करेगा''
- मराठे जहाँ अकेले लड़ रहे थे तो वही अब्दाली का साथ कई मुस्लिम शक्तिया (भारतीय) दे रही थी।

विशेष :

- पानीपत त्रितीय के बाद मराठे पेशवा माधवराव के नेतृत्व में पुन: उठ खड़े हुए। यहाँ तक कि हैदर अली जैसे सेनापत्ति को भी शिशक्त किन्तु उसकी आकस्मिक मृत्यु के बाद नारायण पेशवा बना जिसकी सम्भवत: रघुनाथ राव ने हत्या कर दी और खुद पेशवा बनना चाहा। किन्तु बाराभाई परिषद के दो महत्व पूर्ण सरदार नाना फड़नवीस (घोड़े पर चढ़ना नही) जानते थे व महादजी ने माधवराव नारायण राव को पेशवा घोषित कर दिया। असंतुष्ट होकर रघुनाथ राव अंग्रेजो के पास चला गया और 1775 में उनसे सूरत की संधि की और यही प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82) का कारण बना। जो महादजी सिंधिया के प्रयासों से सालिवाई की संधि से रोगा गया।

बाजीराव द्वितीय :

- इसके समय तक महादजी सिंधिया अति शक्तिशाली बनकर उभर चुका था और यहां तक कि उसने फगौडे मुगल शासक को गद्दी पर बैठाया।
- शक्ति संघर्ष मे सिंधिया व होल्कर पेशवा पर अपनी पकड़ बनाना चाहते थे। जिसमे पेशवा सिंधिया के साथ आया। जब होल्कर ने इनकी संयुक्त सेना को हरा दिया तो उसने अंगेजों के साथ 1802 में बसीन की संधि कर ली और अंग्रेजी प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया और द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-06) का कारण बना।

सहायक संधि का क्रम मराठों में :

- पेशवा > भोंसले > सिंधिया > होल्कर।
- ''कहा जाता है कि होल्कर ने सहायक संधि नही स्वीकारी''।

तृित्तीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-18):

- इस युद्ध की शुरूआत्त अंगेजों ने पिण्डारियों के दमन को लेकर की थी। वस्तुत: प्रारम्भ में पिण्डारी मराठा सेना में अवैधानिक सैनिक की तरह थे। युद्ध में विजयी होने के बाद वे लूटपाट करते थे।

नोट- विशेष :

- 1700-1707 का दौर मराठा स्वतंत्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है जिसमे राजाराम की पत्नी ताराबाई विशेष नेत्तृत्व कर्त्ता के रूप में उभरी।

जाट साम्राज्य

- औरंगजेब के खिलाफ जाट विद्रोहियों ने लोकप्रियता हासिल की जो वास्तव में धार्मिक विद्रोह न होकर कृषक विद्रोह था। राजाराम ने अकबर के मकबरे को लूटा।

  भरतपुर राज्य की स्थापना चूढ़ामन, वदन सिंह ने की। (राजधानी ढोग, जाटो का अफलातून राजा सूरज मल को कहा जाता है।

सवाई राजा जय सिंह :

- जयपुर नगर की स्थापना और वह भी आधुनिक नियोजन के अनुसार
- विधवा विवाह का सर्मथन और सामाजिक कुरूतियों का विरोध
- खगोल खास्त्री जिसमे नक्षत्रों व ग्रहों की स्थित के लिए जंतर-मंतर की स्थापना की जो निम्न स्थानों पर बनाये गये।
  1. दिल्ली
  2. जयपुर
  3. मथुरा
  4. उज्जैन
  5. बनारस।
- इसने एक खगोल सारणी भी बनाई जिसमें मुगल शासक के सम्मान में जिच मोहम्मद शाही नाम दिया। (मुहम्मद शाह रंगीला)
- युक्लिड की रचना रेखागणित के तत्व का संस्कृत मे अनुवाद किया तथा अन्तिम हिन्दू राजा जिसने अश्वमेघ यज्ञ किया।

राजा रवि वर्मा

- त्रवड़कोर का शासक
- बहुआयामी व्यक्तित्व का स्वामी कवि चित्रकार, साहित्यकार, नाटक आदि इसी लिए इन्हें भारत का लिनयाड़ो दा विन्शी कहा जाता है।

हैदराबाद :

- 1724 में चिनाकिलिच खां या निजामुल्क ने स्वायत्त राज्य की स्थापना की।
- स्वतंत्रता प्राप्त के समय निजाम उसमान अली था। जिसने भारत विलय का विरोध किया और इत्तिहाबाद उल मुस्लमिमी नामक सेना का गठन किया।

कर्नाटक :

- 1722 में शाहदुल्ला खां द्वारा स्वायत्त राज्य की स्थापना।

पंजाब

- गुरूनानाक जी द्वारा सिख धर्म की स्थापना के बाद पंजाब को स्वत्तंत्र सिख राज्य के रूप में स्थापित्त करने का श्रेय महाराजा रणजीत सिंह को दिया जाता है।
- सिख पहले 12 मिसलो में विभाजित थे जिसमें रणजीत सिंह सुकरचकिया मिसल से थे।
- अफगान शासक जमानशाह की तोपे वापस करने के बाद रणजीत सिंह की राजनैतिक महत्वकांक्षा व साम्राज्य निर्माण की बात शुरू होती है।
- रणजीत सिंह ने सबसे पहले लाहौर को जीता फिर क्रमश अमृत्तसर सुल्तान, पेशावर, कश्मीर को जीता और अपने साम्राज्य की राजधानी लाहौर को बनाया।
- उनके मंत्रि मण्डल में दीनानाथ और अजिजुद्दीन महत्वपूर्ण अधिकारी थे।
- विक्टर जाक्या नामक इतिहासकार उन्हें भारत का नेपोलियन कहा। भारत का नेपोलियम समुद्रगुप्त।

Note : भारत का शैक्सपीयर : कालिदास

- 1809 में अंग्रेजो के साथ इन्होंने अमृत्तसर की संधि की। जो एक प्रकार से अंग्रेजों की श्रेष्ठता स्वीकारने जैसा था।
- दो युद्धों के बाद ब्रिटिश समराज्य में विलय कर लिया

14. यूरोपियों का आगमन

- भारत में यूरोपियों के आगमन के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगाली, तत्पश्चात क्रमशः डच, ब्रिटिश तथा सबसे अन्त में फ्रासीसी आये। इन यूरोपियों व्यापारिक कम्पनीयों के मूल नाम इस प्रकार है।

1. **पुर्तगाली** : एस्तार्दो द इंड़िया (1498 ई)।
2. **डच कम्पनी** : वेरिगदे ओस्त इंडिये कम्पनी (1602 ई.)।
3. **विट्रिश कम्पनी** : मर्चेन्ट आंफ एडवेचरर्स गर्वनर एण्ड कम्पनी आंफ मर्चेन्ट आंफ लंदन ट्रेडिग इन टू द ईस्ट इन्डीज (31 Dec 1600ई.)।
4. **फ्रासीसी कम्पनी** : कैम्पेग्ने डेस इंडेश ओरिएटल्स (1664 ई.)।

- नये मार्गों की खोज की दशा में सर्वप्रथम प्रयास पुर्तगाल के शासक डाँन हैनरी II ने शुरू किये (इसे हेनरी द निविगेटर के नाम से भी जाना जाता है।)
- जांन हैनरी ने सर्व प्रथम 1487 में ''बार्थो लोमियों डियोज'' को 1487 ई. में पूर्वी देशों के लिए नये मार्गों की खोज में भेजा। डियाज अफ्रीक महाद्वीप के दक्षिणतम विन्दु तक पहुंचा और उसने इस जगह को तूफानी अन्तरिम (Cape of Storm) बाद में डॉन हेनरी ने इस जगह को एक नया नाम दिया (cape of good hope) उत्तम आशा अन्तरिम।
- 1492 में स्पेन की महारानी ईशावेला ने कोलम्बस को पूर्वी देशों की खोज के लिए भेजा। भारत की खोज में भटक कर कोलम्बस 1494 में एक नयी दुनिया में जा पहुंचा उसने इस नये भू-भाग को एशिया महाद्वीप का हिस्सा वताया तथा यहां के निवासियों को इन्डियन कहा।
- 1499 ई. में इटली के एक व्यापारी अमेरिगो वेस्प्यूची ने बताया कि कोलम्बबस द्वारा खोजी गई यह नई दुनियां (एशिया महाद्वीप का हिस्सा नही हैं) अतः उसी के नाम पर इस महाद्वीप का नाम अमेरिका रख दिया।
- 1519 में सर्वप्रथम एक पुर्वगाली नाविक मैग्लेन ने सर्व प्रथम पूरी पृथ्वी की परिक्रमा की और बताया कि पृथ्वी गोल हैं।

पुर्तगालियों का आगमन : वास्कोडिगामा प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था जो अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर लगाते हुए Cope of good Hope को पार करते हुए 90 दिन की यात्रा के बाद 17 मई 1498 को एक गुजराती पथ प्रदर्शन अब्दुल मनीक का पीछा करते हुए कालीकट वन्दरगाह पर पहुंचा यंहा के शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया यहां पर कुछ महीने रहकर वास्कोडिगामा ढेर सारी जड़ी बूटिया और मसाले लेकर वापस पुर्तगाल लौटा यह सामान वास्कोडिगामा की यात्रा के कुल खर्च को निकाल कर 60 गुना ज्यादा दामोपर बिका और अधिक मुनाफा कमाया। जिससे अन्य पुर्त गाली व्यापारियों को भी प्रोत्साहन मिला।

- पुर्तगालियों की इस यात्रा का अरब व्यापारियों ने विरोध किया जिसमें कोरोण्डल के चेट्टिया समुदाय के ''चूलिया मुसलमान सर्व प्रथम थे और यही से अरब व्यापारियों एवं पुर्वगालियों के बीच खराब सम्बन्धों की शुरूआत होती हैं।
- 9 मार्च 1500 ई.वी. में दूसरा पुर्तगाली नाविक पेडो अलबरेज क्रेबॉल भारत आया। वह अपने साथ तोपे बन्दूक एवं वारूद भी लाया। और उसने अरब व्यापारियों को मार सफाया कर दिया।
- यह विशेष महत्वपूर्ण तथ्य हैं कि भारत में बारूद बन्दूके तोपे का श्रेय पुर्तगालियों को हैं जब कि युद्ध में तोपो एवं बारूद का सर्व प्रथम व्यापक पैमाने पर प्रयोग बाबर ने पानीपत के युद्ध (21 अप्रेल 1526) इब्राहिम लोदी के विरूद किया।
- 1502 में बास्कोडिगामा पुन : भारत आया एवंम 1503 ई. वी. में भारत में कोचीन (केरल में) पहली पुर्तगाली व्यापारिक कोठी की स्थापना हुई तत्पश्चात 1505 में कन्नानोर में दूसरी कोठी की स्थापना हुई।

फ्रास्सिको डी अलमिड़ा (1505 से 1509) :

भारत में पहला पुतगाली गर्वनर फ्रास्सिको डी अलमिड़ा था जो अपने-तले पानी की नीति (ब्लू वाटर पोलिशी) के लिए जाना जाता था। वस्तुतः नीले पानी की नीति समुन्द्र पर अपना सैन्य प्रभुत्व बनाये रखने से सम्बन्धित हैं। अलमिड़ा पहला पुर्तगाली था जिसने भारतीयों की नौ सैनिक कमजोरी को पहचाना।

अलफांसों-डी-अलवुकर्क- (1509 से 1515) :

भारत में दूसरा पुर्तगाली वायसराय अलफासों-डी-अलवुकर्क था जो भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का संस्थापक था। अलबुकर्क ने 1510 में बीजापुर के सुल्तान यूसुफ आदिल शाह से गोआ छीन लिया। अलवुकर्क ने भारतीयों की पुर्तगालियों को भारतीय सेना में भर्ती होना शुरू किया और दूसरी और उसने पुर्तगालियों पुरूषों को भारतीय महिलाओं से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया 1515 में अलवुकर्क की मृत्यु हो गयी। उसे गोवा में दफनाया गया।

भारत की प्रथम कैथोलिक चर्च गोवा में बनी हैं जहां पर अलवुकर्क को दफनाया गया।

- अगले क्रम में भारत आने वाले पुर्तगाली गर्वनर के रूप में नीनो द कुन्हे (1529-38) का उल्लेख मिलता है। मुगल दरबार में आया था। कुन्हे का उल्लेख बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी अनबर के नाम से दिया है। नीनो द कुन्हें ने हुंमायू का एक भंयकर जहरीला फौड़ा ठीक किया है।
- नीनो द कुन्हें ने 1530 में कोचीन के स्थापन पर गोवा को भारत में पुर्तगाली सामाज्य की राजधानी को घोषित किया।
- कुन्हे के समय ही मद्रास के निकट सैनयोमे, बंगाल में हुगली, चढगांव आदि स्थानों पर पुर्तगालीय कोठिया स्थापित हुई बाद में पुर्तगालियों ने मलक्का, आम्बोयाना (इण्डोनेशिया, सीलोन (श्री लंका) आदि स्थानों पर भी अपनी फैक्टरीया स्थापित की।
- 1572 ई. में अकबर की गुजरात विजय के समय अकबर की मुलाकात पुर्तगाली गर्वनर एण्टोनियों केब्रांल से हुई। जिसके साथ अकबर ने हज यात्रियों की सुरक्षा के सम्बन्ध में एक सन्धि की
- 1575 में अकबर के दरवार में आने वाला जेसुइटमिशन फतेहपुर सीकरी में आया इस मिशन में मुख्यत: तीन लोग शामिल थे
  - (i) रूडोल्फ एक्वानिवा
  - (ii) एथोनी मासीरेट
  - (iii) फ्रांसिस हेनरी क्वेज शामिल थे।
- फ्रासिस हेनरी क्वेज दिभाषीया था
- ऐन्थोनी ने अकबर को ईसाई धर्म की मूलभूत वातो से परिचित करवाया तथा मांसीरेट ने ही अकबर के काल का एक प्रभाणित इतिहासिक वृतांत किया। अकबर ने अपने पुत्र मुराद का शिक्षक नियुक्त किया ताकि मुराद पुर्तगाली भाषा सिखा सके।
- पुर्तगाली ही भारत में आलू तम्बाकू लाये।
- तम्बाकू की खेती पर जहांगीर ने प्रतिबन्ध लगाया।

डचो का आगमन :

भारत में आने वाला पहला डच यात्री हयूगो वांन लिसातन (1583-89) में गोवा में आया। भारत की समृद्धि के विषय में होलेन्ड़ लौटकर एक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक 1595 में प्रकाशित हुई जिसने भारत की समृद्धि के सन्दर्भ में पूरे यूरोप में सनसनी फैला दी। इसी पुस्तक में लिसातन ने भारत को golden Bird कहा।

- लिसातन की पुस्तक से उत्साहित होकर डचों की पूर्वी देशों की और व्यक्तिगत यात्रा शुरू हुई।

  पहला डच व्यापारी कार्नोलियन हाडटमैन (1595-96) सुमात्रा पहुंचा।

  भारत आगमन के क्रम में डचो की पहली व्यापारिक कोठी 1605 में मछलीपट्टनम (मसूली पत्तनत (आन्ध्र प्रदेश)) में डच नौसेना नायक "वॉन डेर हेग" ने बनायी।
- अगली डच कोठी 1610 में पूलीकर (मद्रास) में स्थापित हुई
- अगली डच कोठी 1617 में सूरत में वॉन रवेस्तेयन ने बनायी। सूरत सबसे अधिक लाभ कमाने वाला व्यापारिक केन्द्र था।
- पूर्वी भारत के सन्दर्भ में डचो की पहली व्यापारिक कोठी 1627 ई.में बगाल में पिपली में स्थापित हुई। इसके तुरन्त बाद बालासोर (उड़ीसा) तत्पश्चात नागपत्तनम (तमिलनाडु) में डच व्यापारिक कोठिया स्थापित हुई परन्तु बंगाल में डचो का सुचार रूप से कार्य 1653 में स्थापित हुआ। जब 1653 में हुगली क निकट चिनसुरा में अगली डच कोठी 'गुस्तावुल फोर्ट" का निर्माण हुआ 1663 में डचो ने पुर्तगालियों को प्रभाव हीन करते हुए कोचीन में भी अपनी महत्वपूर्ण व्यापारिक कोठी स्थापित की।

डच व्यापार का स्वरूप :

व्यापारिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए डचो ने अपनी फैक्टरीयां भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया दोनो जगह स्थापित की। चूकि दक्षिण पूर्वी एशिया में भारतीय वस्तों एवंनील की अत्यधिक मांग थी। अत: डचो ने भारत से सूती वस्त्र प्राप्त करके तथा उनके बदले दक्षिण पूर्व एशियाई द्वीपो से मसाले प्राप्त करके उनका निर्यात करके लाभ कमाया। इस प्रकार भारतीय सूत्री वस्तों को निर्यात की प्रमुख मद बनाने का श्रेय डचो को है। साथ ही साथ डचो की मुख्य रूचि इण्डोनेशिया जॉवा सुमात्रा द्वीपो में थी क्यों कि यूरोप में मसालो की वहुत मांग थी।

Curtel Systam :

यह प्रणाली वस्तुत: बुनकरो के शोषण पर आधारित व्यवस्था थी। जिसके तहत डच व्यापारी, भारतीय वस्तो को प्राप्त करने के लिए' भारतीय मध्यस्थ व्यापारियों से सम्पर्क करते थे और उन्हें एक मुक्त अग्रिम रकम का भुगतान कर देते थे। यह मध्यस्थ व्यापारी मनमाने तरीके से बुनकरो पर अत्याचार करके उन पर बहुत कम दामो पर वस्त्र तैयार करवाते थे। इस प्रकार डचो एवं भारतीय मध्यस्थ व्यापारियो के आपस में मिलकर बुनकर के

शोषण पर आधारित इस व्यवस्था को Curtel System के नाम से जाना गया।

इसके अतरिक्त डचो ने सूती एवंम रेशमी वस्तों को प्राप्त करने के लिए सीधे बुनकरो से सम्पक किया। डचो ने स्वंयम काशिमवाजार में 30 हजार बुनकरो की सहायता से 1650 ई. एक रेशम चक्रीय उद्योग (कारखाना) लगाया तथा बुनकरो को वेतन के आधार पर नियुक्त प्रदान की गयी इस प्रकार भारत में पहली बार औद्योगिक वेतन भोगी नियुक्त किऐ गये। डचो ने भारत से सूती वस्त्र, नील कच्चा, रेशम, शोरा एवम अफीम का निर्यात किया।

भारत में अग्रेजो का आगमन :

31 दिसम्बर 1600 में इग्लैण्ड की महारानी एलिजावेथ ने कुछ ब्रिटिश व्यापारीयो के सम्मिलित कोष की एक कम्पनी बनायी और उसे पूर्वी देशों के साथ 15 वर्षों के लिए एकाधिकार सोपा। उस कम्पनी का प्रारम्भिक नाम था मर्चेन्ट ऑफ एडवर्स जो बाद में The गर्वनर एन्ड कम्पनी ऑफ मर्चेन्ट ऑफ लदन ट्रेडिग इन दू ईस्ट कर दिया गया।

1603 में एलिजावेथ की मृत्यु हो गयी। उनका उत्तराधिकारी जेम्स प्रथम हुआ।

- 1603 में केप्टन होकिंस, ब्रिट्रेन के शासक जेम्स का अकबर के नाम फारसी में लिखा पत्र FRIEND लिखा पत्र लेकर HECTOR नामक जहाज से सूरत वन्दरगाह पर आया उसक साथ थॉमस कोर्यात, केप्टन वेस्ट आये।
- केप्टन हॉकिस तुर्की एवं फारसी भाषाओं का अच्छा जानकार था। हॉकिंस ने जहांगीर से फारसी भाषा में बात की जहांगीर ने हॉकिस को 400 का मनसव एवं इग्लिश खान की उपाधि प्रदान की। हॉकिन्स ने भारत के बारे में लिखा कि भारत में चांदी आती ही आती है जाती कभी नहीं लेकिन केप्टन हॉकिंस जहांगीर से किसी भी प्रकार की व्यापारिक सुविधाये प्राप्त कर पाने में असफल रहा।
- यद्यपि 1608 में केप्टन वैस्ट निकोलस विधिंगटन ने सूरत में भारत की पहली विट्रिश व्यापारिक काठी की स्थापना कर दी थी जबकि 1613 में जहांगीर द्वारा सूरत में अग्रेजो को स्थायी रूप से वसने की राजक्षा तथा कुछ व्यापारिक सुविध ाये प्राप्त हुई।
- जहांगीर के दरबार में आने वाले अगले ब्रिटिश प्रतिनिधियों में पॉल कैनिग 1612 विलियम एडवर्ड 1613-15 में आये।
- जहांगीर के दरबार में आने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक मिशन 18 सितम्बर 1615 को सर थोमसरो के नेतृत्व में सूरत पहुंचा। थॉमसरो, जेम्स प्रथमक पत्र Perfect लेकिर 10 जनवरी 1616 को जहांगीर के दरबार आगरा में पहुचां थोमस को जहांगीर से कुछ व्यापारिक सुविधाये पाने में सफल रहा। तथा जहांगीर के साथ दक्षिण भारत के भ्रमण पर भी गया।
- थॉमस को 10 जनवरी 1616 से 17 फरवरी 1619 तक मुगल दरवार में रहा लगभग 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन रहा।

अग्रेजो की व्यापारिक कोठियों के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण विवरण :

- 1608 सूरत भारत में अग्रेजो की प्रथम व्यापारिक कोठे केप्टन वेस्ट ने बनायी।
- भारत में दूसरी ब्रिटिश कोठी 1611 में मछली पट्नम में पुरी में कोठी (दक्षिण भारत में पहली व्यापारिक कोठी परन्तु जज्दी ही दक्षिण भारत में विट्रिश व्यापारिक गवविधियो का केन्द्र मद्रास हो गया जिसे FRANCIS DEY ने चन्द्रगिर के राजा से पट्टे पर लिया था। मद्रास में FORT SAINT GEORGE की स्थापना हुई।
- मद्रास का संस्थापक FANICIS DEY था
- 1633 में भारत में तीसरी विट्रिश कोठी की स्थापना उड़ीसा में हुई (पूर्वी भारत के सन्दर्भ में प्रथम कोठी।
- 1651 अगली विट्रिश कोठी की स्थापना बंगाल हुगली में व्रिज मैन ने की''
- 1661 में स्पेन ने इग्लैण्ड के शाशक चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने पर उसे बम्बई दहेज में दे दिया। और चार्ल्स द्वितीय ने मात्र 10 पोंड वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कम्पनी को सोप दिया।
- 1698 में जाब चार्नाक ने बंगाल के सूवेदार अजीमुरशान से 1200 रु में सुतीनाता कालिकाता एवम गोविन्दपुरी की जमींदारी प्राप्त की और यहां पर एक विट्रिश कोठी FORT Willem की स्थापना हुई। Fort wiliem का Sir चार्ल्स आयर हुआ।
- 1717 में मुगल बादशाह फर्रूखसियर के दरबार में एक ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल आया। जिसमें मुख्यत: तीन लोग शामिल थे

1. नेतृत्व करता जॉन सरमन
2. डा. हैमिल्टन
3. द्विभाषीया ख्वाजा सेर्दूद

- डा. हैमिल्टन ने फर्रूखासियर की एक गंभीर बीमारी ठीक कर दी। अत: फर्रूखासियर ने प्रसन्न होकर एक फरमान जारी किया जिसके तहत:

1. रूपये 3000 वार्षिक भुगतान के बदले ईस्ट इण्डिया कम्पनी को समस्त भारतीय बन्दरगाहों से कर मुक्त व्यापार प्रदान हो गया।
2. अग्रेजों के कलकत्ता के आस-पास जमीन लेने एवं स्थायी रूप से बसने की अनुमति मिल गई।
3. ईस्ट इन्डिया कम्पनी को अपने सिक्के ढालने एवं उन्है चलाने की अनुमति भी प्रदान हो गयी।

- इतिहासकार ओर्म ने इसे Magnacurata of Compeny (कम्पनी विशेष अधिकार पत्र अथवा सुनहरा परमान कहा है।

भारत में फ्रांसीसियो का आगमन :

फ्रांसीसी ईस्ट इंन्डिया कम्पनी जिस का मूल नाम कैम्पेग्ने डेस इंडेस ओरिएटलस था की स्थापना 1664 में फ्रांस के शाशक लुई 14वां के एक प्रधानमंत्री कोल्वर्ट के व्यक्ति गत प्रयासो से हुई। भारत के सन्दर्भ में पहली, फ्रांसीसी कोठी की स्थापना 1668 में सूरत में फ्रैंक कैरो ने की।

- भारत में दूसरी फ्रासीसी कोठी की स्थापना 1669 में मछलीपट्नम में मैर्कारा ने की (द. भारत के सन्दर्भ में पहली फ्रांसीसी कोठी थी)।
- अगली फ्रांसीसी कोठी की स्थापना 1673 में पांडिचेरी में फ्रैको मार्टिन ने की और उसी को पांडिचेरी का जन्मदाता कहते है
- अगली कोठी बंगाल में चंन्दनगर में (1674) में बनी।

15. बंगाल में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना

बंगाल के स्वतंत्र राज्य की स्थापना मुर्शीद कुल खाँ (177-27) में की थी। उसके बाद क्रमशः शुजाउद्दीन (1727-40) तत्पश्चात् सरफराज खाँ (1740-41) में बंगाल के नबाब बने। सरफराज खाँ को 1741 में गिरीया के युद्ध में मारकर नायक सूबेदार अली वर्दी खाँ ने बंगाल की नबावी पर कब्जा कर लिया। अली वदी खाँ (1741-56) तक नबाव रहा।

- चूंकि अली वर्दी खांन का कोई पुत्र नहीं था उसकी केवल तीन बेटिया थी। बड़ी लड़की घसीटी बेगम का पत्नी ढाका का नबाब था। दूसरी बेटी का पति पूर्णिया का नबाव था जिसका बेटा का नाम शौकत जंग अली वर्दी खाँ ने अपनी सबसे छोटी बेटी के पुत्र सिराजुद्दौला को नबाव घोषित किया।

इधर 1756 में ब्रिटेन में सप्तवर्षी युद्ध की शुरूआत हुई फलतः भारत में आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष प्रारम्भ हो गया अब कलकत्ता में स्थित ब्रिटिश कोठी "फोर्ट विलियम" के गर्वनर कैप्टन डेक ने सुरक्षात्मक कार्यो से फोर्ट विलियम की घेरा बन्दी कर ली। जिससे सिराजुददौला क्रुध हुआ। और उसने डेक को घेरा वन्दी हटाने का आदेश दिया और उसने ड्रेक के इन्कार करने पर 20 जून 1756 को सिराजुददौला ने फोर्ट विलियम पर आक्रमण करके उस पर कब्जा कर लिया तत्पश्चात् सिराजुद्दौला ने कलकत्ते के शासक अपने विश्वसनीय अधिकारी मानिक चन्द्र को सौंपा स्वयं अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद लौट गया। इसी दिन फोर्ट विलयम में एक दुर्भाग्य पूर्ण (काल कोठी की घटना) घटी जिसके तहत 18×14×10 फीट के एक कमरे में 146 अंग्रेजों को बन्द कर दिया जिससे अधिकांश लोग दम घुटने से मर गये केवल 23 लोग जीवित बचे। जीवित लोगों में हाल वैल भी था। जिसने इस घटना का अपनी पुस्तक इलाइव द वंडर में दिया। वस्तुतः विलेक हाँल की घटना में कोई भी सच्चाई नहीं थी। यह मनगणत रूप से नबाव को बदनाम करने की कोशिश थी। इतने छोटे कमरे में इतने लोगों को बन्द नहीं किया जा सकता। थोड़ी देर के लिए काल कोठी के सत्य मान लिया जाए तो नबाव की कोई भी प्रत्यक्ष भूमिका नहीं थी।

- काल कोठी की घटना का समाचार कलकत्ता से मद्रास पहुँचा और वहाँ से क्लाइव के नेतृत्व में थल सेना और वाटसन के नेतृत्व में नौ सेना कलकत्ता पहुँची।
- 2 जनवरी 1757 क्लाइव ने मानिक चन्द्र को रिसवत देकर अपनी ओर मिला लिया। तथा कलकत्ते का शासन आने हाथ में लेकर युद्ध की घोषणा कर दी। लेकिन इस समय भारत पर अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण का खतरा मडँरा रहा था और सिराजुद्दौला उत्तरी भारत की राजनीति में व्यस्त था और उसने क्लाइव से संधि कर ली।

(9 फरवरी 1757 अलीनगर की संधि) क्लाइव बनाम सिराजुद्दौलाः

संधि की शर्त के अनुसार सिराज ने अंग्रेजों को पुराने व्यापारिक अधिकार सौंपे 3 लाख रूपये की छत्र पूर्ति की कलकत्ता की घेरा बंदी की अनुमति प्रदान की।

अगले चरण में क्लाइव का षड़यन्त्रः

चूंकि क्लाइव को नबाव सिराजुद्दौला के अधिकारियों को अपनी ओर मिलाने तथा षड़यन्त्र करने को काफी समय मिल गया। इस क्रम में उसने नबाव के सेनापति मीरजाफर, नबाव के कोषाध्यक्ष रायदुर्लभ, कलकत्ते के अधिकारी मानिक चन्द्र बंगाल के वेंकर फतेहचन्द्र जिसकी उपाधि जगतसेठ थी। तथा इसकी तुलना ब्रिटिश इतिहास कार वर्क ने बैंक आँफ इंग्लैण्ड से की थी। तथा कलकत्ते के व्यापारी अमीनचन्द्र को अपनी ओर मिलाकर नबाव के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

प्लाशी/प्लासी का युद्ध (23 जून 1757): बंगाल नबाव बनाम रार्बट क्लाइव

- बंगाल नबाव सिराजुद्दौला सेनापति मीरजाफर सेना 45000
- रार्वट क्लाइव सेनापति किल पैट्रिक सेना 3200 (1100 ब्रिटिश सैनिक तथा 2100 भारतीय)
- नबाव की ओर से मीरमदान लड़ते हुए मारा गया तथा मोहन लाल घायल हुआ।
- क्लाइव विजयी रहा।
- भागते हुए सिराजुद्दौला की हत्या मीरजाफर के बेटे मीरन ने कर दी।
- वस्तुतः प्लासी का युद्ध एक मात्र छोटी सी सैनिक झड़प थी क्लाइव की विजय, नबाव के अधिकारियों के विश्वासघात का परिणाम थी। क्लाइव ने किसी कुशल सैनिक नेतृत्व का परिचय नही था। इस प्रकार प्लासी के युद्ध का सामरिक प्रभाव नगण्य था। लेकिन हाँ आर्थिक दृष्टि से प्लासी के युद्ध के पश्चात् भारत में वह युग आरम्भ हो गया। जिसमें व्यापार के साथ राज्य विस्तार भी जुड़ गया। भारत में उपनिवेशवाद की नींव पड़ी। प्लासी के युद्ध का विवरण इतिहासकार गुलाम हुसैन ने अपनी पुस्तक सियार-उल-मुत्खैरीन में दिया हैं।

प्लासी के बादः

मीरजाफर (1757-60): सिराजुद्दौला के बाद क्लाइव ने मीरजाफर को बंगाल की नबावी सौंपी। मीरजाफर ने क्लाइव को 2 लाख 34 हजार पांउड व्यक्तिगत रूप में दिये। तथा ईस्ट इंडिया कंपनी के 24 परगने की जगह दी। लेकिन बाद में क्लाइव की बढ़ती हुई माँगों से परेशान होकर मीरजाफर ने डचों से मिलकर अंग्रेजो की विरूद्ध षड्यन्त्र किया परन्तु क्लाइव ने नवम्बर 1759 वेदरा के युद्ध में डचों को अंतिम एवं निर्णायक रूप से पराजित कर दिया।

- मीरजाफर को क्लाइव का सियार/गीदड़/गधा कहा जाता है।
- ब्रिटिश इतिहासकार मॉलेसन ने कहा मीरजाफर सोने से भरी ऐसी थैली है जिसमें जब चाहा हाथ डाला और जितना जहा ले लिया।
- 25 फरवरी 1760 में क्लाइव वापस इंग्लैण्ड चला गया। बंगाल के कार्यालय के रूप में हॉलवैल की नियुक्ति हुई। अगस्त 1760 में इस पद पर वेन्सिटॉर्ट की नियुक्त हुई।

वेन्सिटॉर्ट ने भारत आते ही मीरजाफर के दामाद मीरकासिम से एक गुप्त संधि की जिसे रक्तहीन क्रांति अथवा BLOOD LESS REVOLUTION अगस्त क्रांति कहा गया। संधि के तहत मीरकासिम का बंगाल नबाव बनना तय हुआ। वेन्सिटॉर्ट ने मीरजाफर का महल घेरा लेकिन मीरकासिम ने 15000 हजार रूपये पेन्सिन प्रतिमाह के बदले मीरकासिम के पक्ष में बंगाल की नबावी त्याग दी।

मीरकासिम 1760-1763:

मीरजाफर के बाद बंगाल की गद्दी पर मीरकासिम आसीन हुआ। मीरकासिम ने बंगाल की नबावी के बदले वेन्सिटॉर्ट को 5 लाख 10 हजार नगद तथा हॉलवेल को 2 लाख 10 हजार नगद व्यक्तिगत तौर पर दिये। साथ ही साथ मीरकासिम ने ईस्ट इंडिया कंपनी को वर्दवान, मिदनापुर, चँटगाँव की जमींदारी सौंपी।

मीरकासिम एक योग्य नबाव था। उसने अंग्रेजों के प्रत्यक्ष से बचने के लिए उसने अपनी राजधानी मुर्शीदावाद से मुंगेर (पटना के आस-पास) स्थान्तरित कर दी। तथा उसनी सेना को आधुनिक यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित करने के लिए एक जर्मन सैन्य अधिकारी "वाल्टर रीन हार्ड" की नियुक्त की।

- मीरकासिम ने मुंगेर में बन्दूके एवं तोपो का एक कारखाना भी स्थापित किया तथा उसका अधीक्षक एक फ्रांसीसी सैन्य अधिकारी जनरल व्राँयन को नियुक्त किया।
- चूंकि मीरकासिम एक योग्य नबाव था। और अब तक मुगल सम्राट द्वारा ईष्ट इण्डिया कंपनी के जारी किये कर मुक्त फरमानो (दशतको) का दुरूपयोग बड़ गया था। ईष्ट इण्डिया कंपनी कर्मचारी अपने व्यक्तिगत व्यापार के लिए भी इन दशकों को प्रयोग करते थे। इस प्रकार भारतीय व्यापारियों का अत्यधिक नुकसान होता था। अतः मीरकासिम ने दशतको का दुरूपयोग रोकने के लिए समस्त आंतरिक कर हटा दिये। इस प्रकार अब भारतीय व्यापारी भी अब अंग्रेजों के समान हो गये। लेकिन अंग्रेज अपने लिए विशेषाधिकार चाहते थे। अतः ब्रिटिश सेनापति लिए ने पटना पर आक्रमण कर दिया। अगला घटना क्रम में मेजर एडम्स ने मीरकासिम को छः छोटी-छोटी सेन्य झड़पो में पराजित किया। अब मीरकासिम ने भागकर अवध नबाव शुजाउदौला की शरण ली। जहाँ पर मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय (1759-1806), उत्तराधिकारी संघर्ष के चलते अवध में पहले से ही मौजूद था।
- उधर अंग्रेजो ने बंगाल में मीरजाफर को पुनः नबाव बना दिया जो जुलाई 1763 से फरवरी 1765 तक अपनी मृत्यु पर्यन्त तक इस पद पर आसीन रहा।

बक्सर का युद्ध (23 अक्टूबर 1764):

बंगाल के नबाव मीरकासिम ने भागकर शुजाउदौला की शरण ली तथा उसने एक समझौता किया कि युद्ध के पश्चात् मीरकासिम बिहार को शुजाउदौला को सौंप देगा और विजय के बाद 3 करोड़ रूपया नगद भी देगा। साथ-साथ में सेना के खर्च के लिए 11 लाख रूपया प्रतिमाह शुजाउदौला को देगा।

बक्सर का युद्धः

- बक्सर के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने निर्णायक रूप से अवध नबाव को पराजित किया। मीरकासिम जान बचाकर दिल्ली की ओर भाग गया। जहाँ 1777 में उसकी मृत्यु हो गयी।
- शुजाउदौला एवं शाहआलम द्वितीय ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार बक्सर की विजय ने प्लासी की विजय पर मोहर लगा दी।
- इसी बीच मई 1765 में क्लाइव पुनः बंगाल का गर्वनर बनकर भारत आया। और उससे भारत आते ही बक्सर में पराजित शक्तियों के साथ ब्रिटिश संबंधों को पराजित किया।

12 अगस्त 1765 इलाहाबाद की संधि : इस संधि के तहत मुगल सम्राट शाह आलम ने क्लाइव को (ईस्ट इंडिया कंपनी) बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी सौंप दी (दीवानी अर्थात् करो को वसूली का अधिकार)

- बदले में शाहआलम ने 26 लाख रूपये प्रतिवर्ष पेंशन के बदले अंग्रेजों के कैदी के रूप में इलाहाबाद के किले में रहना स्वीकार किया।
- इसी संधि से ईस्ट इंडिया कंपनी ने शाहआलम से उत्तरी

सरकार के चार जिले (MARS) अर्थात् मुस्तफाबाद नगर (M),एलोर (A), राजमहेन्द्री (R) शिकाकोल (S)भी प्राप्त कर लिये।

- **इतिहास गुलाम हुसैन ने इस संधि में लिखा- "इस संधि को क्रियान्वित करने में उतना भी वक्त नही लगा जितना एक गधा खरीदने में लगता हो।"**
- अगले क्रम में 16 अगस्त 1765 को क्लाइव ने अवध नबाव शुजाउदौला से एक पूरक संधि की जिसे अवध की संधि अथवा फैजाबाद की संधि कहा गया। इस संधि के तहत युद्ध के हरजाने के तौर पर 50 लाख रूपये ईस्ट इंडिया कंपनी को दिये- 25 लाख रूपये तुरंत तथा बाकी 25 लाख रूपये 5 किस्तों में दिये।
- इस रकम की अदायगी के बदले शुजाउदौला को उसका समस्त प्रदेश वापस कर दिया लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने इलाहाबाद और कड़ा के क्षेत्र उससे लेकर शाहआलम को दे दिये।
- उधर फरवरी 1765 में बंगाल नबाव मीरजाफर की मृत्यु हो चुकी थी। अत: 1765 में क्लाइव ने उसके अयोग्य पुत्र नज्मुदौला को बंगाल का नबाव घोषित किया वहाँ उसे 50 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देकर बंगाल के समस्त अधिकार अपने हाथों में केन्द्रित कर लिये। और यही से बंगाल से द्वैध शासन की शुरूआत होती है। द्वैध शासन के एक पंक्ति में परिभाषित करे तो यह एक अधिकार रहित उत्तरदायित्व, तथा उत्तरदायित्व रहित अधिकार था।
- क्लाइव ने नज्मुदौला को नाम मात्र का नबाव बना रहने दिया इस प्रकार अंग्रेजी संरक्षण में रहने वाला बंगाल का पहला नबाव नज्मुदौला था और यही से बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली की शुरूआत होती है।
- तत्पश्चात् सैफुदौला (1766-70) बंगाल का नबाव बना इसके काल में नबाव की पेंशन घटाकर 53 लाख रूपये से 12 लाख रूपये प्रतिवर्ष कर दी गयी।
- बंगाल का अंतिम नबाव मुबारकदौला (1770-75) इसके काल में नबाव की पेंशन घटाकर 10 लाख रूपये कर दी। तथा 1775 वॉरिंग हैस्टिन ने बंगाल की नबावों की समाप्ति की घोषणा कर दी।
- बंगाल के नबावो का क्रम:

1. मुर्शीदकुली खाँ
2. शुजाउद्दीन
3. पुत्र सरफराज खाँ
4. अली वर्दी खाँ की हत्या करके नबाव
5. सिराजुदौला (उसका नाती)
6. मीरजाफर (उसका सेनापति)
7. मीरकासिम (दामाद)
8. मीरजाफर (पुन:)
9. नज्मुदौला (पुत्र)
10. सैफुदौला
11. मुबारकुदौला

द्वैध शासन: क्लाइव ने नज्मुदौला को बंगाल का नाम मात्र का नबाव बनाये रखते हुए 'बंगाल के समस्त दीवानी व निजामत के अधिकार स्वयं अपने हाथों में केन्द्रित कर लिए। दीवानी से हमारा अभिप्राय पूरे प्रांत की मालगुजारी एवं राजस्व पर अधिकार से है तथा निजमत से हमार तात्पर्य संपूर्ण प्रांत की सुरक्षा एवं प्रशासनिक व्यवस्था से है' इस संदर्भ में उपरोक्त प्रावधानों के तहत मुगल सम्राट शाहआलम को 26 लाख प्रतिवर्ष तथा बंगाल नज्मुदौला को 53 लाख प्रतिवर्ष देने के पश्चात् बंगाल के समस्त भूराजस्व ए। मालगुजारी पर ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार हो गया साथ ही साथ प्रशासनिक अधिकार व सुरक्षा भी अंग्रेजों के हाथ में आ गयी।

क्लाइव ने दीवानी का कार्य देखने के लिए कुछ उप दीवान नियुक्त किये: बंगाल के लिए रज्जा खाँ, बिहार के लिए सिताब खाँ, उड़ीसा के लिए राय दुर्लभ तथा इनके माध्यम से अंग्रेजो ने भू राजस्व वसूली का अधिकार सर्वाधिक बोली लगाने वाले ठेकेदारों को सौंप दिया। इस प्रकार प्रतिवर्ष पहले से अधिक बोली लगाये जाते रहने के कारण कंपनी के भू राजस्व में वृद्धि होती चली गयी। ईष्ट इंडिया कंपनी के बिहार, बंगाल, उड़ीसा की दीवानी मिलने से पहले बंगाल का राजस्व 80 लाख रूपये था वही 1766-67 में बड़ाकर यह लगभग 24 लाख रूपये से अधिक हो गया। फलत: कृषको की स्थिति बदतर होती चली गयी। 1770 में भारत का प्रथम मानव जनित अकाल बंगाल में पड़ा। इस अकाल में बंगाल की एक तिहाई आबादी (1 करोड़) मारी गयी। इतिहास कार KM पणिक्कर ने लिखा कि 1765-72 तक बंगाल में लुटेरा राज्य चलता रहा।

- बंगाल में प्रतिक्रिया स्वरूप किसानो ने विद्रोह कर दिया जिसे सन्यासी विद्रोह के नाम से जाना गया। यह विद्रोह 1800 ई. तक चलता रहा इसके प्रमुख नेता थे, मजमूनशाह, मूसा शाह, चिराग अली, भवानी पाठक, दैवी चौदरानी। इस विद्रोह का प्रमुख नारा था ऊँ वन्दे मातरम्।
- संयासी विद्रोह का वर्णन वकिंग चन्द्र चटर्जी ने आनन्दमठ में दिया है। आनन्द मठ को बंगाल राष्ट्र भक्ति में वाइविल कहा जाता है। आनन्द मठ की रचना वकिंम चन्द्र चटर्जी ने

सितम्बर-अक्टूबर 1874 में की थी। हमारा राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् इसी पुस्तक से लिया गया है।

- वन्दे मातरम् की गायन अवधि 65 sec है।
- सर्वप्रथम वन्दे मातरम् को लय बध गाने का का श्रेय यदुनाथ भट्टाचार्य को हैं।
- कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन 1896 में इसे सर्वप्रथम रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया। कांग्रेस के इस अधिवेशन के v è; {k FksN रहीमतउल्ला सयानी थे।
- 7 सितम्बर 1905 काँग्रेस के बनारस अधिवेशन में, जिसकी अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले ने की थी, में वन्देमातरम् को राष्ट्रगति के रूप में स्वीकार किया गया। राष्ट्रपति के शताब्दी समारोह 2005 में आरंभ होकर सितम्बर 2006 में समाप्त हुए।
- वर्तमान सितार वाधक स्वर्गीय गीत पन्नालाल घोष द्वारा वन्दे मातरम् को राग सारग में स्वर वध किया गया है। और वर्तमान में यही गाया जाता है। क्लाइव ने दोहरी प्रशासन व्यवस्था के अतंर्गत प्रशासन के समस्त अधिकार, राजस्व वसूली एवं न्यायिक अधिकार अपने पास रखे। तथा आंतरिक शान्ती व्यवस्था तथा फौजदारी एंव समस्त उत्तरदायित्व नबाव पर छोड़ रखे। इस प्रकार क्लाइव ने प्रशासन का अधि कार तो ले लिया। लेकिन उत्तरदायित्व स्वीकार नहीं किया।

अर्थात् दोहरे प्रशासन को एक पंक्ति में इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है "उत्तरादायित्व रहित अधिकार एवं अधि कार रहित उत्तरदायित्व" दोहरी प्रशासन को बनाये रखने एवं नबाव की नाममात्र की सत्ता बनाये रखने के निम्न कारण थे।

1. यदि ईस्ट इंडिया कंपनी स्पष्ट रूप से बंगाल की सत्ता अपने हाथ में ले लेती तो उसका वास्तविक स्वरूप सामने आ जाता और समस्त भारतीय राज्य एवं देशी रियासतें अंग्रेजो के विरूद्ध एकजुट हो जाती
2. अन्य यूरोपीय कंपनीय जैसे पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच आदि मालगुजारी एंव चुंगी आदि कर ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रदान न करती। जो उन्हें नबाव के फरमानों के अनुसार प्रदान करने होते थे।
3. ईस्ट इंडिया कंपनी के पास इतने प्रशिक्षित कर्मचारी, व अधिकारी भी नही थे जो बंगाल के शासन का प्रत्यक्ष रूप से भार सभाल पाते। जो अधिकारी थे भी वे भारतीय रीतिरिवाजों, लोकपरंपराओं, कानूनों से अनभिस थे।
4. साथ ही साथ क्लाइव खूब समझता था कि वह बंगाल की सत्ता स्वयं अपने हाथ में ले लेता तो ब्रिट्रेन की संसद कंपनी के कार्यों में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर देती।

16. कर्नाटक का युद्ध

भारत में व्यापारिक प्रभुत्तव के संबंध में अंग्रेजी और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध लड़े गये उन्हें कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है इन युद्धों की पृष्ठभूमि में कुछ अन्य कारण थे। जैसे- समुद्र के स्वामित्व पर एकाधिकार की चेष्टा, व्यापारिक एकाधिक पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयत्न एवं राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के प्रयास शामिल थे। पूर्वी समुद्र तट को कोरोमण्डल कहा गया। इसके पीछे की भूमि को कर्नाटक प्रदेशक नाम से जाना जाता है जिसकी राजधानी अकार्ट थी। कर्नाटक प्रदेश के चार प्रमुख प्रदेशों में मद्रास, पांडुचेरी, वेलोर एवं त्रिचनापल्ली थे। वस्तुत: कर्नाटक, हैदराबाद निजाम, निजामुलमुल्क आसफजाह के अधीन एवं प्रांत था।

कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-1748):

प्रथम कर्नाटक युद्ध के मुख्य कारण बाहरी राजनीतिक गतिविधियों से अनुप्रेरित थे। वस्तुत: 1740 ई. फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के बीच आस्ट्रियाई उत्तराधिकारी युद्ध लड़ा गया अत: भारत में भी फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश कंपनियाँ लड़ पड़ी। पांडुचेरी फ्रांसीसी गर्वनर डूप्ले (1740-54) ने युद्ध को टालने की नाकाम कोशिश की तथा म्रदास के ब्रिटिश गर्वनर मोर्स से बातचीत करके युद्ध को टालने का प्रयास किया लेकिन ब्रिटिश गर्वनर बार्नेट ने कुछ फ्रांसीसी युद्ध पोतो पर कब्जा कर लिया अब डूप्ले ने मॉरीसस के गर्वनर लॉबूर्दने को बुलाया और उसकी सहायता से संपूर्ण दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र पर कब्जा कर लिया तथा मद्रास की भी घेराबन्दी कर ली अत: मद्रास के गर्वनर मोर्स एवं किरानी रार्बट क्टाइव का आत्मसमर्पण।

चूंकि यह लड़ाई कर्नाटक नबाव अनुबरूद्धीन के प्रभाव क्षेत्र में हो रही थी। अत: अनुवरूद्धीन ने डूप्ले को युद्ध बन्द करने तथा मद्रास की घेराबन्दी को हटाने को कहा लेकिन डूप्ले नही माना क्योंकि उसे भारतीय नबाबों की नौ सेना की कमजोरी ज्ञात थी अब अनुवरूद्धीन ने क्रुध होकर महमूद खान के नेतृत्व में 10 हजार सैनिकों का दल सेना डूप्ले के खिलाफ भेजा। जिसे फ्रांसीसी कैप्टन ने मात्र 930 सैनिकों की मदद से परास्त कर दिया।

उधर मॉरीसस गर्वनर लॉबूर्दने ने डूप्ले की अनिच्छा के बावजूद मद्रास के ब्रिटिश गर्वनर मोर्स से एक अच्छी रकम लेकर मद्रास अंग्रेजों को वापस कर दिया और स्वयं मॉरीसस लौट गया।

लेकिन लॉँबूर्दने के वापस जाते ही डूप्ले ने मद्रास पर पुन: कब्जा कर लिया। फ्रांसीसियों से मिली अंग्रेजों की पराजय का बदला लेने के लिए इंग्लैण्ड से एक जहाजी बेड़ा वोस्कावेन के नेतृत्व में भेजा जिसमे भारत पहुँचकर फ्रांसीसी वस्ती पाँडुचेरी को घेरने की कोशिश की लेकिन डूप्ले के भाग्य ने साथ और एक भयंकर तूफान की वजह से वोस्कावेन का समुद्री वेड़ा अस्थव्यस्थ हो गया और पाण्डिचेरी का पतन नहीं हो सका।

अगले क्रम में 1748 में यूरोप में "एक्स-ला-ए शापेल" की संधि से फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के बीच युद्ध समाप्त हो गया तो भारत में फ्रांसीसी और अंग्रेजों के बीच युद्ध की समाप्ती हो गयी संधि के शर्त अनुसार मद्रास पुन: अंग्रेजों को मिल गया तथा फ्रांसीसियों को अमेरिका में लुइसवर्ग प्रान्त मिला इस प्रकार संघर्ष का प्रथम दौर समाप्त हुआ।

कर्नाटक के प्रथम युद्ध के परिणाम के संदर्भ में भारत में किसी भी पक्ष को क्षेत्र संबंधी कोई लाभ नहीं हुआ। भारत में फ्रांसीसी शक्ति की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। तथा युद्धों व सामुद्रिक शक्ति की निर्णायक भूमिका स्पष्ट हुई। तथा भारतीय थल सेना की कमजोरी भी उजागर हो गयी। स्पष्ट संकेत मिला कि एक प्रशिक्षित एवंम अनुशासित सेना एक अप्रशिक्षित बहुत बड़ी सेना को आसानी से पराजित कर सकती है।

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1748-1754):

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध, कर्नाटक एवं हैदराबाद की उत्तराधिकार समस्या से अनुप्रेरित था। हैदराबाद के स्वंतत्र राज्य की स्थापना 1724 निजामुलमुल्क आसफजाह (चिनकिलिचखां) ने की थी।

- अवध राज्य की स्वतंत्रता का संस्थापक 1722 में सआदत खाँ वुर्हानुलमुल्क था।
- बंगाल राज्य की स्वतंत्रता का संस्थापक (1717-27) मुर्शीद कुली खाँ।
- मई 1748 में चिनकिलच खाँ की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र नासिर जंग हुआ जिसे अंग्रेजों का समर्थन प्राप्त था। परन्तु मुगल बादशाह ने चिनकिलच खाँ के नाती मुजफ्फरजंग को दक्षिण भारत का सूबेदार नियुक्त कर दिया अत: नासिर जंग एवं मुजफ्फर जंग की बीच उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। डूप्ले ने मुजफ्फर जंग को सर्मथन दिया और 1750 में एक युद्ध में डूप्ले ने अंग्रेजों को पराजित करके नासिर जंग को हैदराबाद निजाम घोषित कर दिया। मुजफ्फर जंग ने खुश होकर जफर जंग बहादुर की उपाधि 20 लाख रूपये उसे नगद दिये साथ ही साथ उसने डूप्ले को कृष्णा नदी

के दक्षिण के समस्त प्रदेशों का गर्वनर भी नियुक्त कर दिया। मुजफ्फर जंग के यहाँ जर्नल बुसी के नेतृत्व में एक फ्रांसीसी सेना रख दी इस प्रकार डूप्ले ने उस सहायक संधि की उस नीति का सूत्रपाद किया जिसका उपभोग ब्रिटिश गर्वनर वेलजिही ने ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूती प्राप्त की।

- अगले क्रम में कर्नाटक की उत्तराधिकार समस्या ने भी फ्रांसीसियों एवं अंग्रेजों को लड़ने के लिए मजबूर किया वस्तुत: कर्नाटक के नेतृत्व दोस्त अली की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अनुवरूद्धीन एवं दामाद चंदा साहिब के बीच उत्तराधिकार युद्ध छिड़ा। अगस्त 1749 में अम्बूर की लड़ाई में डूप्ले ने अनवरूद्धीन को मारकर चंदा साहिब को कर्नाटक का नबाब घोषित कर दिया। लेकिन अनुवरूद्धीन का बेटा मौहम्मद अली वच निकला और उसने भागकर त्रिचनापल्ली की शरण ली। इधर फ्रांसीसी कमान्डर लां ने बड़ी मजबूती से घेरा रखा था। इसी मद्रास में कर्लक के रूप में मौजूद रार्वट क्लाइव ने सुझाव दिया कि यदि एक ब्रिटिश आर्मी कर्नाटक की राजधानी अर्काट में चंदा साहिब को घेर ले तो निश्चित ही त्रिचलनापल्ली से कुछ सेना अर्काट जरूर जायेगी और क्लाइव का अनुमान पूरी तरह सही निकला। क्लाइव ने मात्र 510 सैनिक की मदद से अर्काट जीत लिया। चंदा साहिब ने आत्मसमर्पण कर दिया। और इधर 1752 में त्रिचलनापल्ली में फ्रांसीसियों की शक्ति बँट जाने के कारण फ्रांसीसी कमाण्डर लाँ को भी ब्रिटिश सेना के समक्ष आत्म समर्पण करना पड़ा। और 1753 के अन्त तक फ्रांसीसी निर्णायक रूप से पराजित हो गये। युद्ध में हुई आर्थिक क्षति एवं फ्रांसीसियों की हार के लिए डूप्ले को दोषी मानते हुए फ्रांसीसी अधिकारियों ने उसे वापस फ्रांस बुला लिया। 1754 में डूप्लें की जगह भारत में नया फ्रांसीसी गर्वनर गोदेहो भारत आया उसने अंग्रेजों से अंग्रेजी शर्तों पर संधि कर ली। तथा मौहम्मद अली कर्नाटक का नबाब स्वीकार कर लिया गया। इस अपमान पूर्ण संधि के लिए डूप्ले ने लिखा। उसने देश के विनाश एवं जाति के अपमान पर हस्ताक्षर कर दिये।

कर्नाटक तृतीय युद्ध (1756-63):

तीसरा कर्नाटक युद्ध भी वाहय कारणों से अनुप्रेरित था वस्तुत: यूरोप में इंग्लैण्ड एवं फ्रांस के बीच सप्तवर्ष युद्ध की शुरूआत में भारत में तमाम अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को अनुप्रेरित किया और ब्रिटिश रार्वट क्लाइव एवं वाटसन ने फ्रांसीसी कोठी चन्द्रनगर पर मार्च 1757 में कब्जा कर लिया।

- फ्रांसीसियों के संदर्भ में भारत में अप्रैल 1757 में काउट द लाली को फ्रांसीसी गर्वनर बनाकर भारत भेजा गया वस्तुत: यही से आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष की शुरूआत हुई। लाली ने अंग्रेजी वस्ती फोर्ट सेंट डेविड को जीत लिया और मद्रास को मजबूती से घेर लिया परन्तु सितम्बर 1759 में ब्रिटिश नौ सेनापति पोकाँक (ब्रिटिश नौ सेनापति वाटसन की मृत्यु के बाद इस पद पोकाँक की नियुक्ति हुई।) ने लाली को असफल कर दिया। अब लाली ने अपनी मदद के लिए हैदराबाद से जनरल बूसी को एवं उसकी सेना को बुला लिया। जिससे हैदराबाद के फ्रांसीसियों की पकड़ कमजोर हो गयी अन्त: 22 जनवरी 1760 को वाड़िवाश के युद्ध में अंग्रेजी सेनापति आयरकूट ने फ्रासीसियों को अंतिम रूप से पराजित किया । बुसी कैद कर लिया तथा लाली ने आत्मसमर्पण कर दिया। अन्तत: 1761 तक क्रमश: पाण्डिचेरी, माही एवं जिन्जी पर भी कब्जा हो गया। 1763 में यूरोप में पेरिस की संधि से सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हो गया अत: भारत में भी ब्रिटिश एवं फ्रांसीसियों के बीच संधि हो गयी यद्यपि इस संधि से पाण्डिचेरी फ्रांसीसियों को वापस मिल गया। लेकिन अब वह इसकी घेराबन्दी नहीं कर सकते थे। इस प्रकार भारत में फ्रांसीसियों की स्थित अब केवल व्यापारियों की तरह रह गयी और भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य का सपना अधूरा रह गया। यद्यपि 1954 तक पाण्डिचेरी में मौजूद रहे।

17. अवध राज्य की स्थापना

- **अवध के नबाव:** अवध के स्वतंत्र राज्य की स्थापना सआदल खाँ ने 1722 में की थी जो कि 1739 तक अवध के नबाव के पद पर प्रतिष्ठित रहा। इसने 1739 में भारत पर नादिरशाह के आक्रमण के समय उसे दिल्ली की ओर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। तथा उसे 20 करोड़ का लालच दिया लेकिन यह धन राशि न मिलने के कारण उसने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। नादिरशाह भारत से शाहजहाँ का प्रिय सिंहासन तख्त-ए-ताऊस अथवा मयूर सिंहासन भी लेता गया। इस मयूर सिंहासन को बनाने वाला कलाकार था वेबादल खाँ शाहजहाँ के काल में आने वाला एक फ्रांसीसी पर्यटक टेवर्नियर था। जिसने इस मयूर सिंहासन की कीमत आँकी और विषद वर्णन किया है।
- अवध के नबावों का क्रम इस प्रकार है:

1. सआदत खान (1722-39)
2. उसका दामाद सफदरजंग (1739-54)
3. पुत्र शुजाउदौला (1754-75)
4. पुत्र आसफउदौला (1775-97)

   असफाउदौला ने 1775 में अवध की राजधानी फैजाबाद से स्थानांरित करके लखनऊ कर दी। इसी ने 1784 में लखनऊ का इमामवाड़ा बनवाया।
5. वजीर अली (1795-98)
6. सआदत अली खाँ (1798-14): इसने 1801 में वेल्जली की सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।
7. हैदरअली खाँ (1814-27)
8. अमजद अली खाँ (1842-217)
9. वाजिद अलीशाह (1847-56): 1856 में ब्रिटिश प्रेजीडेन्ट आउट्रम की रिर्पोट पर कुशासन का आरोप लगाकर लार्ड डलहौजी ने अवध का विलय कर लिया। अवध के विलय को एक महान डकैती कहा गया। वाजिद अलीशाह को 12 लाख रूपये की वार्षिक पेंशन देकर उसे कलकत्ताा निर्वासित कर दिया बाद में 1857 के समय वेगम हजरत महल ने अपने पुत्र विरजिस कद को अवध का नबाव घोषित करके स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। और बाद में भागकर नेपाल चले गये।

- क्लाइव के बाद बंगाल के गर्वनर के रूप में वेरेल्स्ट 1767-69 तत्पश्चात् कर्टियर (1769-72) की नियुक्ति हुई।

वारेन हेस्टिंग्स (1772-85): वारेन हेस्टिंग्स (1772-74) तक बंगाल का गर्वनर रहा।

- वारेन हेस्टिंग्स (1774-85) तक बंगाल का प्रथम गर्वनर जनरल रहा।
- वारेन हेस्टिंग्स ने 1772 में राजकीय कोष मुर्शिदावाद से कलकत्ता स्थानान्तिरत कर दिया।
- वारेन के समय ही रेगुल्टी एक्ट 1773 में पारित हुआ। इसकी प्रमुख बातें इस प्रकार हैं-

1. इसका मुख्य उद्देश्य भारत में स्थित ईस्ट इंडिया कंपनी पर ब्रिटेन सरकार का नियन्त्रण स्थापित करना था अब बंगाल के लिए नियुक्त गर्वनर को समस्त अंग्रेजी क्षेत्रों का गर्वनर जनरल बना दिया। अर्थात् भारत में उपस्थित सभी ब्रिटिश प्रेसीडेसियों में बंगाल प्रेसीडेन्सी को सर्वोच्यता की स्थित प्रदान कर दी। इस प्रकार वारेन हेस्टिंग्स को बंगाल का प्रथम गर्वनर जनरल नियुक्त किया।
2. गर्वनर जनरल की सहायता के लिए चार सदस्यों की एक परिषद् (Council) बनायी जिसमें विचाराधीन मामलों में बहुमत से निर्णय लिए जाने की व्यवस्था थी। मतों की बराबरी के अवसर पर गर्वनर जनरल को निर्णायक मत देने का अधिकार था।
3. गर्वनर जनरल की परिषद के चार सदस्यों के नाम इस प्रकार है।

   (i) वारवैल
   (ii) फ्रासिस
   (iii) क्लेवरिंग
   (iv) माँनसन

   परन्तु क्लेवरिंग की आसामयक मृत्यु हो गयी। अतः इस पद पद एडवर्ड व्हीलर की नियुक्ती हुई।

- 1774 में इसी एक्ट के तहत कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना हुई। इसके प्रथम न्यायाधीश के रूप में एलिजाह इम्पे की नियुक्त हुई। इस कोर्ट के तहत बंगाल बिहार उड़ीसा के क्षेत्र शामिल थे।
- गर्वनर जनरल और उसकी क्राउसिल भारत के लिए कानून बना सकती थी। तथा गर्वनर जनरल अध्यादेश जारी कर सकता था। परन्तु इन्हें लागू करने से पूर्व सुप्रीम कोर्ट की

स्वीकृत आवश्यक थी।

- इस एक्ट के तहत ही भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों के व्यक्तिगत व्यापार को खत्म कर दिया गया।
- वारेन के काल में 1777 में भारत की प्रथम सेना "द फर्स्ट ब्राह्मन" पैदल सेना का गठन किया। यह भारत की प्रथम भारतीय अंग्रेजी सेना थी।
- वारेन के प्रोत्साहन पर 1784 में विलयम जॉन्स ने एशियायी सुसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भारतीय इतिहास, पुरात्तविक कला एवं साहित्य का अध्ययन करना था।
- चार्ल्स विल्किन्सन ने श्री मदभगवत गीता का अंग्रेजी अनुवाद सन् 1785 में किया। वारेन हेस्टिंग्स ने केवल भूमिका (प्रस्तावना) लिखी।
- भारतीय न्यायशास्त की प्राचीनतम पुस्तक मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद N.C. हेलहेक ने "A code of Gento laws" के नाम से किया।
- अभिज्ञान शाकुन्तलम एवं गीत गोविन्द (जयदेव) का अंग्रेजी अनुवाद विलयम जाँन्स ने किया।
- 1778 में वारेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता मदरसा की स्थापना की जहाँ मुसलिम विषयों से संबंधित विषयों एवं कानूनों की शिक्षा दी जाती थी।
- वारेन हेस्टिंग्स के बाद क्रमश: बंगाल के गर्वनर जनरल हुए।

1. लार्ड वेल्जली (1798-1805)
2. पुन: (1805) कॉर्नवालिस की नियुक्ती और मृत्यु
3. सर जॉर्ज वारलो (1805-1807)
4. लॉर्ड मिन्टो (1807-1823)
5. लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823)

चार्टर एक्ट (1813): इस चार्टर एक्ट के तहत भारतीय व्यापार पर ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिकार समाप्त हो गया। परन्तु ईस्ट इंडिया कंपनी का चीन के साथ व्यापारिक एकाधिकार चाय तथा अफीम के व्यापार पर एकाधिकार बना रहा। इस प्रकार सभी ब्रिटिश नागरिकों को व्यापार करने की छूट मिल गयी।

2. इसाई मिश नरियों को भारत में धर्म प्रचार की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान कर दी गयी।
3. भारतीय शिक्षा में सुधार एवं उसके विकास के लिए प्रतिवर्ष 1 लाख रूपये खर्च करने की व्यवस्था की गयी।

चार्टर एक्ट, 1833:

1. ब्रिटिश संसद ने ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को पूर्णत: समाप्त कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी का काम ब्रिटिश सम्राट की ओर से भारत का शासन करना ही रह गया। वस्तुत: यह परिवर्तन बहुत कुछ अनिवार्य भी हो गये थे। क्योंकि लार्ड वेल्जली एवं लार्ड हेस्टिंग्स की विस्तारवादी नीति तथा ब्रिटिश शक्ति को भारत में सर्वोच्चता दिलाने की नीति के कारण कंपनी के राज्य क्षेत्र तथा प्रशासनिक कार्यभारत बहुत बढ़ गये थे।
2. 1833 के अधिनियम ने कंपनी के प्रशासन के केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। और बंगाल के गर्वनर जनरल को भारत के गर्वनर जनरल की उपाधि दी।
3. पहली बार 1833 के अधिनियम के तहत गर्वनर जनरल की सरकार भारत की सरकार कहलायी और उसकी परिषद् ''भारतीय परिषद्'' परिषद सहित गर्वनर जनरल को समूचे ब्रिटिश भारतीय प्रदेशों में कानून बनाने का अधिकार दे दिया गया। अब इन कानूनों को किसी न्यायालय में पंजीकृत करवाने अथवा सुप्रीम कोर्ट से उसकी अज्ञाा लेने की जरूरत नहीं रह गयी।
4. 1833 के चार्टर एक्ट से गर्वनर जनरल की परिषद् के सदस्यों की संख्या तीन से बढ़ाकर चार कर दी गयी। चौथा सदस्य विधि सदस्य (Lower member) कहा गया। लॉ मेयर के रूप में सर्वप्रथम मैकाले की नियुक्त हुई।

- रेगुलेटिक एक्ट (1773) के अनुसार गर्वनर जनरल के सदस्यों की संख्या चार थी-

(i) क्लेरिग
(ii) वॉरवेल
(iii) फ्रांसिस
(iv) मॉनसन।

पिट्स इंडिया एक्ट 1784 के तहत इन सदस्यों की संख्या घटाकर तीन कर दी गयी। तथा पुन: 1833 के एक्ट से बढ़ाकर चार कर दी गयी।

5. मैकाले की अध्यक्षता में भारत के प्रथम विधि आयोग (Indian Law Comision) का गठन हुआ। आयोग ने उस समय भारत में प्रचलित विभिन्न विधियों के यथा संभव संहिताकरण का वर्ग संभाला।
6. 1833 के अधिनियम में सर्वप्रथम कहा गया कि किसी भी व्यक्ति को जन्म जाति, वर्ग, धर्म अथवा जन्म स्थान के आधार पर किसी पद अथवा सेवा से वंचित नहीं किया जायेगा। अर्थात् किसी भी व्यक्ति की योग्यता ही उसकी नियुक्ति का प्रथम आधार होगी। अब भारतीयों को भी राजकीय सेवाओं में यथोचित पद मिलने की आशा बधी।

परन्तु इस अधिनियम की तात्कालिक प्रगति शून्य रही।

(i) वारेन हेस्टिंग्स के बाद बंगाल के गर्वनर के रूप में जॉन मैकफर्सन की नियुक्ति हुई (1785-86) उसका उत्तराधिकारी लॉर्ड कार्न वालिस हुआ।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786-93) : लॉर्ड कार्नवालिस अपने स्थाई बंदोबस्त के नाम से जाना जाता है।

स्थाई बंदोबस्त

स्थाई बंदोबस्त का सर्वप्रथम सुझाव फिलिप फ्रांसिस ने दिया था। वस्तुत फ्रांसिस के सुधारों को लागू करने के लिए कार्नवालिस ने तीन लोगों की समिति बनाई।

1. सर जॉन शोर (राजस्व बोर्ड का प्रधान अधिकारी था।)
2. जेम्स ग्रांट (रिकॉर्ड कीपर था)
3. तीसरा सदस्य स्वयं कार्नवालिस था।

वस्तुत: जेम्स ग्रांट स्थाई बंदोबस्त के संदर्भ में जमींदारों को भू-स्वामित्व सोपने का पक्षधर नहीं था। लेकिन कार्नवालिस ने भू-स्वामित्व जमीदारों को सोंप दिया।

कार्नवालिस ने स्थाई बंदोबस्त के संदर्भ में 1790-91 को आधार वर्ष मानकर कम्पनी की आय 2 करोड़ 68 लाख रूपये प्रति वर्ष निर्धारित कर दी।

1790 में स्थाई बंदोबस्द के केवल 10 वर्षो के लिए लागू किया गया था। परंतु 1793 में इंग्लैण्ड से अनुमति प्रदान हो जाने के बाद उसे पूर्ण रूप से स्थायी कर दिया और यह व्यवस्था 1790 से आजादी के बाद 1954 तक लागू रही।

स्थाई बंदोबस्द बिहार, उड़ीसा बंगाल में ही लागू रहा। अर्थात् ब्रिटिश साम्राज्य की केवल 19% भूमि पर ही लागू रहा।

स्थाई बंदोबस्त के संदर्भ में जमींदार किसानों से लगान वसूल के उसका 10/11 भाग (कहीं-कहीं 8/9 भाग) ईस्ट इंडिया कम्पनी को जमा करेगा तथा जमीदार को कुल वसूले गये लगान का 1/11 भाग (कहीं-कहीं 1/9 भाग) उसे कमीशन के रूप में मिलेगा। इस व्यवस्था से उपरी वर्ग में सामंत वाद पनपा और कृषक वर्ग (निचला वर्ग) में दास्ता पनपी क्योंकि ईस्ट इंडिया कम्पनी का इस बात पर कोई नियंत्रण नहीं था कि जमींदार किसानों से कितनी वसूली करता है और जमींदारों ने किसानों से अधिकाधिक वसूली का प्रयास किया। इस प्रकार स्थाई बंदोबस्त से सर्वाधिक लाभ जमींदारो को हुआ। इतिहासकार 'होम्स' ने लिखा स्थाई बंदोबस्त की व्यवस्था एक दुखद भूल थी।

भारतीय सिविल सेवा

भारत में सिवल सेवा का जन्मदाता लार्ड कार्नवालिस को जाना जाता है उसने भारितीय सिविल सेवा (ICS) के नाम से एक प्रशासनिक सेवा संवर्ग का गठन किया। आरम्भ में इस सेवा के लिए किसी परीक्षा का आयोजन नहीं किया जाता था।

- भारतीय सिविल सेवा के लिए परीक्षा का आयोजन 1853 में डलहौजी के समय ब्रिट्रेन में किया गया।
- 1923 में पहली बार भारतीय सिविलसेवा परीक्षा का आयोजन पहली बार भारत में किया।
- प्रारम्भ में इस परीक्षा की अधिकतम उम्र 23 वर्ष थी लार्ड लिटन ने (1876-80) इसे 1876 में घटाकर 23 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया।
- भारतीय सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले प्रथम भारतीय 1863 में सत्येन्द्र नाथ टैगोर थे। (सत्येन्द्र नाथ के पिता का नाम देवेन्द्र नाथ टैगोर था तथा सत्येन्द्र के छोटे भाई रवीन्द्र नाथ टैगोर थे)
- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी थे जिन्हें जाति भेदभाव के चलते इस सेवा से बर्खास्त कर दिया।
- अरविन्द्र घोष घुड़सवारी की परीक्षा असफल होने के बाद परीक्षा से बाहर हो गये।
- सुभाष चन्द्र बोस ने 1920 में इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने के बावजूद भी इस्तीफा दे दिया था।
- भारतीय सिविल सेवको के प्रशिक्षण के लिए सर्वप्रथम 1800 में लार्ड वेल्जली ने कलकत्ता में फोद्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। किंतु जल्दी ही 1802 में इस कॉलेज को बंद कर दिया और भारतीय सिविल सेवकों का प्रशिक्षण ब्रिटेन के हेलवरी कॉलेज में दिया जाने लगा।
- वर्तमान में भारतीय सिविल सेवकों का प्रशिक्षण मंसूरी में दिया जाता है।
- कार्नवालिस के बाद बंगाल के गर्वनर के रूप में सर जॉन शोर की नियुक्ति हुई। (1793-98) तक।
- 21 अप्रैल को सिविल सिर्विस डे मनाया जाता है।

लॉर्ड वेल्जली (1798-1805)

लॉर्ड वेल्जली सहायक संधि के लिए जाना जाता है। सहायक संधि के संबंध में विवरण इस प्रकार है-

वस्तुत: सहायक संधि का जनक डूप्ले था वेल्जली ने सहायक संधि को मात्र स्पष्ट तौर परिभाषित किया। 'अल्फ्रेड् लॉयल' के अनुसार सहायक संधि के चार चरण थे।

1. सहायक सेना किराये पर देना।
2. अपने मित्रों की सहायतार्थ युद्धों में भाग लेना।
3. मित्रों की रक्षा का भार स्वयं उठा लेना।
4. भारतीय राज्यों में सहायक सेना रख देना।

- सहायक संधि की शर्तें निम्न थी।
- ब्रिटिश रेजीडेन्ट भारतीय दरबार में मौजूद रहेगा।
- संबंधित राज्य की विदेश नीति पर ईस्ट इंडिया कम्पनी का नियंत्रण होगा।
- संबंधित राज्य में यूरोपीय अधिकारियों की नियुक्त में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की अनुमत आवश्यक होगी।
- संबंधित राज्य की रक्षा का भार ईस्ट इंण्डिया कंपनी के कंधों पर होगा।–
  सेना का खर्च संबंधित राज्य को ही करना होगा।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी राज्य के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
- सहायक संधि का महत्व इस बात में था कि अंग्रेजों की सामाजिक सीमा उनकी राजनीतिक सीमा से कही आगे बढ़ गई। इसका दूरगामी लाभ यह हुआ कि युद्धों को कम्पनी के अधिकार क्षेत्र काफी दूर रखा जा सका।
- सहायक संधि स्वीकार करने वाले राज्य–

1. सर्वप्रथम 1798 में हैदराबाद निजाम
2. 1799 में मैसूर
3. 1801 में पेशवा
4. बरार के भोंसले 1803
5. ग्वालियर के सिंधीया 1804 आदि।

18. मैसूर राज्य का उत्थान

हैदर अली का उत्थान एवं टीपू सुल्तान

मैसूर में वाड्यार वंश के शासक कृष्णाराज का शासन था। परंतु सत्ता की वास्तविक शक्ति मैसूर के सेनापति देवराज एवं मैसूर के दीवान नंजाराज के हाथों में थी। 1761 मे हैदर ने इनका वध करके मैसूर की सत्ता संभाली।

- वस्तुत हैदर ने 1761 से 1782 तक शासन किया परंतु उसने बादशाह की उपाधि नहीं ली। उसने वाडयार वंश को जीवित रखा तथा मैसूर के प्रशासनिक तंत्र की सुचार-व्यवस्था के लिए 18 केन्द्रीय विभागों की स्थापना की जिसमें से अधि कांश ब्राह्मण के हाथों में थी। आधुनिक काल में हैदर अली ने मुस्लिम शासक होते हुए भी भगवान शिव एवं पावर्ती एवं भगवान विष्णु के अंकन वाले सिक्के जारी किये।

1. प्राचीन भारत में सर्वप्रथम भगवान शिव व उनके आहृन नन्दी वेल तथा त्रिशूल वाले सिक्के कुषाण शासक विमाक डसिसेस।
2. गौड़ नरेश शंशाक ने भगवान शिव मां पार्वती नन्दी वेल त्रिशूल एवं डमरू वाले सिक्के जारी किये।
3. हर्ष के सिक्कों पर भी भगवान शिव एवं मां पार्वती का अंकन हुआ है।
4. मुगल सम्राट अकबर के सिक्कों पर भगवान श्री राम व सील का अंकन हुआ है।
5. सांची के स्तूप का अंकन सातवाहन शाशक सातकर्णी प्रथम के सिक्कों पर अंकन हुआ है।
6. भगवान बुद्ध का अंकन कषाण शाशक कनिष्क के सिक्को पर हुआ है।
7. प्राचीन भारत में सीसा (Pb) अथवा पोटीन के सिक्के सातवाहन वंश के शासकों ने चलाये।

- मैसूर के संदर्भ में प्रमुख राजनीतिक घटनाओं के रूप में चार आंग्ल मैसूर युद्धों का विवरण इस प्रकार है।

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69)

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध का कारण हैदराबाद निजाम एवं मद्रास प्रेसीडेन्सी की बिटिश सरकार के बीच 1766 में हुई एक संधि थी। जिससे वस्तुत हैदर को विद्रोही मानते हुए उसक मैसूर के अधिकार को चुनौती दी गई थी। तथा हैदराबाद निजाम ने अंग्रेजों को मैसूर की दीवानी के अधिकार सौंप दिये जबकि हैदराबाद निजाम का मैसूर पर कोई नियंत्रण नहीं था। अब अंग्रेज और हैदर के बीच युद्ध की सम्भावना प्रबल हो गई। अब हैदर ने कूटनीति चलते हुए हैदराबाद निजाम और मराठो को अपनी ओर मिला लिया। और अंग्रेजों पर आक्रमण कर दिया। और अंग्रेज पराजित हुए और अंग्रेजों को हैदर से अपमान पूर्ण संधि करनी पड़ी।

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84)

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध क`दौरान चार अप्रैल 1769 को हुई मद्रास की संधि में हैदर की सैनिक सहायता का वचन दिया था। परंतु जब 1771 में मराठो ने हैदर पर आक्रमण किया तो अंग्रेजों ने हैदर की कोई मदद नहीं की।

- ठीक इसी समय यूरोप में फ्रांस एवं इंग्लैण्ड के उपनिवेश के विरूद्ध स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा अत: यहा भारत में भी बिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने फ्रांसीसी बस्तियों पॉडिचेरी महलीपट्टनम एवं माही पर कब्जा कर लिया।
- वस्तुत युद्ध का कारण यह नहीं था कि हैदर फ्रांसीसियों का मित्र था बल्कि माही पर अंग्रेजों का नियंत्रण हैदर के निजी हितों के विरूद्ध था। क्योंकि माही हैदर के प्रभाव क्षेत्र में एक बस्ती थी।
- 1780 में हैदर ने क्रमश: कर्नल वेली तत्पश्चात् ब्रिटिश सेनापति हैक्टर मनरो को पराजित किया।
- इस पराजय के संबंध में अल्फ्रेड लौयल ने लिखा 1780 में अंग्रेजी भाग्य न्यूतम स्थिर पर पहुंच गया था।
- 1781 में केप्टन ऑयरकूट ने हैदर को परास्त किया।
- 1782 में हैदर ने ब्रिटिश कर्नल ब्रेथवेट को पराजित किया।
- 1782 में ही बीमारी से हैदर की मृत्यु हो गई।
- अब हैदर के पुत्र टीपू ने सत्ता संभाली और युद्ध जारी रखा। टीपू ने 1733 में ब्रिगेडियर मैथ्यूज को बन्दी बना लिया। इसी समय बंगाल के नये गर्वनर मैर्काटनी की नियुक्ति हुई। मैर्काटनी ने आते ही 1784 में टीपू से मंग्लौर की संधि कर ली। वस्तत मंगलौर की संधि टीपू की एक कूटनीति सफलता थी। क्योंकि टीपू अंग्रेजों के साथ एक पृथक सन्धि कर सका था और उसने अपने राज्य में कोई महत्वपूर्ण व्यापारिक अधिकार भी प्रदान नहीं किये थे।

चूकि मंग्लोर की संधि भी अंग्रेजों के लिए अपमान जनक थी। अत: बंगाल के गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिग्स ने नापसंद किया परंतु उसने कोई कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)

पिट्स इंडिया एक्ट 1784 के तहत ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारतीय प्रदेशों की विजय न करने को कहा था लेकिन लार्ड कॉनवालिस ने जानबूझकर युद्ध की पहल की और उसने क्रमश बैल्लूर, अम्बूर, मंगलौर आदि पर क्रमश कब्जा करते हुए टीपू की राजधानी श्रीरंगपट्टम पर अधिकार कर लिया। टीपू ने कार्नवालिस का प्रबल प्रतिरोध किया औरसंधि हो गई।

श्री रंगपट्टनम की संधि (मार्च 1792)

यह संधि टीपू के लिए अति अपमान जनक थी। उसने युद्ध के हरजाने के रूप में 3 करोड़ 30 लाख रूपया तथा अपना आधा राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया तथा अपने दो बेटे अब्दुल खालिद एवं मोहनुद्दीन (मुईजुद्दीन) को बन्दक के तौर पर कार्नवालिस के पास रखा।

कार्नवालिस ने श्री रंगपट्टनम की संधि के लिए लिखा कि हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाये बिना शत्रु को पंगु कर दिया।

टीपू सुल्तान का तीसरा बेटा 'फतह अली हैदर' को बंदक नहीं रख गया।

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध की पृष्ठभूमि में वेल्जली की आक्रामक सामाज्य नीति काम कर रही थी। दूसरी ओर टीपू ने फ्रांसीसियों से नजदीकिया बढ़ाई। और उसने स्वतंत्रता सूचक उपापधि 'नागरिक टीपू' धारण की तथा अपनी राजधानी श्री रंगपट्टम में एक प्रतीक वृक्ष लगाया अब वेल्जली ने टीपू से सहायक संधि स्वीकार करने का प्रस्ताव रखा जिसे टीपू ने इंकार कर दिया। अत: वेल्जली का टीपू पर आक्रमण तथा मई 1799 में टीपू लड़ते हुए मारा गया।

- विजय के उपरांत वेल्जली ने कहा 'कि आज पूर्व का साम्राज्य मेरे कदमों में पड़ा है।'
- टीपू ने कहा शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है वनस्पति भेड़ की तरह लम्बा जीवन जीने के।
- अल्फ्रेड लॉयल ने कहा कि नक्षत्रों की गति टीपू के विरूद्ध ही लड़ती रही।
- टीपू की पराजय का मुख्य कारण उसके डचचधिकारियों मीर सादिक, सैय्यद पूर्णिया एवं कमरूदीन का विश्वास घात था।
- टीपू की मृत्यु के बाद उसके परिवार को वेल्लूर में बंधक बना लिया।
- टीपू की पराजय का मुख्य कारण उसकी सेना में नौ सेना का अभाव था टीपू ने कहा 'मैं अंग्रेजों के थल साधनों को समाप्त कर सकता पर समुद्र को सुखा नहीं सकता।'
- टीपू की आत्म कथा 'तारीख-ए-खुद्दादी' के नाम से प्रसिद्ध है।

लार्ड वेल्जली के बाद बंगाल के गर्वनर जनरल के रूप में (1805) कार्नवालिस की पुन: नियुक्त हुई परंतु उसकी मृत्यु हो गई उसका मकबरा गाजीपुर में है। तत्पश्चात सर जॉर्ज बार्लो (1805-07), लार्ड मिन्टो (1807-13), लार्ड हैस्टिंग्स (1813-23), लार्ड एमहर्स्ट (1823-28) की नियुक्तियां हुई।

लार्ड विलियम वेंटिक

1833 के चार्टर एक्ट के अनुसार अब बंगाल के गर्वनर जनरल को अब भारत का गर्वनर जनरल कहा जाने लगा। इस प्रकार वेटिंक बंगाल का अंतिम तथा भारत का प्रथम गर्वनर जनरल हुआ। वेंटिक का कार्य काल वस्तुत: सामाजिक सुधारों के लिए जाना जाता है। जिनका वितिरण इस प्रकार है-

सती प्रथा का अंत (1829)

राजा राममोहन राय के प्रयासों के चलते 1829 के अधिनियम की धारा संख्या 17 के तहत सती प्रथा को मानव की हत्या के समझ अपराध घोषित कर दिया गया। तथा 1830 में उसे मुम्बई एवं मद्रास प्रेसीडेंसियों में भी लागू कर दिया।

सती प्रथा के संदर्भ में राजा राम मोहन राय का विरोध करने वाले अर्थात् सती प्रथा का समर्थन करने वाले प्रमुख विद्वान राधा कांत हैं।

ठगी प्रथा का अंत (1830)

ठगो के संगठित गिरोह अपने शिकार को ठगने के बाद उसकी बलि चढ़ा देते थे। और इसीलिए ठगो के विरूद्ध सबूत नहीं इकट्ठे किये जा सके। इस कुरीत को दूर करने के लिए वेंटिग ने कर्नल स्लीमैन के नेतृत्व में ठगी प्रथा का अंत कर दिया।

शैक्षिक सुधार

1813 के चार्टर एक्ट में सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा के विकास के लिए 1 लाख रूपये प्रति वर्ष खर्च करने की घोषणा की गई।

1833 के चार्टर एक्ट में सर्वप्रथम योग्यता के आधार पर बिना किसी भेदभाव के भारतीयों की नियुक्त का प्रावधान भी रखा गया था। लेकिन व्यावहारिक रूप में इन अधिनियमों का तात्कालिक प्रभाव शून्य रहे।

1835 में लार्ड वेटिक ने मैकाले के नेतृत्व में एक शिक्षा समिति गणित की। इस शिक्षा समिति के सदस्य विद्वानों में

माध्यम को लेकर मतभेद था। ब्रिसेव बंधु एवं विल्सन जैसे विद्वान चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषाएं हो जबकि टेबिलियन एवं राजा राममोहन राय जैसे विद्वान चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो। अतत: मैकाले के सुझाव पर विलियम वेटिंक ने अंग्रेजी माध्यम को ही स्वीकार किया।

वेंटिक ने शिक्षा सुधारों के तहत (अधोमुखी निस्यंदन) को लागू करने का प्रयास किया। जिसके अनुसार बड़ो को शिक्षित करना आसान होगा यदि उन्हे शिक्षित किया जाये तो वे छोटों को स्वयं शिक्षित कर देंगे। यह नीति असफल रही। वस्तुत: वेंटिंग की इस शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा का प्रसार नहीं था बल्कि वेटिग अंग्रेजी पढ़े लिखे भारतीयो का एक ऐसा वर्ग करना चाहता है जो प्रशासन के निम्न स्तरीय कार्यो को संवादित कर सके।

- मैकाले ने कहा था कि यूरोप के पुस्तकालय की एक अलमारी, पूरे भारत एवं अरब के समस्त साहित्य के बराबर है।
- वेटिंग ने 1835 में कलकत्ता मेडीकल कॉलेज की स्थापना की। यह भारत का प्रथम मेडिकल कॉलेज था।
- वेटिंक के बाद भारत के गर्वनर जनरल के रूप में चार्ल्स मेटकॉफ (1835-36) की नियुक्त हुई। उसने समाचार पत्रों से समस्त प्रतिबंध हटा लिए। इसलिए इसे समाचार पत्रों का मुक्तिदाता कहते हैं।

भारतीय प्रेस का विकास

- 15वीं शदी के मध्य में जर्मनी के जॉन गुटिनवर्ग ने प्रेन्टिग प्रेस का आविष्कार किया।
- कैक्सन ने 1477 में छापाखाना (प्रेन्टिग प्रेस) ब्रिटेन में लगाया।
- भारत में 1550 में गोआ में प्रथम छापाखाना पुर्तगालियों ने लगाया जिसमें प्रथमत: धार्मिक पुस्तक छपती थी। जिनका उपयोग ईसाई मिशनरियां इसाई धर्म के प्रचार में करती थी।
- ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपना पहला प्रिंटिंग प्रेस 1664 में मुम्बई में लगाया।
- भारत का पहला समाचार पत्र 1780 में कलकत्ता से जेम्स आंगस्टस हिक्सी ने निकाला समाचार पत्र का नाम था The Bengla Gazzette bl lekpkj dks The Culcutta Generl Advertises भी कहा जाता है।
- ब्रिटिश विरोधी बातो को छापने के कारण यह जप्त कर लिया।
- किसी भारतीय के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र गंगाधर भट्टाचार्य का द बंगाल गजट (1816)।
- भारतीय राष्ट्रीय प्रेस के संस्थापक राजा राम मोहन राय थे जिनके द्वारा प्रकाशित पत्रों के नाम इस प्रकार है।

1. संवाद कौमुदि (1821) बंगला भाषा में।
2. मिरात उल अखबार (1822) फारसी भाषा में।
3. ब्राह्मीनिकल मैगजीन (1822) अंग्रेजी।
4. समाचार चन्द्रिका (1822)।

- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र सोम प्रकाश (1858) बंगाली भाषा में, इस संदर्भ में भारत का पहला समाचार पत्र था जिसमें नील उत्पादन में लगे श्रमिक एक कृषकों की समस्याओं पर सर्वप्रथम लेख प्रकाशित किए।
- चूंकि अब भारतीय समाचार पत्र क्रमश: उत्तरोत्तर भारतीयों में राजनीतिक चेतना का भी प्रसार का कार्य करने लगे थे। अत: लार्ड लिटन (1876-80) ने Verha clar prese Act (देशी समाचार पत्र अधिनियम) 1878 पारित किया। यह अधिनियम विशेष तौर पर बंगला भाषा में प्रकाशित होने वाले शब्द अमृत बाजार पत्रिका के लिए बनाया गया था जिसमें लगातार ब्रिटिश विरोध खबरे छपती थी। परंतु रातो-रात यह अंग्रेजी में परिवर्तित हो गया और कार्य वाही नहीं हो सकी। (यह एक्ट केवल भारतीय भाषाओं में प्रकाशिता होने वाले समाचार पत्रो के लिए लागू किया था।)
- अमृत बाजार पत्रिका 1868 मे मोती लाल घोष एवं शिशिर कुमार घोष के द्वारा शुरू किया था।
- वार्नाकुलर एक्ट के द्वारा सर्व प्रथम ईश्वर चन्द्र विद्या सागर के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र सोम प्रकाश के विरूद्ध कार्यवाही की गई।
- लांर्ड रिपन (1880-84) ने 1882 में वर्नाकुलर एक्ट को रद्द कर दिया।
- भारत में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों का विवरण इस प्रकार है-

1. हिन्दू पैट्रियार के सम्पादक क्रिस्टोदास पॉल को भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार कहा जाता है।
2. हिन्दी भाषा का प्रथम समाचार पत्र उदण्ड-मार्तण्ड-बाबू जुगल किशोर (1826) कानपुर।
3. Servants of India by श्रीनिवास शास्त्री

   Servants of India Socisty की स्थापना 1908 में गोपाल कृष्ण गोखले ने की थी। (भारत सेवक समाज।)
4. गोपाल कृष्णगोखले के द्वारा सम्पादित समाचार पत्र सुधारक।
5. रफ्त गोफ्तार - दादा भाई नरौजी

   सुलभ समाचार पत्र - केशव चन्द्र सेन

केसरी (मराठी भाषा) - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

मराठा (अंग्रेजी भाषा) - तिलक

इन्दु प्रकाश - महागोविन्द रानाडे

बंगाली (भाषा बंगाली) - सुरेन्द्र नाथ सेन

यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन - गांधी

अल-हिलाल-विलाल - अब्दुल कलाम आजाद

Independence - मोती लाल नेहरू

तहजीव-उल-अठालाक - सैयद अहमद खान

वन्दे मातरम् - अरविन्द घोष

The People (पंजाब) - लाला लाजपत राय

आधुनिक भारत की प्रमुख पुस्तकें

New lamps for old - श्री अरविन्द घोष

Life divine - श्री अरविन्द घोष

सावित्री (अंग्रेजी का सबसे बड़ा महाकाव्य) - श्री अरविन्द घोष

How India fought for freedom - एनी वेसेन्ट

India: A Nation - एनी वेसेन्ट

एनी वेसेन्ट के दो समाचार पत्र 'New India' and 'Comman wheel' थे।

A nation in making - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

गीतांजलि- रविन्द्र नाथ टैगोर (नोवेल)

Un Happy India - लाला लाजपत राय

Young India - लाला लाजपत राय

Broken wings - सरोजनी नायडू

Song of India - सरोजनी नायडू

तसना ए हिन्द (सारे जहां से अच्छा) - मु. इकबाल

Now or never - चौधरी रहमत अली

India divided - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

India wins freedon - मौलाना अबुल कलाम आजाद

Thoughts or Pakistan - भीमराव अम्बेडकर

Why I am Athieast (मैं नास्तिक क्यों हूं) - भगत सिंह

गीता रहस्य - लोकमान्य तिलक

The aretic heme of the aryans - लोकमान्य तिलक

सत्यार्थ प्रकाश - दयानन्द सरस्वती

Poverty and Unbritish role - दयानन्द सरस्वती

In India (1868) - दादा भाई नौरोजी

The Indian struggle - सुभाष चन्द्र बोस की आत्म कथा

1857 The first war of Indian Independence - दामोदार सावरकर

मेटकॉफ के पश्चात् क्रमश: लॉर्ड आंकलैण्ड (1836-42) लॉर्ड एलन वरो (1842-44), लार्ड हार्डिग (1842-48) हुये।

- लार्ड ऑकलैण्ड ने शेरशाह सूरी मार्ग का पुनर्निर्माण कराया तथाइसका नाम बदलकर जी.टी. रोड रख दिया।
- लार्ड एलनवरो ने 1843 के पूरक एक्ट की धारा 5 से दास प्रथा के पूर्णत: निषिद्ध करते हुए उेस अपराध की श्रेणी में रख दिया।

लॉर्ड डलहौजी (1848-56)

लार्ड डलहौनी एक पक्का साम्राज्यवादी गवर्नर जिसे भारत में सबसे कम उम्र में (मात्र 35 वर्ष की अवस्था में) भारत का गर्वनर जनरल बना कर भेजा गया। डलहौजी को वस्तुत अपनी राज्य हड्प नीति के कारण जाना जाता है। डलहौजी के काल की प्रथम राजनीतिक घटना पंजाब का विलय (1849) थी। चाटर्स नैपियर ने 21 फरवरी 1849 को तोपो के युद्ध में पंजाब के शासक दिलीप सिंह को पराजित करके अपहस्थ कर दिया तथा पंजाब का विलय कर लिया गया पंजाब के विलय को 'एक संगीन विश्वासघात' की संज्ञा दी जाती है।

डलहौजी की राज्य हड्प नीति के तहत देशी रियासतों को दत्तक पुत्र लेने के अधिकार से वंचित कर दिया गया तथा उस राज्य को ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में लाने की बात की गई। इस नीति के तहत विलय किये गये राज्यों में सर्वप्रथम 1848 में सतारा - यहां के शासक अप्पा जी की निसंतान मृत्यु हो गयी। अत: डलहौजी ने सतारा का राज्य हड्प कर लिया तत्पश्चात् क्रमश:

जैतपुर (बुंदैल खण्ड)	1849
संभल पुर (बंगाल)	1849
बघाट (पजाब)	1850
उदैपरु (मध्य प्रदेश)	1852
झांसी (उत्तर प्रदेश)	1853
नागपुर (महाराष्ट्र)	1854 (सबसे अंत में)

का विलय कर लिया गया डलहौजी की राज्य हड्पनीति से ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज्य विस्तार साढे तीन गुना बढ़ गया।

कुशासन के आधार पर अवध का विलय (1856)

अवध को डलहौजी ने दुधारू गाय की संज्ञा दी इस समय अवध में वाजिद अली शाह नवाब था तथा अवध में ब्रिटिश

रेजीडेन्ट के रूप में कर्नल स्लीमैन नियुक्त था। डलहौजी ने स्लीमैन से अवध में कुशासन की रिपोर्ट तैयार करने को कहा ताकि अवध का विलय किया जा सके लेकिन स्लीमैन ने इनकार कर दिया अत: डलहौजी ने उसे बर्खास्त करके नये ब्रिटिश रेजीडेन्ट के रूप में आउट्रम की नियुक्त की। आउट्रम की कुशासन की रिपोर्ट पर ही डलहौजी ने अवध का विलय कर लिया इसलिए अवध के विलय को एक महान डकैती की संज्ञा दी जाती है।

डलहौजी के काल में भारतीय रियासतों को शासकों की उपाधियों एवं पेंशन पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तकपुत्र घोन्धु पन्त। धुंधूपंत (नाना साहब) की पेंशन बंद कर दी अब नाना साहब ने अजीमुतलाह खान को अपनी पेंशन बहाल करवाने के लिए इंग्लैड भेजा लेकिन वह असफल रही।

डलहौजी के प्रशासनिक सुधार

- डलहौजी ने EIC के तोप खाने का मुख्य कार्यालय कलकत्ता से मेरठ स्थानांतरित कर दिया।
- EIC की सेना का मुख्यालय शिमला में स्थापित किया तथा शिमला को डलहौजी ने ग्रीष्मकालीन घोषित किया (सामान्य तौर पर राजधानी कलकत्ता थी 1912 मे कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित कर दी गयी।) डलहौजी ने शिमला में ही अपने लिए एक विशाल आलीशान महल बनवाया- डलहौजी भवन।
- शैक्षणिक सुधारों के तहत 1853 में थामसन के सुझावों पर भारतीय भाषाओं मे शिक्षा का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। इसी दौरान 1854 में बोर्ड ऑफ कंट्रोल के अध्यक्ष 'चार्ल्स वुड' का निर्देश पत्र आया जिसमें भारतीय शिक्षा के सुधार के लिए विस्तृत प्रावधानों का उल्लेख किया गया। चार्ल्स वुड के निर्देश पत्र को भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा भी कहते हैं। इन सुझावों के तहत भारत में Anglo – vernacular स्कूलों के स्थापित किये जाने का प्रस्ताव था। जिसमें भारतीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ अंग्रेजी की एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाये जोन की व्यवस्था थी लेकिन ही डचच शिक्षा के लिए अंग्रेजी माध्यम ही स्वीकार किया गया।
- लंदन विश्व विद्यालय की तर्ज पर तीनों प्रेसीडेन्सियों में क्रमश: तीन विश्व विद्यालयों की स्थापना की गई। इसमें सर्वप्रथम कलकत्त विश्वविद्यालय, मुम्बईविश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय थे ये मुख्यत: परीक्षा लेकर उपाधि प्रदान करने वाली संस्थायें थी। इसमें शैक्षणिक कार्य सम्पन्न नहीं किया जाता था।
- डलहौजी ने कलकत्ता एग्रीकल्चरल यूनीवर्सिटी तथा रूड्की अभियात्रिकी संस्थान (रूडकी इजीनियरिंग कॉलेज की) स्थापना की।
- 1850 के लौम्स लौकी अधिनियम के तहत धर्मान्तरण (ईसाइ वन जाने) पर सम्पति का हस्तांतरण वैधानिक घोषित कर दिया अर्थात् अब किसी भी व्यक्ति के ईसाई बन जाने पर उसे उसकी पिता की सम्पति के उत्तराधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता था।

रेलवे मार्ग

भारत की पहली रेलवे लाइन का निर्माण ब्रिटिश कंपनी 'ग्रेट इंडियन येनिन्सुला' द्वारा 1853 में मुंबई से थाणे के बीच सम्पन्न किया गया जिस पर 1853 मे ही भारत की पहली रेलगाड़ी चली इस प्रथम रेल इंजन का नाम था। 'ब्लैक ब्यूटी' मुम्बई से थाणे के बीच की दूरी 20 मील अथवा लगभग 30 किमी. थी।

- वर्तमान में भारत का पहला कार्यरत इंजन 'फेरी क्वीन' हैं जो 1855 में चला था।
- भारत की दूसरी रेलवे लाइन कलकत्ता से रानीगंज के बीच (120 मील), ब्रिटिश कम्पनी ईस्ट इंडियन रेलवे के द्वारा बिछाई गई। वस्तुत भारत में रेलवे के पूर्ण विकास का श्रेय डलहौजी को हैं। डलहौजी की पुस्तक 'Railways Minute' है।
- Father of Indian Railways — रोलेंड सेक डोनाल्ड स्टीफेंसन।

डाक सुधार अधिनियम 1854

- भारतीय डाकघर अधिनियम 1854 के तहत भारत में सर्व प्रथम डाक टिकटों का प्रचलन किया गया। प्रथम डाक टिकट का मूल्य 2 पैसा था। तथा इसी अधिनियम के तहत भारतीय सैनिकों की नि:शल्क डाक सेवा समाप्त कर दी गई।
- भारत में डाक व्यवस्था का संस्थापक रार्बट क्लाइव था जिसने 1766 में डाक प्रणाली का सूत्रपात किया जिसका विस्तार आगे चलकर वारने हेस्टिगन ने 1784 में एक पोस्ट मास्टर जनरल के अधीन कलकत्ता GPO की स्थापना करके किया।

लोक निर्माण विभाग

डलहौजी ने सर्वप्रथम PWD को सैन्य विभाग से प्रथक करके एक अलग विभाग का दर्जा दिया (दिल्ली सल्तनत में

लोव निर्माण विभाग की स्थापना फिरोज-शाह तुगलक ने की थी।)

विधवा विवाह अधिनियम 1856

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के अथक प्रयासों से 1856 में विधवा विवाह को वैधानिक घोषित कर दिया गया। विद्यासागर ने पाराशर संहिता के आधार पर विधवा विवाह को मान्य ठहराया।

डाक व्यवस्था :

1. 1786 में मद्रास GPO 1793 में मुम्बई प्रेसीडेन्सी में एक GPO की स्थापना हुई। 1837 के अधिनियम में तीनों प्रेसीडेन्सियों को पोस्ट ऑफिस संगठन को एक अखिल भारतीय डाक सेवा के रूप में समान आधार पर विनियमित किया।
2. 1854 के भारतीय डाकघर अधिनियम के द्वारा सर्वप्रथम डाक टिकटों का प्रचलन अपने अस्तित्व में आया।
3. वर्तमान में भारतीय डाक सेवाओं को 1898 का भारतीय पोस्ट ऑफिस अधिनियम नियंत्रित करता है।

19. 1857 का विद्रोह

जनवरी 1857 ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में पुरानी ब्राउन वेस के स्थान पर एक नयी 'Ertield Rifle' का प्रयोग शुरू किया गया इसके कारतूसों मे गाय और सुअर की चर्बी लगी होती थी। इन कारतूसों का प्रयोग करने के पहले इस चर्बी को दांत से काटना पड़ता था। सेना में इन कारतूसों का प्रयोग ही सैनिकों के विद्रोह का तात्कालिक कारण था यद्यपि इस विद्रोह की पृष्ठभूमि में अनेक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक धार्मिक कारण भी उत्तरदायी थे।

- सर्वप्रथम बहरामपुर (कलकत्ता) से 120 मील दूर में 19वीं Native Infahtry Regiment के सिपाहियों ने 26 फरवरी 1857 को इन कारतूसों के प्रयोग से इंकार कर दिया।
- 29 मार्च 1857 बैरकपुर (कलकत्ता) 34वीं Native Infantry Regiment के सिपाई मंगल पाण्डे ने लेफ्टीनेट कर्नल वाग (Waugh) को गोली मार दी और सार्जेण्ट 'हियरसन' को गोली मारकर घायल कर दिया।
- मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर लिया गया और 6 अप्रैल 1857 को उसका कोर्ट मार्शल किया गया तथा 34वीं Native Infantry Regiment के सूबेदार मेजर जवाहर लाल तिवारी एवं तीन अंग्रेज अधिकारियों-

1. कैप्टन जी.सी. हैच
2. जैम्स वॉलिंग्स
3. एवं एस.जी. व्हीलर की सम्मिलित समिति ने मंगल पाण्डे को सजा सुनाई तथा 8 अप्रैल, 1857 को मंगल पाण्डे को फासी की सजा दे दी गयी।

अगले क्रम में 10 मई 1857 मेरठ की सेना ने खुला विद्रोह कर दिया मेरठ के लेफ्टीनेट कर्नल हैपिट के पास 2200 यूरोपी सैनिक थे लेकिन उसने विद्रोही सैनिकों को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

विद्रोह : यह किसी सीमित लक्ष्य के लिए सीमित क्षेत्र में किया जाता है। विद्रोह हिंसक व अहिसक दोनों हो सकता हैं। किन्तु सामान्यत इसमें हिंसा के तत्व ज्यादा प्रभावी होते है यह किसी निश्चित संगठन या विचार धारा से संचालित नहीं होते है। बल्कि कुछ व्यक्ति या व्यक्तियों के द्वारा यह आरम्भ किया जाता है।

आन्दोलन : यह दीर्घकालिक तरीके से अपने साध्य को प्राप्त करने का उद्देश्य रखता है इसमें निश्चित नेतृत्व निश्चित संगठन व निश्चित विचार धारा महत्वपूर्ण हो जाती है आन्दोलन सामान्यत: सवैधानिक तरीके से या गैर सवैधानिक तरीके से क्रमिक सुधार की आँकक्षा रखता है इसमें जन सहभागिता को अति आवश्यक तत्व माना जाता है।

क्रांति : नियत समय में परमपरागत व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन क्रांति कहलाता है। सामान्यत: क्रान्ति में (प्रमुखत: राजनैतिक परिवर्तन में हिंसा शामिल हो जाती है) किन्तु वास्तव में क्रान्तिकारी हिंसा का शिकार शोषक सत्ता से जुड़े अधिकारियों को ही बनाते हैं।

आतक : वस्तुत: आंतक एक मनोदशा है न कि कोई सिद्धान्त इसमें अपनी माँगे पूर्ण कराने के लिए भय और आंतक का वातावरण सर्जित किया जाता है। और यहां हिंसा सर्वोपरि हो जाती है।

आतंकवाद यह ध्यान नहीं देता कि वह केवल दोषियों को हिंसा का शिकार बनता है। या फिर निर्दोशों को

नक्सलवाद : 1960 के दशक के अन्तिम दौर में बंगाल के नक्सलवाड़ी क्षेत्र से माउवादी विचार धारा से प्रेरित एक आन्दोलन के रूप में इसकी शुरूआत हुई सामाजिक आर्थिक विषमता को मिटाने के लिए सामान्य जनता ने हथियार का प्रयोग करने का निर्णय लिया और हमारी प्रशासनिक कमी ने भावनाओं को और उग्र बना दिया। किन्तु 1990 के बाद नक्सवाद की विचार धारा में महत्वपूर्ण वदलाव आया और यह केन्द्रीय राजनैतिक शक्ति बनने की चाहत भी रखने लगा इसी समय से यह आतक के रास्ते की और मुढ़ गया और मासूम निर्दोषों की हत्या भी की जाने लगी।

वर्तमान में नक्सलवाद को वाह्य देशों का समर्थन विशेषत: आतंकवादी गुटो से भी मिलने लगा है और लाल गलियारा जो काण्डमाडू से तेलगाना तक जाता है यहाँ नक्सलियों का प्रभुत्त स्थापित है।

अपने लक्ष्यों की प्राप्ति का सबसे सहज और महत्वपूर्ण रास्ता आन्दोलन है न कि आंतक समस्या को सुलझाने की बजाय उसे और बढ़ा देता है।

जनवरी 1857 ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में पुरानी ब्राउन वेस के स्थान पर एक नयी 'Ertield Rifle' का प्रयोग शुरू किया गया इसके कारतूसों मे गाय और सुअर की चर्बी लगी होती थी। इन कारतूसों का प्रयोग करने के पहले इस चर्बी को दांत से काटना पड़ता था। सेना में इन कारतूसों का प्रयोग ही सैनिकों के विद्रोह का तात्कालिक कारण था यद्यपि इस विद्रोह की पृष्ठभूमि

में अनेक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक धार्मिक कारण भी उत्तरदायी थे।

- सर्वप्रथम बहरामपुर (कलकत्ता) से 120 मील दूर में 19वीं Native Infahtry Regiment के सिपाहियों ने 26 फरवरी 1857 को इन कारतूसों के प्रयोग से इंकार कर दिया।
- 29 मार्च 1857 बैरकपुर (कलकत्ता) 34वीं Native Infantry Regiment के सिपाई मंगल पाण्डे ने लेफ्टीनेट कर्नल वाग (Waugh) को गोली मार दी और सार्जेण्ट 'हियरसन' को गोली मारकर घायल कर दिया।
- मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर लिया गया और 6 अप्रैल 1857 को उसका कोर्ट मार्शल किया गया तथा 34वीं Native Infantry Regiment के सूबेदार मेजर जवाहर लाल तिवारी एवं तीन अंग्रेज अधिकारियों–

1. कैप्टन जी.सी. हैच
2. जैम्स वॉलिंग्स
3. एवं एस.जी. व्हीलर की सम्मिलित समिति ने मंगल पाण्डे को सजा सुनाई तथा 8 अप्रैल, 1857 को मंगल पाण्डे को फासी की सजा दे दी गयी।

अगले क्रम में 10 मई 1857 मेरठ की सेना ने खुला विद्रोह कर दिया मेरठ के लेफ्टीनेट कर्नल हैपिट के पास 2200 यूरोपी सैनिक थे लेकिन उसने विद्रोही सैनिकों को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि अग्रेजों द्वारा 100 वर्षों के भीषण उत्पीड़न ने तैयार की। भारत में सदैल चार तत्वों धर्म, मान, जीवन, सम्पति को महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। किन्तु अग्रेजों ने इन सभी पर गहनता से प्रहार किया इस महान विद्रोह को निम्नलिखित आयनों पर परखा जा सकता है।

राजनैतिक कारण :

(a) अग्रेज सदैव विदेशी वने रहे :
अग्रेजों का लक्ष्य सदैव ब्रिटेन के हितो की पूर्ति करना बना रहा और उन्होने भरतीयो का भरपूर्ण शोषण किया।

(b) डलहौजी की हड़प नीति से तत्कालीन राजनैतिक शक्तियों में असन्तोष
मुगल सत्ता के सम्मान में कमी नाना साहब की पेंशन को रोकना

(c) 1856 में अवध को कुशासन के आरोप में विटिश सामाज्य में मिलाने की घोषाणा

आर्थिक व प्रशासनिक : चूकि अग्रेज भारत के संसाधन का इस्तेमाल ब्रिटेन की उन्नति के लिए कर रहे थे। अत: भारत की पूरी अर्थव्यवस्था धराशायी होने लगी और हम, गरीबी भुखमरी और अकाल के दुषचक्र में फंस गये।

ब्रिटिश शासन प्रणाली में प्रशासनिक व सैन्य पदो पर भारतीयों को महत्वपूर्ण पद नहीं दिया जाता था वस्तुत अग्रेज भारतीयों को प्रशासन के योग्य नहीं मानते थे।

सामाजिक धार्मिक कारण :

अंग्रेजो द्वारा भारत के सामाजिक सांस्कृतिक ढाचे में हस्तक्षेप उनके कही सामाजिक विधान जैसे 1829 सती प्रथा निषेध आदि हमारे परम्परागत समाज को असन्तुष्ट करने लगा।

1813 के अधिनियम से ईसाई धर्म प्रचारकों को भारत आने की छूट तथा हिन्दू और मुसलमानों की धार्मिक प्रतीको एवं मान्यताओं पर प्रहार

1850 में धार्मिक अयोग्यता अधिनियम लैस–लौसी एक्ट पारित कर धर्मान्तरण को बढ़ावा देने की कोशिश।

सैन्य कारण :

1. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का स्थायित्व सेना पर ही टिका था। किन्तु ब्रिटिश नीतियों से भारतीय सैनिक असन्तुष्ट वने रहे जिसका उदाहरण 1806 से 1857 तक सैन्य विद्रोहों का होना।
2. 1856 में केनिग द्वारा सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम लाया गया
3. सैनिक कारणों में एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी था कि सैनिको की पारवारिक पृष्ठभूमि कृषि संरचना से जुड़ी थी अर्थात सैनिक वर्दी वाले किसान थे।

तात्कालिक कारण :

चर्बी वाले कारतूस की अफवाह हिन्दू व मुस्लिम दोनों वर्ग के सैनिको की धार्मिक मान्यताओं पर चोट की और अब सैनिको का असन्तोष विद्रोह का रूप ले वैठा और इस घटना ने पहले से व्याप्त असन्तोष को व्यापक व व्यावहारिक बनने का अवसर प्रदान कर दिया अर्थात इस घटना ने भारतीयों के असन्तोष रूपी वारूद में चिगारी का काम किया।

1857 के विद्रोह का स्वरूप :

कथन	**व्यक्ति**
स्वार्थी सैनिको का विद्रोह	शीले व लारेन्स
हिन्दू मुस्लिम षदयन्त्र	आउतम व टेलर
राष्ट्रीय सघर्ष	डिजरैली (लंदन विपक्ष नेता)
प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	वी.डी. सावरकर आर.सी. मजूमदार

न तो प्रथम न राष्ट्रीय नहीं स्वतंत्रता हेतु संग्राम :

- 1857 के विद्रोह के अधिकारक इतिहासकार सुरेन्द्र नाथ सेन थे।

1857 महत्वपूर्ण तथ्य

- 1857 के विद्रोह के समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लार्ड पॉमर्स्ट्रन थे।
- ब्रिटेन में विपक्ष के नेता- वैजामिन डिजरायली थे।
- ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया थी।
- भारत का गर्वनर जनरल लार्ड कैनिग था। (अंतिम गर्वनर जनरल प्रथम वायसराय)
- E.I.C का मुख्य सेनापति जार्ज एचिसन था।
- E.I.C कीसेना में कुल ब्रिटिश सैनिकों की संख्या 45000 थी।
- E.I.C की सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या 2 लाख 38 हजार थी। इस प्रकार E.I.C की सेना में ब्रिटिश एवं भारातीय सेना काअनुपात 1:5 था।
- 1857 के विद्रोह का एक मात्र प्रत्यक्षदर्शी शायर मिर्जा गालिब था।
- भारत का सम्राट बहादुर शाह जफर था।
- दिल्ली शस्त्रागार का प्रमुख जनरल विलोवी था।
- E.I.C के समर्थकों में प्रमुख ग्वालियर का सिंधिया परिवार था।

कैनिग ने कहा 1857 के इस तूफान (विद्रोह) के आगे इन देशी रजवाड़ों ने (विशेष तौर पर सिंधिया) एक बांध का काम किया वरना यह तूफान हमें एक ही झटके में बहा ले जाता और हमे कल ही बोरिया बिस्तर बाधना पड़ जाता।

- 1857 के विद्रोह का प्रतीक चिन्ह 'रोटी और कमल' था जिसका संकेतात्मक अर्थ है कि 'अंग्रेजों को भगाने से हम भारतीयो की रोटी सुरक्षित होगी तभी हमारा देश कमल सा खिल उठेगा'।
- विद्रोही सैनिकों के साथ एक मात्र महिला जो पुरूषों के भेष में लड़ी- कानपुर की नर्तकी अजीजन बाई।
- 1857 के विद्रोह मे एक मात्र अंग्रेज सैनिक जो भारतीय सैनिकों के साथ अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ा- कैप्टन गार्डन था जो मंगल पाण्डे का प्रिय दोस्त था।
- 1857 के विद्रोह को सर्वप्रथम विनायक दामोदर सावरकर ने अपनी पुस्तक 1857 The first war of Indain independence में भारत का प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम कहा। (1909)

आधुनिक इतिहासकार R.C. मजूमदार तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम था न ही राष्ट्रीय था न ही स्वतंत्रता संग्राम था।

1857 विद्रोह की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तक

1. 1857 के विद्रोह के सरकारी इतिहासकार डॉक्टर सुरेन्द्र नाथ की पुस्तक Eighteen Fifty Seen
2. The Great – अशोक मेहता
3. Civil Rebelliancesin the Indian Muties – शशिभूषण चौधरी
4. Causel of Indian Mutiny sepoy mutiney and revolt of 1857 MkW– आर.सी. मजूमदार

11 मई 1857 को मेरठ के विद्रोही सैनिकों ने दिल्लीपर कब्जा कर लिया और अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को 'शहंशाह ए हिन्दुस्तान' घोषित कर दिया यद्यपि बहादुर शाह प्रतीकात्मक रूप से ही बादशाह था क्योंकि वह 80 वर्ष का बूढ़ा और शक्ति हीन हो चुका था। विद्रोही सैनिकों ने प्रशासनिक व्यवस्था को संभालने के लिए एक प्रशासनिक समिति जलसा का गठन किया गया इसका नेतृतव बख्तखान ने किया

विदोह के प्रमुख केन्द्र	**नेतृत्व कर्ता**	**दमन कर्ता**
दिल्ली	वख्तखान	जाननिकलसन एवं हडसन
कानपुर	नाना साहब	हैवलॉक एवं कालिन कैंग्वेल
	तात्या टोपे (मूलनाम रामचन्द्र पाण्डुरंग)	

- नाना साहब के दो सहयाक : 1. रांगो जी बापू 2. अज्जी मुल्लाखान
- 1857 के विद्रोह में कानपुर नेतृत्व कर्ता के नाना साहब एवं लखनऊ की बेगम हजरत महल पकड़े नहीं जा सके और नेपाल भाग गये।

लखनऊ	बेगम हजरत महल (अल्पवयस्क नवाब विरजिस कद्र)	कालिन केम्बेल
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई (दत्तक पुत्र दामोदरराव) तथा (सहायिका झलकारी बाई)	केप्टन ह्यूरोज

1. झांसी की राजनी लक्ष्मीबाई की सहायिका बैजाबाई ने गद्दारी की थी।
2. रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर कैप्टन ह्यूरोज ने कहा 'यहां पर वो महिला सोई है जो विद्रोहियों में मात्र एक मर्द थी। (बचपन का नाम – मनुबाई, छबीली)'।

इलाहाबाद	लियाकत अली	नील
फैजाबाद	मौलवी अब्दुल्ला	कालीन गैवेन जनरल रेनार्ड
रूहेलखण्ड (बरेली)	खान बहादुर खान	कालीन कैम्बेल
बिहार		विलियम टैलर और बिन्सेरआयर
बनारस		कैप्टन नील
असम	दीवान मणिराम दत्ता	
गोरखपुर	गजाधर सिंह	
मथुरा	देवी सिंह	
मेरठ	कदम सिंह	
मंदसौर (मध्य प्रदेश)	फिरोज शाह	
कोटा (राजस्थान)	जयदयाल और हरदयाल	
हरियाणा	तुलाराम राव	
सुल्तानपुर	शहीद हसन	
उड़ीसा	उज्जवल शाह और सुरेन्द्र शाह	

अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह एंव उसकी बेगम जीनत महल को कलकत्ता के बजबज बंदरगाह से रंगून निर्वासित कर दिया गया उसका मकबरा आधुनिक म्यांमार के शहर दौगोन में हैं उसकी कब्र पर निम्न पंक्तियां अंकित हैं।

'इतना बदनसीव है ये जफर कि दफन के लिए दो गज जमीन भी नहीं मिली – कू-ए-यार'

1. रानी लक्ष्मीबाई के साथ गद्दारी करने वाले, दो प्रमुख अधिकारी (1) दुल्हाजू (2) पिरअली थे।
2. रानी लक्ष्मीबाई की प्रमुख सहायिकाओं में झलकारी क `अलावा गदरा एवं काशी दो वीरागनाएं थी।
3. रानी लक्ष्मीबाई मात्र 23 वर्ष की अवस्था में शहीद हो गयी उनका वफादार नौकर रामचन्द्र राव देशमुख उनके पास था वह घायल रानी को उठाकर वही निकट गंगादास की कुटिया में ले गया जहां रानी का अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ।
4. इलाहाबाद के विद्रोह के नेतृत्वकर्ता लियाकत को गिरफ्तार करके अण्डमान भेज दिया गया जहां कई वर्षो के उपरांत उनकी मृत्यु हो गई।

20 सितंबर 1857 ब्रिटिश सेनापति हड्सन ने बहादुरशाह जफर के दो पुत्रों मिर्जामुगल एवं मिर्जाख्बाजा सुल्तान तथा एक पौत्र मिर्जा अबुवक्त को गोली मार दी बहादुर शाह जफर भागकर हुमायू के मकबरे में छिप गया जहां से उसे गिरफ्तार करके देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया और न्यायधीश मेजर हैरियत ने उसे निर्वासन की सजा दी जफर को उसकी पत्नी जीनत महल एवं शहजोद 'जवाबख्त' के साथ बजबज बन्दरगाह (कलकत्ता) से रंगून निर्वासित कर दिया गया जहां 1862 में उसकी मृत्यु हो गयी।

महारानी विक्टोरिया का घोषण पत्र

1 नवम्बर 1858 इलाहाबाद के 'मिन्टो पार्क' में एक अंग्रेजी दरबार का आयोजन किया गया। यही कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र पढ़ा इस घोषणा पत्र को भारतीय जनता का महान अधिकार पत्र कहा जाता है। जिसकी प्रमुख बातें इस प्रकार हैं–

1. भारतीय प्रशासनिक नियंत्रण सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन चला गया अब ब्रिटिश संसद भारतीय मामलों में सीधी उत्तरदायी हो गयी।
2. अब भारत के गर्वनर जनरल को भारत का वायसराय घोषित किया गया जो भारत में क्राउन का व्यक्तिगत प्रतिनिधि था। इस प्रकार कैनिग भारत का अन्तिम गर्वनर जनरल तथा भारत का प्रथम वायसराय नियुक्त हुआ।
3. भारतीय रियासतों को गोद लेने का अधिकार सौंपा गया।
4. राज्य हड़प नीति का पूर्णतया परित्याग कर दिया गया तथा भारतीय रियासतों को यह आश्वासन दिया गया कि उनकी रियासतो में उनके अधिकार सुरक्षित रहेंगे तथा ईस्ट इंडिया कंपनी उनके आंतरिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी।

- 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास का एक गौरवमयी पठाव है हमारे स्वतंत्रता संघर्ष का उज्जवल अध्याय है। इस विद्रोह के कारण और प्रभाव जितने स्पष्ट है। इसके स्वरूप को विभिन्न विद्वानों ने अपनी प्रतिवाधिताओं व पूर्व मान्यताओं से ग्रसित होकर जटिल बना दिया हैं। तार्किक रूप से हम इसके स्वरूप को विश्लेषित करने के लिए दो भागों में वर्गीक्रत कर सकते है।

प्रथम मत :

ओपनिवेशिक इतिहासकार व उनके विचारो के समर्थक जो मानते है कि इस विद्रोह का स्वरूप एक वर्गीय था और इसका सबसे सबल उदाहरण इसका सैनिक विद्रोह होना है।

पक्ष में तर्क :

- विद्रोह की शुरूआत सैनिको ने की व्यापकता भी सैनिको की थी। और इसका अन्त भी सैनिको के दमन से हुआ।
- व्रिटिश प्रशासन के कुछ प्रगतिशील कदमों को अपनी कटटर धार्मिक मान्यताओं के आधार पर स्वीकार नही पा रहे हैं।
- तात्कालिक इस विद्रोह का करण चर्ती वाले कारतूस की अफवाह थी।

विपक्ष में तर्क :

- सैनिको के अतिरिक्त राजाओ नवाबो, सामनतो की आदि सहभागिता और कई स्थानो पर यह जन्य सामान्य का विद्रोह था। जैसे बनारस व इलाहाबाद
- सैनिक सभी स्थानों पर समानरूप से विद्रोह में शामिल नहीं थे। वल्कि कुछ स्थानों पर तो भारतीय सैनिक ही विद्रोहियो का दमन कर रहे थे।
- वस्तुत इनका कारण सिद्धान्त ही गलत है। क्यो कि चर्वोवाला कारतूस इस विद्रोह का तात्कालिक कारण तो था किन्तु सबसे महत्वपूर्ण एवं एक मात्र कारण नहीं माना जा सकता।

इसी तरह हम अग्रेजो के अन्य तर्को को जिसमें एक वर्गीयता की वात की गई है। को नकार सकते है। इसके साथ ही हिन्दू मुस्लिम षड्यन्त या धर्मान्धो का युद्ध कहना अग्रेजो की नस्लीयता को दर्शाता है ऐसा स्वरूप इसलिए बताया गया जिससे भारतीय अपने गौरवमई इतिहास से बचित रहे और अग्रेज अपनी सत्ता के चित्त को सिद्ध कर सके।

द्वितीय मत :

भारतीय इतिहासकार तथा उनके मत के समर्थक जो यह तो मानते है कि विद्रोह वहुवर्णीय व व्यापक था किन्तु यह राष्ट्रीय या स्वतंत्रता संग्राम था या नहीं इसे मानने में मतभेद है। इस मत को हम एक महत्वपूर्ण कथन के आधार पर रख सकते है। 'न तो प्रथम'

- सबसे पहले हम 'प्रथम' शब्द का अवलोकन करे तो यह इस आधार पर नकारा गया है कि 1857 से पहले भी अग्रेजो के विरूद्ध विभिन्न सैनिक, कृषिक, जनजाति विद्रोह होते रहे है किन्तु यदि हम तार्किक रूप से देखे तो 1857 के पूर्व के विद्रोह में न तो इतनी व्यापकता थी। और नहीं सर्वसहभागिता थी यह भी महत्वपूर्ण है कि इस विद्रोह के बाद विट्शि सत्ता को भारत के प्रति अपनी नीतियो को आमूल रूप से बदलना पड़ा। अत: इसका स्वरूप प्रथम व्यापक विद्रोह ही स्वीकार जाना चाहिए।

राष्ट्रीय संघर्ष :

- यदि हम राष्ट्रीयता की ''आधुनिक यूरो केन्द्रित परिभाषा पर इसे परखे तो नि: सन्देह यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वरूप धारण नहीं करता क्योंकि राष्ट्रीयता हेतु एक ऐसी भावना का होना आवश्यक जो सभी लोगो को आपस में जोड़ सके और वे एक दूसरे के लिए वलिदान करने के लिए तत्पर्य हो। इसके साथ ही राष्ट्रीय संघर्ष में निश्चित विचार धारा, संगठन व नेतृत्व के उपस्थित अपरिहार्य मानी जाती है। और राष्ट्रीय संघर्ष के लक्ष्य भी प्रगतिशील होने चाहिए। जबकि यह विद्रोह ''घड़ी की सुइयो को विपरीत दिशा में घुमाने का प्रयास था।'
- किन्तु यदि तत्कालीन परिस्थितियो के आधार बनाकर इसका विशलेषण करे तो इस भावना के अभाव में भी राष्ट्रीय संघर्ष के कई अंश दिखाई देते है। शिक्षा प्रणाली का व्यापक न होना संचार व परिवहन व्यवस्था का परमपरागत और इसमें जनता सहभागिता 'वहुवर्गीय सहभागिता' तथा इसका धर्म निरपेक्ष चरित्र इसे इन मूल्यो से जोड़ता प्रतीत होता हैं।

स्वतंत्रता संग्राम :

- स्वतंत्रता सघर्ष इस आधार पर नकारा जाता है। कि विद्रोही सभी स्वतंत्रता की बात नहीं कर रहे थे। और भारत की सभी जनता या वर्ग इसमें शामिल नहीं था। इस विद्रोह को केन्द्र विन्दु स्वार्थी हितो की सहभागिता थी।
- ध्यात्वय है कि स्वतंत्रता संग्राम में एक शोषक प्रतिपाद 'समान्यत: विदेशी' का होना आवश्यक होता है। तत्कालीन भारत में सभी विद्रोहियो का एक मात्र लक्ष्य ब्रिटिश शासन को मिटाकर उनसे मुक्ति पाना था। तो दूसरी तरफ यह कही व कभी नही होता कि स्वतंत्रता संग्राम में समस्त जनता का या वर्ग समान रूप से भाग ले। चाहे वह महान फ्रांसीसी क्रान्ति हो या फिर अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम क्यो न हो अत: सभी विद्रोहीयो का लक्ष्य एक ही बिन्दु अर्थात ब्रिटिश सत्ता से युक्ति होने के कारण उनके स्वार्थ परार्थ में

बदल जाते है। इस आधार पर इस विद्रोह में स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण अंश तो अवश्य ही मिलते है।

- पूर्वगामी विद्रोहो तथा गाँधीवादी आन्दोलनो से भिन्न होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों में इसकी तीव्रता भिन्न होने के कारण तथा वर्गीय हितो से जुड़ने से इसका स्वरूप जटिल प्रतीत होता है। इसके स्वरूप के बारे में कहे गये सभी कथनों में सत्यता का अंश तो विद्यमान है। किन्तु सम्पूर्णता किसी में नहीं। अत: इसके स्वरूप को निर्धारित करने के लिए हमे सभी कथनों के समुच्चय को साथ लेना होगा।

1857 के बाद राजनैतिक प्रशासनिक परिवर्तन :

- 1857 के विद्रोह से यह स्पष्ट हो गया कि भारत की जनता ब्रिटिश शासन से असन्तुष्ट है ब्रिटिश सरकार को इसे ही किसी स्वर्णिम अवसर की तलाश थी। 1858 के एक्ट में यह उल्लिखित था कि अव ईस्ट इण्डिया कम्पनी ब्रिटिश सरकार की तृष्टि की तरह उसे जब चाहे सरकार भारत की सत्ता छीन सकती है। अब ब्रिटिश भारत का शासन कम्पनी से क्राउन ने अपने हाथो में ले लिया।

  इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्नलिखित थे।

- गर्वनर जनरल की उपाधि वायसराय कर दी गई जिसका आश्रय था सम्राट का व्यक्तिगत प्रतिनिधि।
- 1784 के पिट्स इण्डिया एक्ट से भारत पर चला आ रहा दोहरा नियन्त्रण समाप्त।
- भारत सरकार के कार्य संचालन हेतु भारतीय राज्य सचिव और उसकी परिषद का गठन किया गया। जो लंदन से ही कार्य करता है।
- देशीय रियासतो के साथ अग्रेजो ने मित्रवत व्यवहार को अपनाया क्योकि 1857 के विद्रोह के विषय वातावरण में इस वर्ग ने अग्रेजो की सहायता की थी। देशीय रियासतो के साथ अब अधीनस्थ पार्थक्य की जगह आधिनस्थ संघ की नीति अपनायी गई।
- अंग्रेजो ने अब क्षेत्रीय सीमा विस्तार की नीति का सैधातिक रूप से त्याग किया।
- 1861 के बाद भारत में विकेन्द्रीयकरण की शुरूआत हुई और प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए I.P.C, C.R.P.C. आदि संधिताये लागू की गयी।
- सिविल सेवा की परीक्षा सभी के लिए ओपन कर दी गयी परन्तु विषय परीक्षा का स्थान उम्र ऐसी निर्धारित की गयी जिससे अधिक भारतीय इसमें सफल न हो सके।
- भारतीय सैनिको को जातिनस्ल व क्षेत्र के आधार पर वॉटने के कोशिश की गयी और सिख गोरखा व कुमायूं आदि रेजीमेन्टो की स्थापना की गयी।

20. गवर्नर जनरल

वारेन हेस्टिंग्स (1772 - 1785)

- 1772 में प्रत्येक जिले में एक फौजदारी व एक दिवानी अदालत स्थापित की।
- बंगाल का प्रथम गवर्नर
- इसके समय में 1773 का रेग्यूलेटिंग एक्ट आया।
- 1774 में कलकत्ता में उच्चतम न्यायालय की स्थापना।
- बोर्ड आर्फ रेवेन्यु की स्थापना की।
- बंगाल में द्वैध शासन की समाप्ति।
- 1784 में सर विलियम जोन्स द्वारा एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की गई।
- हेस्टिंग्स पर इग्लैड में महाभियोग लगया गया।

लॉर्ड कार्नवालिस (1786 - 93)

- नागरिक सेवा का जनक।
- कर्मचारीयों के व्यक्तिगत व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया।
- चार भ्रमणकालीन अदालतों की स्थापना थी।
- कॉर्नवालिस कोड लाया।
- 1793 में जो शक्तियों के पृथ्यकरण सिद्धान्त पर आधारित था।
- स्थायी बंदोबस्त को लागू किया।

लॉर्ड वेलेजली (1798 - 1805)

- स्वय को बंगाल का शेर कहता था।
- सहायक संधि की प्रणाली की शुरूआत की।
- इसके शासनकाल में चौथा आंग्ल मैसूर युद्ध (1799) हुआ।
- सहायक संधि को सर्वप्रथम 1798 में हैदराबाद में लागू किया गया।
- कोलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना।

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813 - 23)

- आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814 - 16)
- संगोली की संधि (1816)
- पिण्डारियों का दमन।
- तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध

लॉर्ड विलियम बैंटिंक (1828 - 35)

- भारत का प्रथम गवर्नर जनरल।
- 1829 में सती प्रथा की समाप्ति।
- ठगी प्रथा का अंत
- वैलूर का 1806 में सैनिक विद्रोह (जब वह मद्रास का गर्वनर था)।
- 1835 कलकता मेडिकल कॉलेज की स्थापना
- 1835 में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति पर मैकाले रिपोर्ट को लागू किया ।

लॉर्ड मेटकॉफ (1835 - 36)

- प्रेस पर से नियंत्रण हटवाया

लॉर्ड डलहौजी (1848 - 56)

- साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार।
- सेना का मुख्यालय शिमला में स्थापित किया।
- सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की।
- भारतीय नागरिक सेवा हेतु पहली बार प्रतियोगीता परीक्षा आयोजित की।
- पेगू (लोअर बर्मा) का भारत में विलय
- व्यपगत सिद्धान्त लागू किया। इसके अन्तर्गत प्रथम राज्य सतारा (1848 ई.) था।
- अवध का विलय कुशासन के आधार पर-1856 ई॰ में किया।
- वुड डिस्पैच आयोग (1854 ई॰) का गठन।
- भारतीय रेलवे की शुरूआत।
- भारत में प्रथम रेल बंबई से ठाणे तक चलाई गई।
- भारत में डाक एवं तार व्यवस्था की शुरूआत।

लॉर्ड कैनिंग (1856 - 62)

- 1857 की क्रान्ति का आरंभ।
- व्यपगत सिद्धान्त को समाप्त कर दिया था।
- भारत का पहला वायसराय
- 1861 ई. पोर्टफोलियों प्रणाली लागू की।
- भारतीय दण्ड संहिता, 1858
- नील विद्रोह
- 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित

लॉर्ड लिटन (1876 - 1880)

- इनको ओवेन मेरिडैथ भी कहा जाता था।
- दिल्ली दरबार का आयोजन महारानी विक्टोरिया के सम्मान में।
- सिविल सेवाओं में आयु 21 वर्ष से कम करके 19 वर्ष कर दी गई थी।

- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट का निर्माण
- इंडियन आर्म्स एक्ट पारित

लॉर्ड रिपन (1880 - 84)

- इलबर्ट बिल विवाद इसी के शासनकाल में हुआ था।
- वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट समाप्त (1882)
- प्रथम कारखाना अधिनियम पारित (1881)
- 1881 में नियमित जनसंख्या जनगणना करवाई
- स्थानीय स्वशासन (1882)
- हण्टर आयोग का गठन (शिक्षा के क्षेत्र में) (1882)

लॉर्ड डफरिन (1884 - 88)

- कांग्रेस की स्थापना

लॉर्ड कर्जन (1899 - 1905)

- 1902 पुलिस आयोग एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में ।
- 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित ।
- 1905 में बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आन्दोलन की शुरूआत।
- 1901 में सिचाई आयोग स्थापित।
- प्राचीन स्मारक परीक्षण अधिनियम - 1904
- सर्वाधिक रेलवे लाईन का निर्माण इसी के काल में हुआ।
- भारतीय पुरातत्व अधिनियम।
- कागज के नोट का प्रचलन।

लॉर्ड मिण्टो द्वितीय (1905 - 10)

- 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना।
- 1907 का सूरत अधिवेशन एवं कांग्रेस का विभाजन
- 1909 का मार्ले मिण्टो सुधार, इसके द्वारा मुस्लिमों को पृथक निर्वाचन क्षेत्र दिया गया।

लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910 - 15)

- ब्रिटिश राजा जॉर्ज पंचम का भारत आगमन।
- 1911 में दिल्ली में भव्य दरबार का आयोजन।
- 1912 में भारत की राजधानी दिल्ली बनी।
- 1912 में लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया।
- 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध की शुरूआत।

लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916 - 21)

- कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916), कांग्रेस का पुन: एकीकरण, कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच गठबंधन।
- तृतीय अफगान युद्ध इसी के शासनकाल में।
- 1917 में शिक्षा पर सैंडलर आयोग का गठन।
- 1919 में रौलैट एक्ट पारित।
- 13 अप्रैल, 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड।
- खिलाफत एवं असहयोग आन्दोलन की शुरूआत।

लॉर्ड रीडिंग (1921 - 26)

- 5 फरवरी 1922 को चौरी-चौरा काण्ड।
- 1923 में स्वराज्य पार्टी की स्थापना चितरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू के द्वारा।
- प्रिंस ऑफ वेल्स का 1921 में भारत आगमन।
- 1921 में मोपला विद्रोह।
- काकोरी ट्रेन डैकती (1925)
- 1921 में एम. एन. राय द्वारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन।

लॉर्ड इरविन (1926 - 31)

- इन्होने देशी रियासतों के सम्बध में बटलर समिति (1927) की नियुक्ति।
- साइमन कमीशन का भारत आगमन (1928) में हुआ।
- 1929 में दिल्ली के असेम्बली हॉल में बम फेंका गया।
- 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का लक्ष्य।
- 1930 में लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन।

लॉर्ड वेलिंगटन (1931 - 36)

- सप्रू आयोग बेरोजगारी पर गठित किया गया
- 1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन।
- 1932 में कम्यूनल अवार्ड की घोषणा।
- बर्मा 1935 में भारत से पृथक कर दिया गया।
- 1932 में साम्प्रदायिक अधिनिर्णय के विरुद्ध गांधी और अंबेडकर के बीच पूना समझौता।
- भारत शासन अधिनियम 1935 पारित। इसके तहत भारत में संघ का निर्माण एवं संघीय न्यायालय की स्थापना का प्रावधान। इसके साथ ही प्रांतों में उत्तरदायी सरकार की स्थापना का प्रावधान।

लॉर्ड लिनलिथगो (1936 - 44)

- वेल्बी आयोग 'धन की निकासी' पर गठित किया।
- प्रांतों में उत्तरदायी सरकार के गठन के लिए प्रथम आम निर्वाचन (1936-37)
- द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ
- अगस्त प्रस्ताव (8 अगस्त 1940) की घोषणा
- मुस्लिम लीग द्वारा कराची अधिवेशन (1940) में पाकिस्तान की मांग।

- क्रिप्स मिशन का भारत आगमन (1942)
- भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरूआत (8 अगस्त 1942)

लॉर्ड वेवल (1944 - 47)

- द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ (1945)
- शिमला सम्मेलन का आयोजन (1945)
- कैबिनेट मिशन का भारत आगमन (मार्च 1946)
- अन्तिरिम सरकार का गठन हुआ (1946)
- मुस्लिम लीग द्वारा 'सीधी कार्यवाही दिवस' का आयोजन। (1946)

लॉर्ड माउन्टबेटन (1947 - 48)

- 3 जून योजना द्वारा भारत विभाजन की घोषणा (1947)
- भारत विभाजन हेतु रेडक्लिक आयोग का गठन
- 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड माउन्टबेटन नियुक्त।

EduBull.com

21- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885)

- 28 दिसंबर 1885 मुम्बई गोकुल दास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में लार्ड डफरिन की प्रेरणा से कांग्रेस की स्थापना हुई। जिससे एलन आक्टेवियन ह्यूम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन का अध्यक्षता का व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने की थी।
- लाला लाजपत राय के अनुसार कांग्रेस की स्थापना सुरक्षा कपाट से अनुप्रेरित थी ताकि उस समय भारतीय जनता में व्याप्त असंतोष की भाप को कांगेस रूपी सुरक्षा कपाट के माध्यम से निकाल दिया जाए औ इसी प्रकार भारतीय अपनी आवाज ब्रिटिश शासन तक पहुंचाकर संतुष्ट हो जाता है। दूसरे शब्दों में लाला लाजपत राय के अनुसा रयह भड़ास निकालने वाली संस्था थी।
- कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने अपनी पुस्तक An Introduction to Indian Politics में बाद में स्वीकार किया कि कांग्रेस की उत्पति डफरिन के खुरापाती दिमाग की उपज थी।

क्योंकि कोई भी भारतीय यदि ऐसी संस्था का निर्माण करता तो उसे अवश्य ही अंग्रेजों की दमनकारी नीतियो का शिकार होना पड़ता। कांग्रेस की पृष्ठभूमि में भारतीयों द्वारा स्थापित कुछ राजनीतिक संस्थाएं जो अपने अस्तित्व में तो आई लेकिन उन्हें अंग्रेजों ने विकसित नहीं होने दिया। इस प्रकार है-

1852 - मद्रास नेटिव ऐसोसिएशन - गुजुल लक्ष्मी

1870 - पूना सार्वजनिक सभा - महागोविन्द्र रानाडे

1876 - कलकत्ता Indian Association - सुरेन्द्र नाथ बनर्जी

1884 - मद्रास महाजन सभा - जी सुब्रमण्यम पी आनंद चार्लू

1885 - मुम्बई - बाम्बे प्रसीडेन्सी ऐसोशियसन - के.टी. कैलग, फिरोजशाह मेहता

1885 कांग्रेस का पथम चरण से 1905

कांग्रेस के इतिहास में 1885-1905 के बीच का काल उदारवादी राजनीति एवं राजनीति भिक्षावृत्ति का युग माना जाता है। इस युग के नेताओं के नेताओं की ब्रिटिश राजतंत्र में असीम आस्था थी तथा वे क्रमिक एवं संवैधानिक नीतियों में विश्वास करते थे। इन उदारवादी नेताओ की नीतिओं को Theory P से परिभाषित किया जाता है।

Petition - याचना

Prayer - प्रार्थना

Protest - प्रतिवाद

कांग्रेस के संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस संस्था का नाम पहले Indian Ntional Union प्रस्तावित था। परंतु दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम बदलकर Indian National Congress कर दिया गया। कांग्रेस शब्द वस्तुत अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से लिया गया है।

अगली महत्वपूर्ण बात यह है कि कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन पूना में प्रस्तावित था परंतु पूना में प्लेग फैल जाने के कारण इसे मुम्बई स्थानांतरित कर दिया गया।

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में मात्र 72 लोग उपस्थित थे। प्रथम अधिवेशन में महत्वपूर्ण नेता सुरेन्द्र नाथ बनर्जी अनुपस्थित थे।

इसके प्रमुख अधिवेशन इस प्रकार हैं-

स्थान	वर्ष	अध्यक्ष	विशेष
मुम्बई	1885	व्योमेश चन्द्र बनर्जी	
कलकत्ता	1886	दादाभाई नरौजी	
मद्रास	1887	बदरूद्दीन तैय्यबजी	कांग्रेस के प्रथम मुसलिम अध्यक्ष
इलाहाबाद	1888	जार्ज यूल	कांग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष
मुम्बई	1889	विलियम वेडरर्वन	पहली बार महिला शामिल हुई।
कलकत्ता	1890	फिरोजशाह मेहता	इस अधिवेश में सर्वप्रथम भारत की पहली महिला स्नातमक कादम्बनी गांगुली (कलकत्ता

			विश्व विद्यालय) ने सम्बोधित किया वह कांग्रेस को संबोधित करने वाली प्रथम महिला थी।
कलकत्ता	1896	एम रहीमत उल्ला सयानी	उस अधिवेशन में सर्वप्रथम बंदेमातरम् गाया गया।
कलकत्ता	1906	दादा भाई नरौजी	इस अधिवेशन में सर्वप्रथम कांग्रेस के मंच से दादा भाई नारौजी ने स्वराज की मांग की।

• भारत में 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग दयानंद सरस्वती ने किया

सूरत	1907	रासबिहारी घोष	कांग्रेस का विभाजन

दो दल स्पष्ट रूप से उभरे (1) गरम दल (2) नरमदल गरम दल के प्रमुख नेताओं में लाल, बाल, पाल एवं अरविन्द घोष

कलकत्ता	1917	एनीबेसेन्ट	कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष
कानपुर	1925	सरोजनी नायडू	कांग्रेस की प्रथम भारत महिला अध्यक्ष

• सैय्यद अहमद खान ने कांग्रेस को दुर्बल बनाने हेतु दो संगठन बनाये।

(i) मौहम्मउन एजुकेशनल कांग्रेस (1886)

(ii) 1888 में कांग्रेस में मुसलमानों का प्रवेश रोकने के लिए United Prtrietic Association की स्थापना की।

कांग्रेस के प्रथम चरण के उदारवादी नेताओं का प्रमुख योगदान यही था कि इन्होंने ब्रिटेन के द्वारा किये जा रहे भारत के आर्थिक शोषण की ओर ध्यान दिलाया। धन के बहिर्गमन का सिद्धांत (Drain Theory of wealth) सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी (ग्रैण्ड औलड मैन ऑफ इंडिया के नाम से भी जाने जाते हैं।) ने अपनी पुस्तक England Debts to India - 1897 में प्रतिपादित किया तत्पश्चात् अपनी पुस्तक Poverty and unbritish rule in India (1901) में उसकी विस्तार से व्यापार की। बाद में धन के बहिर्गमन के सिद्धांत का समर्थन आर.सीर. दत्ता ने 'अपनी पुस्तक Economic history of India under british rule में किया।

लार्ड कर्जन (1899-1905)

लार्ड कर्जन को गोपाल कृष्णा गोखले ने दूसरा औरंगजैब कहा है। लार्ड कर्जन ने 19 जुलाई 1905 में बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा की यह बंगाली एकता को तोड़ने के लिए कर्जन द्वारा किया गया कूटनीतिक प्रयास था। बंगाल का विभाजन 16 अक्टूबर 1905 से प्रभावी हुआ जिसका बंगाल में भयानक विरोध हुआ बंगाल विभाजन के विरोध में चलाये गये इस आंदोलन को बग भंग आंदोलन अथवा स्वदेशी आंदोलन कहा गया इस आंदोलन का प्रभाव लगभग सारे देश में रहा इस प्रकार अंग्रेजों का विरोध करने के लिए भारतीय राष्ट्रवादी भावनाओं को एक नयी प्रेरणा मिली यही कारण है कि लार्ड कर्जन को भारतीय राष्ट्रवाद का उत्प्रेरक भी कहते हैं।

16 अक्टूबर 1905 का दिन सम्पूर्ण बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया। गोखले ने कहा बंगाल विभाजन हमारे घाव पर नमक की तरह हैं। वस्तुत: पूर्वी बंगाल मुस्लिम बहुल क्षेत्र था जिसमें राजशाही चटगांव, ढ़ाका एवं असम के क्षेत्र शामिल थे तो दूसरी ओर पश्चिम बंगाल हिन्दू बाहुल्य क्षेत्र था। जिसमें पश्चिमी बंगाल, बिहार उड़ीसा के क्षेत्र शामिल थे।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 16 अक्टूबर 1905 के दिन को हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक दिवस के रूप में रक्षाबंधन दिवस अथवा राखी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की लोगों ने इस दिन उपवास रखा तथा गंगा स्नान किया तथा टेगोर के द्वारा लिखित गीत अमार सोनार बांग्ला एंव बंकिम चन्द्र चटर्जी के लेखन का गायन किया। अमार सोनार बांग्ला बांग्ला देश का राष्ट्रगान है।

1905 INC बनारस अधिवेशन अध्यक्ष गोपाल कृष्ण गोखले ने केवल बंगाल के लिए स्वदेशी एंव बहिष्कार आंदोलन की घोषणा की लेकिन लाल, बाल, पाल एवं अरविन्दघोष इस आंदोलन को देशव्यापी बनाने के पक्ष धर थे इस प्रकार 1905 में ही प्रारम्भिक तौर पर कोंग्रेसी नेताओं के बीच मतभेद उभरे। वस्तुत स्वदेशी आंदोलन बाद में व्यापक स्तर पर फैल गया तथा पूरे देश में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। इस स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख नेताओं में-

1. सुरेन्द नाथ बनर्जी
2. कृष्ण कुमार मित्रा
3. अश्विनी कुमार दत्ता
4. अब्दुल रसूद आदि थे।

कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं जैसे- बंगाली, हितवादी तथा संजीवनी आदि ने भी स्वदेशी आंदोलन के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाई।

बंगाल से बाहर स्वदेशी आंदोलनों के प्रमुख नेताओं में-

1. महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक ने गणेश महोत्सव तथा शिवाजी उत्सव के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन का प्रचार-प्रसार किया।
2. पंजाब एवं उत्तर प्रदेश में लाला लाजपत राय एवं अजीत सिंह (भगत सिंह के चाचा)।
3. दिल्ली में सैय्यद हैदर रजा।
4 मद्रास में चिदम्बरम पिल्लई।

स्वदेशी आंदोलन भारत का पहला ऐसाआंदोलन था जिसमें पहली बार महिलायें घरों सेबाहर निकली एवं धरने पर बैठी।

लार्ड हार्डिग (1910-1916) के काल में 1911 मे बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया वस्तुत: 1911 में ब्रिटेन के शासक जार्ज पंचम के भारत यात्रा के समय उनके सम्मान में 12 दिसंबर 1911 को दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया और इसी दिन बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा की गयी इस बंगाल विभाजन को रद्द् किये जाने वाले घोषणा पत्र पर जार्ज पंचम उनकी पत्नी क्वीन मैरी एवं जार्ज मार्ले ने हस्ताक्षर किये थे। इसी दिन ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा की गयी। लेकिन यह कार्यान्वयन 1912 मे ही सम्भव हुआ।

दिल्ली दरबार में ही रविन्द्र नाथ टैगोर ने सर्वप्रथम 'जन गण मन' का गायन किया। बाद में NIC 1911 कलकत्ता अधिवेशन अध्यक्ष विशन नारायण धर थे। में सर्वप्रथम सामूहिक रूप से गया गया। वास्तव में 1905, 1906 एवं 1907 के वर्ष भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के परिवर्तन विन्दु माने जाते है।

I.N.C. 1906 कलकत्ता अधिवेशन अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी (इस अधिवेशन में स्वदेशी आन्दोलन के 4 मूल प्रस्ताव):

स्वदेशसी बहिष्कार, स्वशिक्षा एवं स्वशासन को पुन: अनुमोदित किया तथा इसी मंच से दादा भाई नौरोजी ने सर्वप्रथम स्वराज्य की मांगग की। लेकिन स्वराज्य शब्द के अर्थ तथा उसकी प्राप्ति के तौर-तरीकों को लेकर कांग्रेसी नेताओं में मतभेद हो गया।

1907 I.N.C. सूरत अधिवेशन अध्यक्ष रासबिहारी घोष कांग्रेस का दो दलों में विभाजन हो गया-(1) नरम दल (2) गरम दल। इसी जगह से कांग्रेस के दो प्रमुख नेताओं में से विपिनचन्द्र पाल एवं अरविन्द घोष ने सक्रिय राजनीति से सन्यास ले लिया तथा तिलक को गिरफ्तार करके ब्रिटिश सरकार ने मांडले जेल (वर्मा) भेज दिया लार्ड मिन्टो ने लिखा सूरत में कांग्रेस का पतन हमारी बहुत बड़ी जीत है।

तिलक ने मांडले जेल में ही अपनी पुस्तक 'गीता रहस्य' लिखी थी।

वस्तुत 1907 के बाद कांग्रेस का राष्ट्रीय चरित्र-धूमिल सा हो जाता है। नरम दल के प्रमुख नेता गोपाल कृष्ण गोखले ने अपनी भाषा Servents of India Society (भारत सेवक समाज) के माध्यम से राजनीतिक चेतना का प्रचार-प्रसार जारी रखा।

1906 मुस्लिम लीग की स्थापना एवं मुस्लिम सांप्रदायिक की शुरूआत

1906 क्रांतिकारी आंदोलन की शुरूआत

1909 मार्ले-मिन्टो सुधार

1916 लखनऊ समझौता

1917 भारतीय राजनीति में गाँधी का आर्विभाव

मुस्लिम लीग की स्थापना

मुस्लिम लीग की स्थापना 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में नवाब सलीम उल्लाह खान के नेतृत्व में हुई इस संस्था का उद्देश्य था-ब्रिटिश राजव्यवस्था में आस्था बढ़ाना, भारतीय मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति मुसलमानों के मन में घृणा पैदा करके उन्हें कांग्रेस में शामिल होने से रोकना।

मुस्लिम लीग का पहला अधिवेशन 1908 अमृतसर (पंजाब) में सय्यद इमाम की अध्यक्षता में हुआ। इस अधिवेशन में आगा खान को मुस्लिम लीग का अध्यक्ष चुना गया। यद्यपि उन्होंने 1912 में अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। इसी अधिवेशन में लीग ने मुसलमानों के लिए एक पृथक निर्वाचक मंडल की मांग की जिसे ब्रिटिश सरकार ने तुरन्त स्वीकार कर लिया और 1909 के मार्ले मिन्टो सुधार (भारतीय परिषद अधिनियम 1909) के तहत मुसलमानों के लिए अधिकारित रूप से पृथक निर्वाचक मंडल की घोषणा कर दी गई।

मार्ले-मिन्टो सुधार (1909)

मार्ले-मिन्टो सुधारों का मुख्य उद्देश्य भारतीय राष्ट्रवादी खैमे में फूट डालकर मुस्लिम सांप्रदायिकता को बढ़ाना था जिसके पीछे फूट डालो और राज करो की नीति कार्य कर रही थी। इस अधिनियम को भारत विभाजन की आधारशिला भी कहा जाता है जिसके तहत मुसलमानों के प्रतिनिधित्व के आधार पर पृथक निर्वाचन मण्डल स्थापित किये गये और इस प्रकार पहली बार देश में जातीय एवं धार्मिक आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों का बंटवारा किया गया। लार्ड मिन्टो ने स्वयमं लिखा ''हम पृथक निर्वाचन मंडल स्थापित करके नागों के दाँत वो रहे है जिसका परिणाम भयंकर होगा।''

लखनऊ समझौता 1916 (कांग्रेस-लीग पैक्ट 1916)

INC, 1916 लखनऊ अध्यक्ष 'अम्बिका चरण मजूमदार' देश में बढ़ रही राष्ट्रवादी भावना और राष्ट्रीय एकता की आकांक्षा के कारण 1916 के कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटी-

1. मुस्लिम लीग एवं कांग्रेस ने जल्द से जल्द स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सहयोगात्मक रूख अपनाने का निर्णय लिया और लखनऊ समझौते पर हस्ताक्षर किये। लीग और कांग्रेस को करीब लाने में जिन्ना एवं तिलक की महत्वपूर्ण भूमिका थी। लखनऊ समझौता हिन्दू-मुस्लिम एकता के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण कदम था परन्तु इस समझौते ने कांग्रेस ने विधान परिषदों में मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग को स्वीकार कर लिया अर्थात कांग्रेस ने 1909 के मार्ले-मिन्टो सुधारो को स्वीकार कर लिया। लेकिन इसमें हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने हिन्दू-मुस्लिम जनता को शामिल करते हुए अपने राजनीतिक दृष्टिकोण को धर्मनिरपेक्ष बनाने के लिए प्रयास नहीं किया जिससे कि वे समझ सके कि राजनीति में हिन्दू या मुसलमानों के रूप में उनके हित अलग-अलग नहीं है इसलिए लखनऊ समझौते के बाद भी भारतीय राजनीतिक में साम्प्रदायिकता के सिर उठाने की गुंजाइश बाकी रह गयी चूंकि लखनऊ समझौते में अप्रत्यक्ष रूप से यह समाहित था कि बहुसंख्यक हिन्दुओं के देश में मुसलमानों के हित सुरक्षित नहीं है अतः मदन मोहन मालवीय ने लखनऊ समझौते का विरोध किया।
2. दूसरी महत्वपूर्ण घटना-1916 के कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक को पुनः कांग्रेस में शामिल कर लिया गया अर्थात नरमदल और गरम दल पुनः एक जुट हुये।

22. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी का आगमन

गाँधी का जीवन परिचय-

जन्म – 2 अक्टूबर 1869

स्थान – पोरबंदर (गुजरात) पुराना नाम सुदामापुरी

बचपन का नाम – मोनियो

पूरा नाम – मोहन दास करमचन्द्र गांधी

माँ का नाम – पुतली बाई

पिता का नाम – करमचन्द्र गांधी

पत्नी – कस्तूरबा गांधी

पुत्र – हरीलाल, रामदास, मणिलाल, देवदास

गाँधी का पांचवा मानसपुत्र – जमना लाल बजाज

गाँधी का प्रमुख पुस्तकें :

1. लेखन के रूप में गाँधी की पहली पुस्तक ''The London Guide'' थी।
2. Indian Franchiese – इस पुस्तक में गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों की दुर्दशा का विवरण दिया है।
3. A Guide to Health – सात्विक आहार सम्बन्धी पुस्तक
4. हिन्द स्वराज
5. Constructive Programme
6. बाल पोथी एवं नीति धर्म- बच्चों की नैतिक शिक्षा हेतु लिखी गई पुस्तक
7. My early Life अपने प्रारम्भिक जीवन के सन्दर्भ में
8. My Child Hood
9. Indian opinion
10. सर्वोदय-जीन रस्किन की पुस्तक ''अन टू दि लास्ट' का गुजराती अनुवाद'
11. Story of Satyagrahi
12. Songs from the prison (song of Indian: सरोजनी नायडू)

गाँधी के द्वारा संपादित प्रमुख पत्र :

1. Indian opinion (1893) दक्षिण अफ्रीका में प्रकाशित
2. नवजीवन
3. यंग इन्डिया
4. हरिजन
5. हरिजन बंधु

गाँधी की प्रमुख उपाधियाँ :

1. कर्मवीर- दक्षिण अफ्रीका में उनके सहयोगियों के द्वारा दी गई उपाधि।
2. कुली वैरिस्टर : दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों के द्वारा गाँधी को दिया गया एक मजाकिया नाम।
3. भंगी शिरोमणि : दक्षिण अफ्रीका में गांधी के द्वारा किये गये सफाई के कार्यों के कारण उन्हें दिया गया एक उपनाम।
4. महात्मा : भारत में चम्पारण आन्दोलन के दौरान रवीन्द्रनाथ टैंगोर के द्वारा दी गई उपाधि।
5. भर्ती करने वाला सार्जेन्ट : प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना में अंग्रेजों की ओर से लड़ने के लिए भारतीय युवकों को प्रेरित करने के कारण अंग्रेजों ने गांधी को यह उपाधि दी।
6. कैसर-ए-हिन्द- प्रथम युद्ध के दौरान गांधी को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि मिले जिसे असहयोग आन्दोलन के समय वापस कर दी।
7. अदानंगा फकीर-द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1932 के दौरान फ्रेंक मोरेस तथा विन्सटन चार्चित के द्वारा की गई टिप्पणी।
8. देशद्रोही फकीर: विन्सटन चर्चिल के द्वारा दिया गया नाम
9. मलंग बाबा : पश्चिमी सीमा प्रांत के कबीलाई, लोगों के द्वारा गांधी को दिया उपनाम।
10. बापू : जवाहर लाल नेहरू द्वारा दिया गया प्यार का नाम।
11. राष्ट्रपिता : सुभाष चन्द्रबोस के द्वारा दिया गया सम्बोधन
12. **One Man Boundary Force:** माउन्ट वेटन द्वारा गांधी को दिया गया नाम।

गांधी ने 1891 मे लदन से वैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की और वकालत के लिए बम्बई आ गये लेकिन इनकी वकालत चल नहीं पायी। इसी संदर्भ में एक मुस्लिम व्यापारी दादा अब्दुल ने इन्हें अपनी फर्म की कानूनी कार्यवाही को संपादित करने के लिए नियुक्त किया और 1893 वे दादा अब्दुला के एक मुकदमें की पैरवी के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गये वहाँ वे सर्वप्रथम नटाल बन्दरगाह पर उतरे और वही के सुप्रीम कोर्ट में अधिवक्ता के रूप में अपना रजिस्ट्रेशन करवाया। दक्षिण अफ्रीकी प्रवास के दौरान वहा गांधी ने अंग्रेजों के द्वारा किये जा रहे भारतीयों एवं अफ्रीकियों के शोषण को नजदीक से देखा और उसके विरूद्ध आवाज उठाई।

डरबन से प्रिटोरिया जाते समय प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद उन्हें मेरित्सवर्ग नामक स्टेशन पर अंग्रेजों ने धक्के मारकर उतार दिया। इस घटना ने गांधी के मन को झकझोर दिया। अत: उन्होंने भारतीय समुदाओं को संगठित करने और उनकी मांगों को जोरदार ढंग से उठाने हेतु 1894 में नटाल इडिण्यन कांग्रेस की स्थापना की।

30 मई 1902 को गांधी ने अपने सहयोगी जर्मन शिलाकार कॉलेज बाख की मदद से टॉलस्टॉप फार्म की स्थापना की और यही रहने लगे।

तदुनपरान्त 1904 में डरबन के निटक "फिनिक्स आश्रम" बनाया हिन्द स्वराज नामक लेख में गांधी ने अफ्रीका में अंग्रेजों के द्वारा किये जा रहे शोषण की और ध्यान दिलाया वस्तुत: गांधी दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के लिए एक देवदूत के समान ही थे क्योंकि एक मात्र वे ही ऐसे व्यक्ति थे जो अंग्रेजों से उनकी भाषा में बात कर सकते थे। गांधी 9 जनवरी 1915 को भारत (बम्बई) लौंटे वर्तमान में इसी तारीख को भारत सरकार प्रवासी भारतीय दिवस मनाती हैं। वापिस आकर गांधी ने स्वयं के रहने के लिए अहमदाबाद के कोचरव नामक स्थान पर श्री जीवन लाल वैरिस्टर का मकान किराये पर लिया और यही पर 25 मई 1915 को "हृदय कुंज" आश्रम (सत्याग्रह आश्रम) की स्थापना की जो कालान्तर में साबरमती नदी के तट पर स्थानान्तरित कर दिया गया और उसका नाम बदलकर साबरमती आश्रम कर दिया गया।

- भारत आने के बाद गांधी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना गुरू माना क्योंकि गोखले ने ही उन्हें भारतीय जनमानस से परिचित होने के लिए उन्हें एक वर्ष तक भारत का दौरा करने की सलाह दी।
- गांधी का प्रिय भजन- "वैष्णव जन तो तेने कहिए पीर पराई जाने तो" नरसी मेहता का भजन है।

  30 जनवरी 1948 विड़ला हाउस, शाम को 5:15 पर नाथूराम गोड़से ने इटली से निर्मित 9a.m. की स्वचालित बोरेट्टा गान से गांधी की हत्या कर दी।
- महात्मा गांधी की हत्या में कुल आठ अभियुक्त शामिल है जिनमें प्रमुख हैं- नाथूराम गोड़से, नाना आप्टे, विष्णु करके, दिगम्बर बड़गे, शंकर विश्वैरया, मदन लाल पाहवा आदि।
- इन अभियुक्तों पर लाल किला दिल्ली में मुकदमा चलाया गया इस मामले की सुनवाई न्यायधीश आत्माचरण की विशेष अदालत में की गयी गोड़से एवं आप्टे को फांसी की सजा सुनाई गयी। 5 नवम्बर 1949 को इन दोनों को अम्बाला जेल में फांसी दे दी गयी यह आजादी के बाद की पहली फांसी है।
- गांधी की मृत्यु पर तत्कालीन अमेरिकी राजदूत चेरन्टर वोटस ने लिखा "संसार के इतिहास में किसी भी महान व्यक्ति की शव यात्रा में आज तक इतने व्यक्ति शोकाकुल होकर नहीं गये जितने की गांधी के साथ"
- महान वैज्ञानिक अल्वर्ट आइस्टीन ने लिखा – "आने वाली पीड़िया शायद ही विश्वास करे कि पृथ्वी पर गांधी नामक हाड़-मांस के पुतले में कभी जन्म भी लिया था"

गांधी का "सत्याग्रह" जिसका शाब्दिक अर्थ है सत्य के प्रति अटल रहना। इसका उद्देश्य धैर्यपूर्वक कष्ट सहकर, अहिंसात्मक एवं उचित तरीके से सत्य को प्रकट करना भूलों को सुधारना एवं भूल करने वालों का हृदय परिवर्तित कर देना है सत्याग्रह का अर्थ स्पष्ट करते हुए गांधी ने कहां.... यह आत्मा का सार तत्व हैं। गांध ी जी को सत्याग्रह की प्रेरणा हैनरी डेविड थीरो के निबन्ध "Civil Diso bedience" से मिली जिसका प्रथम प्रयोग गांधी ने निष्क्रिय प्रतिरोध के रूप में 1906 में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के पक्ष में किया था।

कालान्तर में यह निष्क्रिम प्रतिरोध ही "सत्याग्रह" में बदल गया। वस्तुत: गांधी जी ने अपने अखबार Indian opinion के पाठकों के लिए, "निष्क्रिम प्रतिरोध" के लिए एक स्वतंत्र शब्द के सजृन के लिए एक प्रतियोगिता का आयोजन किया था इसी प्रतियोगिता में एक पाठक मगनलाल गांधी ने सत- आग्रह की संधि करके "सदाग्रह" शब्द गांधी को भेजा जिसे बाद में गांधी ने परिवर्तित करके "सत्याग्रह कर दिया।"

गांधी के द्वारा चलाये गये प्रमुख आन्दोलन

चम्पारण आन्दोलन 1917 :

यह गांधी का पहला आन्दोलन था वस्तुत: बंगाल बिहार में प्रचलित तिनकठिया पद्धति के अनुसार किसानों को अपनी जमीन के 3/20 भाग में अर्थात 15 प्रतिशत हिस्से में अनिवार्य किसानों को जमीन की उर्वरता प्राय नष्ट हो रही थी अत: राजकुमार शुक्ल के आंमत्रण पर गांधी ने चम्पारण के कृषकों का नेतृत्व संभाला और अंतिम रूप से कृषकों को उनकी भू-स्वामित्व के कागजात अंग्रेजों से वापिस दिलाये साथ ही अंग्रेजों से 25 प्रतिशत क्षतिपूर्ती भी दिलवाई तथा तिनकठिया पद्धति से हमेशा के लिए छुटकारा भी दिलवाया। इस आन्दोलन के दौरान रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गांध ी को महात्मा की उपाधी दी इस आन्दोलन में गांधी के सहायक नेताओं में डॉ राजेन्द्र प्रसाद नरहरि पारिख, महादेव देसाई, जे.वी. कृपलानी एवं मजहीरूलहक आदि थे।

एन.जी. रंगा ने गांधी के चम्पारण आन्दोलन का विरोध किया।

अहमदाबाद की श्रमिक हड़ताल 15 मार्च 1918

यह गांधी का दूसरा आन्दोलन था जिसमें मुख्य विवाद मिल मालिकों एवं श्रमिकों के बीच प्लेग बोनस को लेकर था। गांधी ने श्रमिकों के पक्ष में आमरण अनशन की शुरूआत की अर्थात् इस संदर्भ में यह गांधी का पहला आन्दोलन था। जिसमें गांधी ने सत्याग्रह के एक अस्त्र के रूप में सर्वप्रथम भूख हड़ताल का प्रयोग किया गांधी का यह आन्दोलन भी सफल रहा और मिल मालिकों को 35 प्रतिशत वोनस श्रमिकों को देना पड़ा।

खेड़ा (गुजरात) का कृषक आन्दोलन 1918

गांधी का यह तीसरा आन्दोलन बम्बई सरकार के विरूद्ध था। किसानों की फसल चौपट हो जाने पर सरकार ने लगान माफ नहीं की थी। गांधी के नेतृत्व में अन्ततः सरकार को झुकना पड़ा इस आन्दोलन के दौरान विटठलभाई पटेल गांधी के अनुयायी बने।

- संदेह की स्थिति में कही-कही बल्लभभाई पटेल का नाम भी लिया जाता है।

रौलेट सत्याग्रह, 1919

यह गांधी का चौथा आन्दोलन था प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पूरे काल में क्रांतिकारियों का दमन जारी रहा था। साथ ही साथ ब्रिटिश सरकार ने सरकारी सुधारों से संतुष्ट न होने वाले राष्ट्रवादियों को कुचलने के लिए यह कानून बनाया जिसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को केवल संदेह आधार पर बिना मुकदमा चलाये अनिश्चित काल के लिए जेल में बंद किया जा सकता था। गांधी ने इसे काला कानून की संज्ञा दी जबकि नेहरू ने कहा कोई वकील नहीं कोई कोई अपील नहीं। (क्योंकि रौलेट एक्ट के तहत गिरफ्तार किये गये व्यक्ति को न तो कोई अपील करने का अधिकार था और न ही कोई दलील देने का अधिकार था।)

- रोलेट एक्ट के विरोध में मुहम्मद अली जिन्ना ने वायसराय की परिषद से इस्तीफा दे दिया और कहा कि जो सरकार शांत काल में यह स्वीकार करती हैं। वह स्वयं को एक सभ्य सरकार कहलाने का अधिकार खो बैठती है।
- भारतीयों के विरोध के बावजूद भी रोलेक्ट एक्ट पारित हो गया जिसके विरोध में गांधी ने फरवरी 1919 में सत्याग्रह सभा बनायी और कानून का पालन न करने शांति पूर्वक गिरफ्तारियां देने के लिए कहा इसी क्रम में गांधी ने 6 अप्रैल 1919 को राष्ट्रीय अपमान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की और देश व्यापी सत्याग्रह एवं हड़ताल का आहवान किया। ब्रिटिश सरकार ने व्यापाक क्रम में गिरफ्तारियों को इसी क्रम में डा. सैफुद्दीन किचलू एवं डा. सतपाल की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए जलिया बाग, अमृतसर (पंजाब) में 13 अप्रैल 1919 को एक शांतिपूर्ण सभा का आयोजन किया था। ठीक उसी समय ब्रिटिश कमाण्डर- बिग्रेडियर जनरल- रेजिनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर (12 - डायर) ने वहाँ पहुँचकर बिना चेतावनी दिये निहत्थी जनता पर अधाधुंध गोलियाँ चलायी जिसमें हजारो लोग मारे गये। जनरल डायर अपनी स्वाभाविक मौत 1927 में मरा।
- ठीक इसी समय जलियाँ वाला बाग हत्याकांड के समय पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर -माइकल ओ डायर था जिसने इस हत्यांकाड की स्वीकृत दी थी। करीब 21 वर्षो बाद 13 मार्च 1940 को लंदन में सरदार उधम सिंह ने माइकल ओ डायर की हत्या कर दी और इस जघन्य हत्याकांड के समय सरदार उद्यम सिंह की उम्र 16 वर्ष थी।
- इस जघन्य हत्याकांड से दुखी होकर गांधी ने 18 अप्रैल 1919 को अपना यह सत्याग्रह आंदोलन वापिस ले लिया इसी समय एनी बेसेन्ट ने गांधी को राजनीति में बच्चा कहा। इस प्रचार गांधी का यह अहिंसक आन्दोलन असफल रहा।

हण्टर कमेटी, 1919

जलिया वाला बाग हत्याकांड़ की जांच के लिए ब्रिटिश सरकार ने हण्टर कमेटी का गठन किया जिसके सदस्य थें-

1. लार्ड हण्टर (अध्यक्ष)
2. सर जार्ज बैरो
3. सर थामस स्मिथ
4. रस्किन
5. मिस्टर राइस

भारतीयों सदस्यों में- चमनलाल सीतलवाड़, साहब जादा सुल्तान, जगत नारायण।

हण्टर कमेटी की रिपोर्ट में R डायर को निर्दोष बताते हुए उसे ब्रिटिश साम्राज्य के शेर की उपाधि दी गयी। कर्नल जानसन ने कहा यदि दोबारा मौका मिले तो में भी ऐसा करूंगा।

तहकीकात कमेटी (1919)

कांग्रेस ने हण्टर कमेटी की रिर्पोट को लीपापोती कहा और जलिया वाला बाग हत्याकांड की जांच के लिए एक तहकीकात कमेटी नियुक्त की जिसके सदस्यों में-

1 मदन मोहन मालवीय (अध्यक्ष)
2. महात्मा गांधी
3. मोतीलाल नेहरू
4. चितंरजन दास
5. अब्बास तैयद
6. पुपुल जयकर

तहकीकात कमेटी की रिपोर्ट में ब्रिटिश सरकार को दोषी मानते हुए उस प्रकरण से संबंधित दोषी व्यक्तियों को कड़ी सजा देने की बात कहीं गयी जिसे ब्रिटिश सरकार ने अनसुना कर दिया। अब गांधी ने असहयोग चलाने का निर्णय लिया।

INC सितम्बर 1920 कलकत्ता विशेष अधिवेशन अध्यक्ष लाला लाजपत राय इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार भारत में विदेशी शासन के विरूद्ध सीधी कार्यवाही करने का विधान परिषदों का वहिष्कार करने असहयोग आंदोलन शुरू करने की बात तय की।

असहयोग आंदोलन (सितम्बर 1920-1922)

- असहयोग आंदोलन के तहत विदेशी वस्तुओं का वहिष्कार सरकारी नौकरियों से इस्तीफा कर ना चुकाना तथा अस्पृश्यता का अंत आदि बाते शामिल थी।
- मद्यनिषेध कार्यक्रम इस आंदोलन का हिस्सा नहीं था तथा यह अभियान भी असफल रहा।
- दिसम्बर 1920 INC नागपुर अधिवेशन, अध्यक्ष-वी राधवाचारी इस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन की पुनः पुष्टि की गयी तथा इसी अधिवेशन में गांधी ने एक वर्ष में स्वराज्य का नारा दिया।
- 5 फरवरी 1922 गोरखपुर चौरी-चौरा काण्ड गांधी अत्यंत क्षुब्ध हुए और 12 फरवरी, 1922 गुजरात बारदोली में क्रांग्रेस वर्किंग कमेटी की आपातकालीन बैठक में गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस लेने की घोषणा कर दी। इस घोषणा को बारदोली घोषणा के नाम से भी जाना जाता हैं।

  प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी आत्मकथा The Indian Struggal में लिखा "जिस समय जनता का उत्साह अपनी चरम सीमा को छूने वाला था उस समय पीछे हटने का आदेश देना किसी राष्ट्रीय अनर्थ से कम नहीं था.... मैंने देखा गांधी जिस तरह बार-बार गोल-मोल कर रहे थे इस पर उनके सहयोगी भी दुख एवं क्रोध में अपने से बाहर हो रहे थे।
- यह वही समय था जब कुछ प्रमुख कांग्रेसी नेताओं ने कांग्रेस की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया जो निम्न है।

  (i) जिन्ना
  (ii) एनी वेसेन्ट
  (iii) G.S. खर्पेड़
  (iv) विपिन चन्द्रपाल आदि।

साइमन कमीशन (3 फरवरी, 1928)

1919 के भारतीय परिषद अधिनियम के प्रावधानों की समीक्षा के लिए 8 नवम्बर 1927 को ब्रिटिश सरकार ने Indian Statu Tory Commision का गठन किया जिसे आमतौर पर साइमन कमीशन के नाम से जाना जाता हैं। सात सदस्यी इस कमीशन में कोई भी भारतीय शामिल नही था और इसके पीछे यह धारणा कार्य कर रही थी कि स्वशासन के लिए भारतीयों की योग्यता अथवा अयोग्यता का फैसला विदेशी करेंगे और यह भारतीयों के विरोध का मुख्य कारण था। 3 फरवरी 1928 को यह कमीशन भारत पहुँचा उसके सात सदस्यों में।

(i) जान साइमन (अध्यक्ष) (लिवरल पार्टी)
(ii) मिस्टर बायम (Conservative party)
(iii) स्ट्रैथ कोना
(iv) लेन फाक्स
(v) कैडगेन
(vi) एटली (Labour party)
(vii) वर्नोन हार्ट शोन (Labour party)

- यहाँ तक कि जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने भी साइमन कमीशन का विरोध किया परन्तु मोहम्मद शफी के नेतृत्व में मुस्लिम लीग के एक गुट ने साइमन कमीशन का समर्थन किया था। समर्थन करने वाले एक प्रमुख नेता भीमराव अम्बेडकर थे।
- लाहौर में लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन का विरोध करते हुए एक शांतिपूर्ण जूलुस निकाला था जिसका नारा था। "साइमन कमीशन वापिस जाओं" पुलिस अधिकारी साण्डर्स के आदेश पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया। इस प्रहार में लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गयी तथा पंडित गोविन्द वल्लभपन्त का एक पैर टूट गया जो आजीवन अंपग हो गये।
- लखनऊ में खलीक उज्जमा ने बड़े-बड़े गुब्बारों पर साइमन कमीशन वापस जाओ लिखकर अपना विरोध उतारा।

नेहरू रिपोर्ट (अगस्त 1928)

साइमन कमीशन में किसी भी भारतीय का शामिल न होने कारण जब कांग्रेस ने विरोध किया तो इस पार भारत सचिव लार्ड वर्केन हेड् ने भारतीयों को चुनौती दी कि वे संवैधानिक सुधारों की एक ऐसी योजना प्रस्तुत करे जो सभी दलों को स्वीकार हो।

अब मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में संवैधानिक सुधारों की एक वैकल्पिक योजना बनाकर साइमन कमीशन की चुनौती का जबाव देने का प्रयास किया गया। नेहरू रिपोर्ट की कमेटी के नौ सदस्य में-

(i) मोती लाल नेहरू

(ii) तेजबहादुर सप्रु

(iii) एन. एम. जोशी

(iv) सुभाष चन्द्र बोस

(v) एम. एस. अणे

(vi) एम. आर जयकर

(vii) अली इमाम

(viii) शोएव कुरैशी

(ix) मंगल सिंह सन्धु

चूंकि नेहरू रिर्पोट में साम्प्रदायिक आधार पर पृथक आधार पर मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल की मांग को पूर्णत: अस्वीकार कर दिया गया अत: जिन्ना ने नेहरू रिर्पोट को खारिज कर दिया और इसके प्रत्युत्तर में 14 सूत्रीय मांगे पेश की। इसके पश्चात् क्रमश: उत्तरोत्तर साम्प्रदायिकता का विकास हुआ। जवाहर लाल नेहरू रिर्पोट में पूर्ण स्वतंत्रता जैसी कोई बात नहीं थी अत: जवाहर लाल नेहरू के साथ-साथ स्वयं सुभाष चन्द्र बोस भी नेहरू रिर्पोट से अंसतुष्ट थे।

लाहौर अधिवेशन (1929)

INC लाहौर अधिवेशन अध्यक्ष जवाहल लाल नेहरू में कांग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता घोषित किया गया तथा 31 दिसम्बर 1929 की मध्य रात्रि को भारतीय स्वंतत्रता का ध्वज फहराया गया तथा उसी अधिवेशन में 26 जनवरी को "पूर्ण स्वतंत्रता दिवस" के रूप में स्वाधीनता दिवस मनाने की घोषणा की गयी तद्नुसार 26 जनवरी 1930 को हमारा प्रथम स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस प्रकार इस तारीख को यादगार बनाये रखने के लिए ही हमारा संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-31-1932-34)

30 जनवरी 1930 गांधी ने अपने समाचार पत्र यंग इण्डिया के माध्यम से वायसराय लार्ड इर्विन को अपनी 11 सूत्रीय मांगे पेश की जिसमें मुख्य मांग नमक कर हटाने की थी। परन्तु वायसराय इर्विन ने ध्यान नहीं दिया अत: गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने की घोषणा की। सविनय अवज्ञा का अर्थ अहिंसात्मक पूर्वक विनय पूर्वक सरकारी कानूनों की अवज्ञा करना अर्थात् उल्लघन करना, चूंकि इस आंदोलन की मुख्य मांग नमक कर हटाने की थी अत: सविनय अवज्ञा आंदोलन को नमक आंदोलन भी कहते हैं।

दाण्डी मार्च (12 मार्च-6 अप्रैल 1930)

सविनय अवज्ञा आंदोलन 12 मार्च 1930 के गांधी के साबरमती के आश्रम से आरंभ हुआ जिसमे गांधी के साथ उनके 78 सहयोगी शामिल थे। यह पैदल यात्रा 6 अप्रैल 1930 को नौसारी जिले के दाण्डी तट पर समाप्त हुई। यह 385 किमी. की पैदल यात्रा गांधी ने 24 दिन में पूरी की और 25 वें दिन दाण्डी समुद्र तट पर पहुँचकर गांधी ने समुद्र का जल अथवा बालू को हाथ में उठाकर प्रतीकात्मक रूप से नमक बनाने की घोषणा की और कहा कि "में ब्रिटिश शासन को अभिशाप मानता हूँ। ..... में इस ब्रिटिश शासन प्रणाली को नष्ट करने पर आभादा हूँ.... अब राजद्रोह मेरा धर्म बन चुका है।"

इस प्रकार 6 अप्रैल 1930 को विधिवत रूप से पूरे देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत हुई।

- गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को शुरू करने की तारीख 6 अप्रैल इसलिए रखी थी क्योंकि देश में प्रति वर्ष 6 अप्रैल से 13 अप्रैल के बीच जलिया वाला बाग हत्याकाण्ड के विरोध में मारे गये शहीदों की शहादत एवं श्रद्धाजली के रूप में इस सप्ताह के विद्रोह सप्ताह के रूप में मनाय जाता था
- सविनय अवज्ञा आंदोलन की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर ब्रिटिश सरकान ने गांधी को 5 मई 1930 को गिरफ्तार करके यरवदा जेल में बन्द कर दिया।
- बम्बई (महाराष्ट्र) में नमक आंदोलन का नेतृत्व गांधी के पुत्र मणिलाल ने तथा धरसाणा में सरोजनी नायडू ने नेतृत्व किया और नमक के सरकारी गोदाम पर अहिंसात्मक प्रदर्शन किया प्रतियोत्तर में ब्रिटिश सरकार का भयानक लाठी चार्ज और इस घटना का प्रत्यक्षीदर्शी पत्रकार वेब मिलर था जिसने इस घटना का विवरण दिया।
- उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत में सविनय अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व खान अब्दुल गफ्फार खान ने किया। जिन्हें सीमान्त गांधी (Frontier Gandhi) बादशाह खान, फख्र-ए-अफगान जैसी उपाधियों से विभूषित किया जाता है। बादशाह खान पहली ही इस क्षेत्र में खुदाई-खिदमतगार (Servant of god) 1929 आंदोलन चला रहे थे। चूंकि इस आंदोलन को लाल कुर्ती आंदोलन (Red shirts movement) भी कहा जाता है। वस्तुत: लाल रंग के कुर्ते सामान्यत: सफेद अथवा अन्य रंगों के कपड़ों की तुलना में कम गन्दे होते थे। इसलिए ये स्वयं सेवक लाल रंग के कपड़े पहनते थे। यहाँ के अहिंसक प्रदर्शनकारियों पर 18वी रायल गढ़वाली रायफल्स रेजीमेंट के सिपोहियों ने गोली चलाने से इनकार कर दिया। इस रेजीमेंट का नेतृत्व चन्द्रसिंह गढ़वाली के पास था।

(i) कांग्रेस के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता तरूणराम ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का विरोध किया था।

(ii) खान अब्दुल गफ्फार खान ने 1928 में भाषा की

एक समाचार पत्रिका पठतून निकाली जिसका नाम बदलकर 1931 में दासरोजा कर दिया।

(iii) अब्दुल गफ्फार खान को 1987 में भारत रत्न का पुरस्कार दिया गया वे इस सम्मान को पाने वाले पहले विदेशी नागरिक थे। खान ने 1947 के बटवारे के बाद पाकिस्तान की नागरिकता स्वीकार कर ली थी।

गोलमेज सम्मेलन

प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवम्बर 1930-19 जनवरी 1931)

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (17 सितम्बर 1931-1दिसम्बर 1931)

तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 नवम्बर 1932-24 दिसम्बर 1932)

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

साइमन कमीशन द्वारा सुझाए गये सुधारों पर विचार करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटेन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया।

स्थान- सेंट जेम्स पैलेस

अध्यक्षता - ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैग्जे मैकडोनॉल्ड

शामिल कुल प्रतिनिधियों की संख्या- 89

प्रमुख नेताओं में-

1. उदारवादी नेता- सी. वाई. चिन्तामणि, तेजबहादुर सप्रु, श्री निवास शास्त्री
2. मुस्लिम लीग: मुहम्मद अली जिन्ना, आगा खान, फजल-उल-हक , मु. शफी, मु. अली आदि।
3. दलित वर्ग- बी. आर. अम्बेडकर
4. एग्लो इंडियन प्रतिनिधि- के. टी0 पॉल
5. देशी रियासतें- अलवर, बीकानेर, भोपाल, पटियाला, बड़ौदा, ग्वालियर, मैसूर आदि के कुल 16 प्रतिनिधि।

- कांग्रेस ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन का वहिष्कार किया।
- विपिन चन्द्रा (आधुनिक इतिहासकार) ने लिखा कांग्रेस को शामिल किये बिना भारतीयों मामलों पर आयोजित कोई सम्मेलन वैसी ही था जैसे श्री राम के बिना रामलीला का आयोजन।
- ब्रिटिश सरकार जानती थी कि यदि कांग्रेस की सहमति के बिना भारत में किसी भी प्रकार के संविधानात्मक फेर-बदल किये जाते है तो वे भारतीय जनता को स्वीकार्य नहीं होंगे अत: ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैग्जे मैक डोब्लॉक ने वायसराय इर्विन को आदेश दिया कि वे किसी तरह से गांधी को द्वितीय गोलमेज में शामिल होने के लिए राजी करे। अब वायसराय इर्विन ने 26 जनवरी 1930 को गांधी को बिना शर्त जेल से रिहा कर दिया। गांधी इस समय पूना की यरवदा जेल में थे।

गांधी-इर्विन समझौता/गांधी-इर्विन पैक्ट/ दिल्ली समझौता समय

- गांधी ने तात्कालिक रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया और कांग्रेस दूसरे गोल मेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए तैयार हो गयी।
- ब्रिटिश सरकार ने समस्त अहिंसक राजनैतिक कैदियों को तत्काल रिहा कर दिया।
- साथ ही साथ ब्रिटिश सरकार ने विदेशी वस्त्र विदेशी शराब की दुकानों पर धरना देने का अधिकार को मान्यता दी।

वास्तव में जवाहर लाल नेहरू जैसे नेता एवं युवा वर्ग इन समझौते से असन्तुष्ट था क्योंकि एक साल के प्रयत्न के बाद भी अब पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य अब व्यवहारिक तौर पर छोड़ सा दिया गया था। तो दूसरी ओर गांधी ने भगत सिंह, राजगुरू एवं सुखदेव को फांसी को आजीवन कारावास की सजा में बदलवाने के विषय में कोई ठोस निर्णय नही लिया था

द्वितीय गोल मेज सम्मेलन (17 सितम्बर 1931-1 दिसम्बर 1931)

इस सम्मेलन में कुल 31 प्रतिनिधियों ने भाग लिया गांधी एवं अन्य प्रतिनिधि एस.एस. राजपूताना जहाज से इंग्लैण्ड पहुँचे। अन्य शामिल प्रतिनिधियों में प्रमुख है।

ऐनी वेसेन्ट

सरोजनी नायडू

बी. आर. अम्बेडकर

मुहम्मद अली जिन्ना

आगा खाँ

घनश्याम दास बिड़ला

महादेव देसाई आदि।

इसी सम्मेलन के दौरान फैंक मॉरेस ने टिप्पणी की थी "ब्रिटिश प्रधानमंत्री से वार्ता के लिए इस अधनंगे फकीर के द्वारा सेन्टजेग्स पैलेस की सीढ़िया चढ़ने का दृश्य देखना अपने आप मे 'एक विस्मयकारी प्रभाव उत्पन्न करने वाला हैं गांधी की जोरदार वकालत के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार ने डोमिनियम स्टेप्स तत्काल देकर उसके आधार पर

- भारतीयों की स्वतंत्रता की बुनियादी मांग को मानने से इनकार कर दिया।

गांधी की कोशिशों के बावजूद भी द्वितीय गोलमेज सम्मेल असफल रहा ऐसा कहा गया कि गांधी रोटी लेने गये वे पत्थर लेकर लौटे गुजराती कवि मेद्यानी ने गांधी की असफलता पर

एक कविता लिखी "छेल्लो कटोरो जहरनो आ पी जाओ वापू"। अर्थात् वापू जहर का आखिरी घूंट भी पी जाओ।

28 दिसम्बर 1931 गांधी वापिस भारत लौटे और उन्होनें स्थगित सविनय अवज्ञा आंदोलन पुन: शुरू करने का विचार किया लेकिन अब यह आंदोलन प्रभावी नही रहा अन्तत: अप्रैल 1934 गांधी ने अधिकाधिक रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेने की घोषणा की। गांधी के प्रखर आलोचक सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि गांधी एक राजनीतिक नेता के रूप में विफल हो चुके है।

मैक डोनॉल्ड का साम्प्रदायिक अधिनियम (कम्युनख इनवार्ड)

ब्रिटिश सरकार ने देश में बढ़ रही राष्ट्रवादी भावना को दबाने के लिए फूट डालो और राज करो की नीति पर अधिक संक्रियता से ध्यान देना शुरू किया इस नीति के तहत भारत का प्रत्येक अल्पसंख्यक समुदाय अंग्रेजी सत्ता का समर्थन कर रहा था इस नीति का वास्तविक खुलासा 16 अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैके डोनाल्ड की साम्प्रदायिक घोषणा करने से हुआ। जिसके तहत प्रत्येक अल्पसंख्यक समुदाय हेतु पृथक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था कर दी। गांधी इस घोषणा से वहुत दुखी हुए।

गांधी की प्रतिकिया और आमरण अनशन (20 सितम्बर, 1932)

गांधी इस समय यरवदा जेल में थे गांधी ने ब्रिटिश सरकार (प्रधानमंत्री मैंक डोनाल्ड) को पत्र लिखकर धमकी दी कि यदि सरकार दलितो अथवा अछूतो के लिए पृथक निर्वाचक मंडलो को समाप्त नहीं करेगी तो इसके विरोध में वे आमरण अनशन पर बैठ जायेगे परन्तु सरकार ने कोइ ध्यान नहीं दिया अत: गांधी 20 सितम्बर 1932 को आमरण पर बैठ गये और उनका स्वास्थ तेजी से गिरने लगा। अब शीर्षस्थ नेताओं ने अम्बेड़कर से वार्ता की।

पूना ऐक्ट (26 सितम्बर 1932)

मदन मोहन मालवीय, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सी राजगोपालचारी एवं पुरूषोत्तम दास टंडन के अथक प्रयासों से डा. अम्बेडकर अपनी कुछ शर्तो पर गांधी ने समझौते करने पर तैयार हो गये अन्तत: गांधी एंव अम्बेडकर के बीच 26 सितम्बर, 1932 को एक समझौता हुआ जिसे पूना समझौता (पूना ऐक्ट) के नाम से जाना जाता है इस प्रकार है।

1. दलितो के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली समाप्त करके उनके लिए 71 के बदले 148 स्थान आरक्षित किये जायेगे।
2. केन्द्रीय विधायिका में भी दलितों के लिए 18 प्रतिशत आरक्षित किये जायेगे।
3. अछूतों को सार्वजनिक सेवाओं में उचित प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था की जायेगी।
4. अछूतो के समुचित सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षाणिक विकास के लिए प्रयास किये जायेगे।

गांधी के महत्वपूर्ण कथन :

- सिद्धांतों के कई टनों से व्यवहार का एक अंश भारी होता है।
- साथ्य एवं साधन की पवित्रता पर विश्वास गांधी का राजनैतिक दर्शन अहिसा के माध्यम से सत्य की स्थापना करना है जिसे वे सत्याग्रह की संज्ञा देते है असहयोग एवं सविनय अवज्ञा सत्याग्रह के ही महत्वपूर्ण अंग है।
- अहिसा कमजोरो का नहीं बल्कि सहासियों का अस्त्र है सत्याग्रही को आत्मपीड़ा सहते हुए भी दूसरो को कष्ट न देने की सलाह दी जाती है। गांधी यह भी स्पष्ट करते है कि हिंसा द्वारा परिवर्तन अस्थायी होता है अत: मेरा विश्वास हद्य परिवर्तन कराने में है जो अहिंसा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
- यदि हिंसा और कायरता में से किसी एक को चुनना है तो में हिंसा को चुनूगा।
- में नहीं चाहता कि मात्र अंग्रेज भारत से वाहर जाये मेरा उद्देश्य अंग्रेजीयत को वाहर करना है क्योंकि भारत अंग्रेजों के पैरो तले नहीं बल्कि अंग्रेजी सभ्यता के पैरो तली कुचला जा रहा है।
- मेरे अनुसार उन्नित के लिए पश्चिमी सम्पर्को की मनाही नहीं होनी चाहिए। हमारी खिड़कियों अवश्य खुली हो जिससे ताजी हवा आ सके किन्तु दरवाजे बन्द हो कि हवा इतनी तेज न आ जाए कि हमारे पांय उखाड़ जाए।
- गांधी की रणनीति में लोकतांत्रिक प्रक्रिया महत्वपूर्ण थी और महिलाओं को विशेष स्थान प्राप्त था। समाज सुधार के लिए वे नारियों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते थे और शिक्षा प्रसार में महिलाओं को सबसे महत्वपूर्ण कढ़ी मानते है।
- गांधी जन आधारित राजनीति में विश्वास करते थे उनके अनुसार जिस दिन समग्र जनता स्वावलम्लन का अर्थ जान जायेगी उसे उसकी स्वतंत्रता स्वयम मिल जायेगी। गांधी ने सभी भारतीयों से चरण चलाने की अपील की तो उनका मानना था कि भारत की गरीबी तो दूर नहीं होगी परन्तु भारतीयों में स्वावलम्वन की भावना अवश्य आ जायेगी।

23. ब्रिटिश भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार

- भारत में आधुनिक शिक्षा का आरंभ अंग्रेजों के द्वारा किया गया। इसमें मुख्यत: तीन एजेंसियां उत्तरदायी थी- विदेशी ईसाई मिशनरी, ब्रिटिश सरकार और प्रगतिशील भारतीय।

पृष्ठभूमि :

- एक व्यापारिक मुनाफा कमाने वाले संस्था के रूप में ईस्ट इंडिया कंपनी ने आरंभ में आधुनिक शिक्षा के विकास में नाम मात्र की दिलचस्पी ली। वारेन हेस्टिंग्स ने अपने प्रयासों से कलकत्ता मदरसा की स्थापना (1781) की। जिसमें अरबी, फारसी की शिक्षा दी जाती थी। 1791 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- अंग्रेज धर्म प्रचारक और ईसाई मिशनरियों द्वारा भी शिक्षा प्रसार के प्रयत्न किए गए। कैरी, टॉम्स, मार्शमैन, वार्ड जैसे पादरियों ने कलकत्ता के निकट सिरामपुर में ईसाई धर्म एवं आंग्ल शिक्षा का प्रसार किया।
- इसी प्रकार राजा राममोहन राय, राधाकांत देव, तेजसचंद, रायबहादुर आदि के प्रयास से शिक्षा की प्रगति हुई।
- व्यक्तिगत एवं निजी संस्थाओं द्वारा शिक्षा के प्रसार से कंपनी ने भी शिक्षा के महत्व को समझा फलस्वरूप 1813 के एक्ट से कंपनी की शिक्षा नीति प्रारंभ हुई।

उद्देश्य :

- प्रशासन का खर्च कम करने की चिंता और इसके लिए सरकार शिक्षित भारतीयों की संख्या बढ़ाना चाहतीह थी। जिससे प्रशासन एवं ब्रिटिश व्यवहारिक प्रतिष्ठानों की छोटे कर्मचारियो की बड़ी एवं बड़ती हुई जरूरतों को पूरा किया जा सके। एक ऐसा वर्ग पैदा करना जो रक्त और रंग की दृष्टि से भारतीय मगर रूचि, विचारों एवं आचरण एवं बुद्धि की दृष्टि से अंग्रेज हो। ताकि यह वर्ग सरकार और शासितों के बीच दुभाषिये का काम कर सके।
- शिक्षित भारतीय इंग्लैड में बनी वस्तुओं के बाजार का भारत में विस्तार करेंगे।
- पाश्चात्य शिक्षा भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन को स्वीकार करने को प्रेरित करेगी।
- भारतीयों को सभ्य बनाए जाने के लिए शिक्षा का विकास करना था अर्थात् श्वेत नस्लीय अधिभार के सिद्धांत को प्रमाणिकता देना था।
- शिक्षा नीति का उद्देश्य औपनिवेशिक हितों की पूर्ति, न कि जनता के हित के लिए।

विकास :

- 1813 के चार्टर एक्ट के द्वारा सर्वप्रथम कंपनी के संचालकों ने भारतीयों को शिक्षित करने का उत्तरदायित्व ग्रहण किया। इसके तहत् गवर्नर जनरल को भारतीयों पर 1 लाख रुपये की राशि शिक्षा कार्यों पर खर्च करने के लिए आवंटित की गई किन्तु इस धन का उपयोग वर्षों तक नहीं किया गया।
- बहुत दिनों तक यह निश्चित नहीं हो सकता कि 1813 के एक्ट द्वारा स्वीकृत राशि को किस प्रकार की शिक्षा के विकास पर खर्च किया जाय। अंग्रेज विद्वान एवं शासन अधि कारी ही नहीं बल्कि भारतीय विद्वानों का भी इस बारे में पारस्परिक मतभेद था। राजा राममोहन राय जैसे भारतीय एवं कुछ ब्रिटिश अधिकारी एवं कुछ ब्रिटिश अधिकारी अंग्रेजी शिक्षा को प्रारम्भ किया जाने के पक्ष में थे। परन्तु कुछ अंग्रेज और भारतीय ऐसे थी थे जो भारतीय भाषाओं व ज्ञान की शिक्षा पर सरकारी धन का व्यय चाहते थे। फलस्वरूप इन दोनों पक्षों में वाद-विवाद चलता रहा। यह विवाद आंग्ल-प्राच्य विवाद कहलाया। इस विवाद का अंत 1833 में विलियम बेंटिक के समय हुआ।

आंग्ल-प्राच्य विवाद (Orintalist Vs Anglicists)

- भारतीय शिक्षा संबंधी नीति निर्धारण के प्रश्न पर दो प्रमुख दल उत्पन्न हो गए थे, एक -प्राच्यवादी और दूसरा पाश्चात्यवादी।
- प्राच्यवादियों को नेतृत्व विल्सन व प्रिसेंप कर रहे थे जबकि आंग्ल (पाश्चात्यवादियों) का नेतृत्व ट्रेवेलियन कर रहा था।
- विवाद के दो मुद्दे थे-शिक्षा का माध्यम क्या हो? भारतीय या अंग्रेजी तथा अध्ययन का विषय परंपरागत या पाश्चात्य।
- प्राच्यवादी : भारत में पाश्चात्य विज्ञान एवं ज्ञान का प्रसार भरतीय भाषाओं के माध्यम से किया जाय। वस्तुत: प्राच्यवादी वारेन हेस्टिंग्स एवं मिंटो की नीतियों को लागू करना चाह रहे थे। प्राच्य दल विज्ञान की शिक्षा एवं विकास का विरोध ी नहीं थी उसका कहना था। कि यूरोपीय ज्ञान विज्ञान को ऐसी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाय जिससे भारतीय परिचित हैं। उपयोग वस्तुओं का अंग्रेजी से अरबी और संस्कृत भाषाओं में अनुवाद किया जाय।
- प्राच्यवादियों ने स्कूलों की स्थापना की, भाषाओं को नियोजित

किया, भारत में छापाखाना और प्रकाशन कार्य आरंभ किया। पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों तथा सम्पर्क के अन्य साधनों को विकसित किया। उन्होंने भारत के प्रथम वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं का निर्माण किया। उनका प्रभाव नगरीकरण को प्रोत्साहन देने वाला और धर्म निरपेक्ष था अतः पाश्चात्यकीकरण के विरोधी होते हुए भी ब्रिटिश प्राच्यवादी भारतीय संस्कृति के आधुनिकीकरण में सहयोगी हुए।

- प्राच्यवादी ऐसी रचनात्मक योजनाओं का प्रस्ताव का रहे थे जिनसे विदेशी व भारतीय तत्वों के सार्थक जीवन मूल्यों के आधार पर स्वयं को परिवर्तित कर सके। इसलिए परिवर्तन की प्रेरणा केवल पश्चिमी देशों से ही नहीं परन् भारत की प्राचीन संस्थाओं का फिर से अध्ययन करके दी जा सकती थी।
- प्राच्यवादियों का मानना था कि यह परिवर्तन जिन व्यक्तियों के लिए किया जाय उनके लिए सार्थक हो चाहे उसकीप्रेरणा प्राचीन भारतीय मूल्यों से ली गई हो या समकालीन यूरोपीय विचारों से।
- प्राच्यवादियों का एक सर्वाधिक दीर्घकालिक योगदान था भारतीयों में ऐतिहासिक जागरूकता का विकास, भारतीयों में सामुदायिक भावना की जागृति। अपने प्राचीन स्वर्ण युग के पुनर्जागरण के विचारों से भारतीयों में आत्म सम्मान और आत्मविश्वास जागृत हुआ।
- वस्तुतः प्राच्यवादी कूटनीतिक कारणों से भी इस नीति का पालन कर रहे थे। संस्कृत, फारसी, अरबी साहित्य पर शिक्षा देकर भारतीयों को पूर्ववत् जातियों एवं धर्मों में विभाजित रखा जा सकता था जो नवनिर्मित ब्रिटिश साम्राज्य के हित में था। विल्सन नहीं चाहता था कि भारतीय अंग्रेजी पढ़कर अंग्रेजों के साथ समानता के धरातल पर खड़े हो सके।

आंग्लवादी :

- इस समय लॉर्ड मैकारेल गवर्नर जनरल की कौसिल के विधि सदस्य के रूप में 1834 में भारत आया वह पाश्चात्य भाषा एवं सस्कृति की सर्वश्रेष्ठता पर विश्वास रखता था। उसने शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा को चुना। उसके अनुसार भारतीयों कीप्रचलित देशी भाषाओं में साहित्यिक एवं वैज्ञानिक ज्ञान कोष का अभाव है। उसने भारतीय भाषा एवं साहित्य की निकृष्टता दिखाने के लिए कहा कि ''एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक आलमारी भारत तथा अरब के संपूर्ण साहित्य के बराबर मूल्यवान थी।''
- इस तरह मैकाले एवं आंग्लवादियों ने पाश्चात्य शिक्षा एवं अंग्रेजी भाषा पर बल दिया अतः 1835 ई. में बेंटिक ने मैकाले के मत को स्वीकार किया। इस तरह प्राच्य-आंग्ल विवाद में आंग्लवादियों की जीत हुई तथा भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति की स्थापना हुई।
- अब समस्या यह थी किसी एक वर्ग को ही शिक्षा दी जाय या संपूर्ण जनता को। इस संदर्भ में अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत (Downword Filtertion Theory) को अपनाया गया जिसका अर्थ था शिक्षा समाज के डचच वर्ग को दी जाय और इस वर्ग से छन-छन कर शिक्षा का प्रभाव जनसाधारण तक पहुंचे।
- किन्तु यह नीति असफल रही क्योंकि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सरकारी पद प्राप्त हो जाता था। अतः वह अपने देशवासियों को शिक्षित करने का प्रयत्न नहीं करता था।
- अंग्रेजी विद्यालयों में शिक्षित व्यक्ति की विचारधारा में परिवर्तन हुआ और वह अपने लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने में असफल रहा। इसमें देशी विद्यालयों की अवहेलना की गई और सार्वजनिक शिक्षा के कार्यों को क्षति पहुंची।
- अतः 'अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत' को समाप्त कर ऐसी शिक्षानीति लाने की बात की गई जो सार्वजनिक शिक्षा का आधार बन गया। इसी क्रम में 1854 का Woods Dispatch आया।

चार्ल्स वुड घोषणा पत्र-1854

- 1854 से पूर्व डचच शिक्षा के विकास की गति धीमी रही। स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान नदीं दिया गया। अतः शिक्षा के विषद् सर्वेक्षण हेतु Board of Control के प्रधान चार्ल्स वुड की अध्यखता में एक समिति गठित हुई। इस समिति का सुझाव ही वुड घोषणा पत्र के नाम से जाना जाता है। यह 100 अनुच्छेदों का एक लंबा घोषणा पत्र था जिसमें शिक्षा के उद्देश्य माध्य सुधारों की योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गयी। इसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा गया।
- घोषणा-पत्र के अनुसार भारतीय शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रसार।
- महाविद्यालय के स्तर पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी और आधुनिक भारतीय भाषाओं दोनों के माध्यम से होनी चाहिए।
- लंदन विश्वविद्यालय के नमूने पर विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाय।
- स्त्री शिक्षा का प्रसार किया जाय
- व्यावसायिक शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूल व कॉलेज खोले जाय

- अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रत्येक प्रांत में प्रशिक्षण विद्यालय का निर्माण किया जाय।

क्रियान्वयन :

- 1858 में कलकत्ता, मद्रास एवं बंबई में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई।
- 1854 से प्राइमरी शिक्षा के बजाय माध्यमिक एवं डचच शिक्षा पर अधिक बल दिया गया।
- 1856 में रूड़की एवं कलकत्ता में दो तकनीकी महाविद्यालय खोले गए।

वुड घोषणा पत्र को शिक्षा का मैग्नाकार्टा अर्थात् महाधिकार पत्र कहना अनुचित है। इसमें व्यापक साक्षरता के आदर्श को स्वीकारा नहीं गया था। प्राथमिक शिक्षा की अवहेलना की गई। शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान नहीं किए गए। तकनीकी शिक्षा बहुत सीमित रही। इस प्रकार वुड़ का घोषणा पत्र भारत के कल्याण से प्रेरित नहीं था। इसने भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल का उत्पादक एवं इंग्लैंड में बने माल के उपभोक्ता के रूप में माना।

हंटर कमीशन (1882) :

- 1882 में लॉर्ड रिपन के समय हंटर की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन हुआ। वस्तुत: 1854 के वुड घोषणा पत्र के अधीन जो कदम उठाए गए थे उनका मूल्यांकन करने के लिए हंटर कमीशन का गठन किया गया।
- आयोग ने प्राथमिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। प्राथमिक शिक्षा उपयोगी विषयों तथा स्थानीय भाषा में दी जानी चाहिए। इस शिक्षा में निजी प्रयत्नों का स्वागत किया जाना चाहिए।
- महिला शिक्षा के अपर्यापत विकास पर खेद प्रकट किया और इसे बढ़ाने पर बल दिया।
- डचच शिक्षा के संचालन से सरकार को हट जाना चाहिए।
- छात्रों को नैतिक शिक्षा देनी चाहिए। जिसमें सभी धर्मों के आवश्यक एवं मौलिक सिद्धांत शामिल हो।

कर्जन की शिक्षा नीति (विश्वविद्यालय आयोग 1902) :

- वस्तुत: प्रेस का विकास, शिक्षित भारतीयों द्वारा पत्रकारिता को महत्व देना, बढ़ता हुआ आम राजनीतिक असंतोष, कांग्रेस की स्थापना जैसी घटनाएं कर्जन के आगमन से पूर्व घटित हुई।
- अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के माध्यम से भारतीयों का परिचय पश्चिम से हुआ। कई ब्रिटिश प्रशासक आधुनिक शिक्षा प्रणाली को राजनीतिक असंतोष तथा आंदोलन के लिए उत्तरदायी ठहरा रहे थे। अत: यह धारणा बनती जा रही थी कि शिक्षा पर कठोर सरकारी नियंत्रण हो।
- ऐसे में कर्जन ने शिक्षा पर सरकारी नियंत्रण लगाने के उद्देश्य से शिमला में एक सम्मेलन बुलाया और 1902 में टॉमस रैले के अधीन विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया। यह आयोग केवल डचच शिक्षा तथा विश्वविद्यालय तक ही सीमिति था। रैले कमीशन की सिफारिश के आध ार पर 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (Indian Universites Act) पारित किया गया।
- इस अधिनियम ने विश्वविद्यालय प्रशासन के पुनर्गठन, विश्वविद्यालयों द्वारा महाविद्यालयों को अधिक कड़ा तथा व्यवस्थिति पर्यवेक्षण से संबंधित बातों पर जो दिया गया था।
- विश्वविद्यालय के उपसदस्यों की संख्या 50 से कम और 100 से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- विश्वविद्यालय पर सरकार का नियंत्रण बढ़ा दिया गया और सरकार को सीनेट द्वारा पारित प्रस्तावों पर निषेधाधिकार (Voto) दिया गया।

इस अधिनियम की भारतीयों द्वारा कटु आलोचना की गई क्योंकि इससे विश्वविद्यालयों की स्वतंत्रता समापत हो रही थी और डचच शिक्षा के विकास में बाधा पहुंचती। कर्जन की शिक्षा नीति का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है। कि उसने डचच शिक्षा की अपेक्षा प्राथमिक शिक्षा पर शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों पर व्यावसायिक शिक्षा की अपेक्षा कृषि शिक्षा पर जोर देना अधिक आवश्यक समझा क्योंकि ब्रिटिश राज का विरोध करने वाले शहरी शिक्षित भारतीय थे।

1913 का शिक्षा संबंधी घोषणा पत्र :

- इसमें कहा गया कि प्रत्येक प्रांत में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की जाएगी।
- राष्ट्रवादियों की अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की मांग को अस्वीकार किया गया। सरकार का उद्देश्य निरक्षरता के प्रसार को रोकना है, घोषित किया गया।
- केवल प्रांतीय सरकारों को यह प्रोत्साहन दिया गया कि वे समाज के पिछले तथा गरीब वर्ग को नि: शुल्क शिक्षा देने का प्रबंध करें।

सैडलर आयोग (1917) "Calcutta Universites Act" :

- 1917 में सरकार ने माइकल सैडलर की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया। इसे कलकत्ता विश्वविद्यालय की शिक्षा की जांच का कार्य सौंपा गया। इस आयोग में डा. आशुतोष मुखर्जी तथा डा. जियाउद्दीन अहमद नामक दो

भारतीय सदस्य भी थे।

- कलकत्ता विश्वविद्यालय के अतिरिक्त माध्यमिक एवं उचच शिक्षा, स्त्री शिक्षा, अध्यापकों के प्रशिक्षण, औद्योगिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के संबंध में भी अपने विचार रखे।
- इंटर परीक्षा को माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा के बीच की विभाजक रेखा माननी चाहिए अर्थात् स्कूल की शिक्षा 12 वर्ष की होनी चाहिए।
- स्नातक की शिक्षा त्रिवर्षीय होनी चाहिए।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय पर भार को कम करने के उद्देश्य से ढाका में विश्वविद्यालय खोलने का सुझाव दिया।
- शिक्षा के क्षेत्र में मुसलमानों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए इन्हें प्रोत्साहन देने की बात की गई।
- स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

हार्टोग कमीशन (1928) :

- 1919 के एक्ट के तहत् द्वैध शासन के अंतर्गत शिक्षा विभाग को भारतीय मंत्रियों के नियंत्रण में रखा गया। फलत: शिक्षण संस्थाओं की संख्या में तेजी से विस्तार हुआ। शिक्षित व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई, परन्तु शिक्षा के स्तर में कमी भी आई। अत: 1928-29 में हार्टोग की अध्यक्षता में एक समिति गठित हुई।
- प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया जाय तथा सुधार एवं एकीकरण की नीति अपनाई जाय।
- ग्रामीण प्रवृति के विद्यार्थियों को महाविद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने से रोकना चाहिए। उन्हे मिडिल स्कूल तक ही शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्हे औद्योगिक एवं व्यावसायिक शिक्षा देना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों को सुधारने के प्रयासों और उचच शिक्षा योग्य विद्यार्थियों को दी जाय।

वर्धा योजना (बेसिक शिक्षा योजना) (1937) :

- 1937 में जनता द्वारा चुनी गई सरकारें व मंत्रिमंडलों की स्थापना हुई। अनेक प्रांतों में कांग्रेस की सरकारें गठित हुई फलत: गांधी जी ने हरिजन ये लेख लिखकर वर्धा ये एक सम्मेलन आयोजित किया।
- इसमें 7-14 वर्ष के बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की बात की गई।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी स्वावलंबी बन सके।
- विद्यार्थियों को उनकी अभिरूचि के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा दी जाय।

यह शिक्षा योजना इस आशा से तैयार की गई थी कि ग्राम एवं शहर के मध्य स्वस्थ संबंध तैयार होगा गांवों की व्यावसायिक अवनिति को रोकना संभव होगा। धनी एवं निर्धनों के बीच कोई अप्राकृतिक विभाजन नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति को जीवित रहने भर के लिए पर्याप्त मजदूरी प्राप्त हो सकेगी। किन्तु यह योजना द्वितीय विश्वयुद्ध के आरंभ होने तथा कांग्रेस मंत्रिमंडलों के त्याग पत्र दने के कारण प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुई।

सार्जेण्ट योजना (1944) :

- भारत सरकार के शिक्षा सलाहकार जॉन सार्जेण्ट ने एक शिक्षा योजना तैयार की।
- इसके अनुसार विश्वविद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अभी और विस्तार किए जाने की आवश्यकता थी।
- 6-11 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं के लिए व्यापक नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था हो।
- गरीब छात्रों को पर्याप्त वित्तीय सहायता देने की बात कही गई।
- इस योजना के अनुसार देश में 40 वर्षों के अंदर शिक्षा के पुनर्निर्माण का कार्य पूरा करना था।

कमजोर पक्ष :

- शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमजोरी था आम जनता की शिक्षा की उपेक्षा।
- 1911 में भारतीय आबादी के 94% लोग निरक्षर थे जबकि 1931 में 92% इसका कारण यह था कि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी पर बहुत अधित जोर दिया गया।
- शिक्षा प्रणाली अत्यधिक महंगी थी अत: धनी वर्ग एवं शहरी लोगों का इस पर एकाधिकार हो गया।
- अंग्रेजी भाषा पर अधिक बल देने से शिक्षित भारतीय और जनसाधारण के बीच अंतर बढ़ गया।
- स्त्री शिक्षा की अवहेलना की गई। लड़कियों की शिक्षा के लिए धन की कोई व्यवस्था नहीं की गई ऐसा इसलिए हुआ कि विदेशी अधिकारियों की नजर में स्त्री शिक्षा की कोई तात्कालिक उपयोगिता नहीं थी क्योंकि स्त्रियों को सरकारी दफ्तरों में क्लर्क नहीं बनाया जा सकता।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा की उपेक्षा की गई। 1857 तक देश में केवल 3 मेडिकल कॉलेज एवं 1 इंजीनियरिंग कॉलेज था और उसके उदरवाजे यूरोपवासियों के लिए खुले हुए थे।
- सरकार ने शिक्षा पर बहुत ही कम खर्च का प्रावधान किया 1886 में अपनी लगभग 47 करोड़ रूपयों की निबल आय

में से 1 करोड़ रूपए शिक्षा पर खर्च किए गए।

पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव

नकारात्मक :

- अंग्रेजी शिक्षा पर अत्यधिक बल देने से शिक्षित व्यक्ति एवं साधारण लोगों के बीच दरार पड़ गई।
- आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ नवयुवकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। उन्होने पुराने मानदण्डों एवं आदर्शों का बहिष्कार किया, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण किया। निषेधात्मक दृष्टिकोण अपनाकर उन्होंने प्राच्य विचारों को अबौद्धिक ठहराया। परन्तु नए प्रगतिशील सिद्धांत का निर्माण भी न कर सके। अत: उनके व्यक्तिगत जीवन में अराजकता आ गई।
- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य उपाधि प्राप्त करना था। परीक्षा में सफलता को शिक्षा के साथ उलझा दिया।
- शिक्षा अत्यधिक साहित्यिक व अव्यवसायिक रही, जिससे भारत की औद्योगिक और आर्थिक आवश्यकताओं तथा शिक्षा कोई सामजस्य नहीं रहा। अत: भारत में ऐसे शिक्षित युवकों की बड़ी संख्या खड़ी हो गई जिनके सामने विकास का कोई उपयुक्त मार्ग नहीं था।
- अंग्रेजी शिक्षा भारतीय समस्याओं का राष्ट्रीय समाधान सुझाने में असफल रही।
- ब्रिटिश शासन को आदर्श के रूप में माना गया। ब्रिटिश इतिहास के अध्ययन पर बल दिया गया। फलत : राष्ट्रीय भावनाओं के उदय को प्रोत्साहन नहीं मिला।
- हिन्दू-मुसलमान के बीच वैमनस्य बढ़ा। मुस्लिम वर्ग के बहुत सीमित अंश ने आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण था-उनमें शिक्षा का अभाव जबकि हिन्दूओं की बड़ी संख्या ने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की और सरकारी सेंवाओं को प्राप्त किया।

सकारात्मक प्रभाव :

- अंग्रेजी व अंग्रेजी भाषा में अनुवादित ग्रंथों के अध्ययन से भारतीयों का ज्ञानवर्धन हुआ और उन्हे एक विश्वजनित दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।
- भारतीयों को डार्विन, स्पेंसर, लॉक, स्मिथ, रस्किन, रसेल इत्यादि को पढ़ने का मौका मिला जिससे लोकतांत्रिक सिद्धांतों से प्रेरित होकर वे प्रतिक्रियावादी सामंती संस्थाओं एवं परम्पराओं के विरुद्धउठ खड़े हुए।
- शिक्षित भारतीयों ने रिकार्डो, लीस्ट, मार्क्स के अर्थशास्त्र संबंधी सिद्धांतों का अध्ययन किया और औद्योगीकरण तथा नवीन आर्थिक समसयाओं के स्वरूप की पहचान करने की समझ बढ़ी। इसी संदर्भ में औपनिवेशिक शासन की आर्थिक नीति की मीमांसा हुई और धन की निकासी के रूप में उसके स्वरूप को उद्घाटित किया।
- भारत में एक शिक्षित मध्यम वर्ग के उदय को प्रोत्साहन मिला।
- पत्रकारिता, प्रेस आदि को बढ़ावा मिला।
- अंग्रेजी शिक्षा ने विभिन्न प्रांतीय भारतीयों को एक सामान्य भाषा प्रदान की और उसे वृहतर विश्व के साथ जोड़ दिया।
- भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के अनेक कारणों में से यह एक था। आरंभिक राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्वकर्ता इस आधुनिक शिक्षा की उपज था।

निष्कर्षत: ब्रिटिश शिक्षा नीति औपनिवेशिक हितों से पश्चिालित थी। यह ब्रिटिश के व्यापक सांस्कृतिक नीति का अंग थी। जिसका उद्देश्य देशी लोगों को यह महसूस करानां था कि वे सास्कृतिक दृष्टि से पश्चिम के लोगों की तुलना में पिछड़े हुए हैं। फिर भी भारतीय जनजीवन पर इसका सीमित सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

अंग्रेजी शिक्षा एवं राष्ट्रवाद

- अंग्रेजी शिक्षा और राष्ट्रवाद को लेकर प्राय: चर्चा की जाती है कि इस शिक्षा ने भारतीय जनता के भीतर राष्ट्रीयता की भावना को जन्म दिया। इसी सदंर्भ में यह प्रश्न उठता है कि भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में अंग्रेजी शिक्षा का कहां तक योगदान था। यदि भारत में अंग्रेजी शिक्षा का अस्तित्व न होता तो क्या भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हो सकता था? इस संदर्भ में ब्रिटिश विद्वानों का मानना है कि राष्ट्रीय भावनाएं अपने आप में भारत की भूमि पर जीवित नहीं हुई वरन् वे एक विदेशी उपज थी जो विदेशी हाथों एवं प्रभावों से बोर्ड गयी। अत: ब्रिटिश राज और उसके अन्तर्गत विदेशी प्रभुत्व के बिना भारतीय राष्ट्रवाद के उदय की कल्पना करना कठिन है।
- राष्ट्रवाद का उद्भव अंग्रेजी शिक्षा का प्रत्यक्ष परिणाम था। और अंग्रेजी शिक्षा में ऐसे बुद्धिजीवी वर्ग को जन्म दिया जो विचारों को आत्मसात् करने के लिए तत्पर था। भारत में या इग्लैण्ड में या अन्य देशों के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीयों ने राष्ट्रवाद के सिद्धांत को ग्रहण किया। ब्रिटिश इतिहास तथा राजनीतिशास्त्र का अध्ययन करने से भारतीय बुद्धिजीवियों को इन सिद्धान्तों का ज्ञान हुआ।
- शिक्षित भारतीयों ने अंग्रेजी जनतांत्रिक साहित्य का अध्ययन किया जिसके कारण राष्ट्रीय आन्दोलन को जनतांत्रिक आधार मिला यहीं से उन्हें निर्वाचन,मताधिकार, समाचार पत्रों, प्रतिनिधि सरकार आदि के लिए आन्दोलन की प्रेरणा

मिली। अत: अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से ही जनतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास हुआ। साथ ही इस शिक्षापद्धति ने उन शिक्षित भारतीयों को जो देश के विभिन्न कोनों में थे आपस में विचार-विर्मश करने का माध्यम दिया जिससे राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

- उपरोक्त मत के विपक्ष में विद्वानों का कहना है कि अंग्रेजी शिक्षा की भूमिका प्रगतिशील थी किंतु यह सत्य नहीं है कि भारतीयों में राष्ट्रवाद का जन्म किसी एक कारण से हुआ है। चीन फारस, यूनान, टर्की एवं अन्य देशों के इतिहास से स्पष्ट हो जाता है कि जिन देशों में अंग्रेजी शिक्षा का कोई अस्तित्व नहीं था वहां भी राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।
- जहां तक अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वर्ग की बात है तो भारत में इस वर्ग की संख्या अत्यनत सीमित थी। 1930 तक भारत की जनसंख्या के केवल 2% व्यक्ति ही अंग्रेजी बोल या समझ सकते थे। ये शिक्षित एवं व्यवसायी वर्ग शहरों के निवासी थे और इन्होंने उसने भारतीय भाषा बोलने वाली जनसंख्या से संपर्क भी नही रखा। इसी कारण प्रारम्भिक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन सशक्त नहीं बन सका। जहां कही भी राष्ट्रीय आन्दोलन में जन आन्दोलन का रूप धारण किया उसमें अंग्रेजी भाषा का लेश मात्र कोई योगदान नहीं था। दूसरी बात कि अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों के बीच खाई पैदा की। हिन्दू मुसलमानों के बीच वैमनस्व बढ़ाया फिर समग्र भारतीयों को एकजुट करने में इसकी भूमिका कैसे हो सकती है।
- भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म कुछ विशेष परिस्थितियों को कारण हुआ जिसका वातावरण ब्रिटिश शासन काल में तैयार हुआ। वस्तुत: भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन साम्राज्यवाद और उनकी शोषणमूलक व्यवस्था से उत्पन्न हुआ था। शिक्षा व्यवस्था चाहे जैसे रहती भारतीय बुर्जुआ वर्ग का उदय और ब्रिटिश बुर्जुआ वर्ग के प्रभुत्व के खिलाफ उसकी बढ़ती हुई प्रतिद्वंद्विता अवश्यंभावी थी। अगर भारतीय वुर्डाआ वर्ग को दूसरी सारी विचारधाराओं में अलग संस्कृत, फारसी में लिखे ग्रंथों से ही शिक्षा मिलती रहती तो उन्हें वहीं अपने संघर्ष के सिद्धांत और नारे भी मिल जाते।
- अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय जीवन को प्रभावित किया इसमें संदेह नहीं किंतु यह शिक्षित वर्ग अपने हितों को सुरक्षित रखने के लिए तत्पर था। शिक्षित बुद्धिजीवी वर्ग ने सामाजिक धार्मिक सुधारों को देश सेवा का माध्यम बनाया, राजनीतिक जनान्दोलन का नहीं।
- भारत में वास्तव में राष्ट्रवाद का जन्म विभिन्न स्वार्थों के वस्तुनिष्ठ संघर्ष का परिणाम था। अंग्रेजो का स्वार्थ यह था कि भारत को आर्थिक राजनीतिक रूप से गुलाम रखा जाए और भारतीय जनता का हित इसमें था कि वह ब्रिटिश शासन से मुक्त हो। हितो की इस टकराहट ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

निष्कर्ष :

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का प्रत्यक्ष एवं अनत्य परिणाम नहीं था। यह कहना इतिहास की दृष्टि के विरुद्ध होगा केवल अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीयों में राष्ट्रवाद पैदा हुआ। यदि अंग्रेज शासकों ने भारतीयों को शिक्षित करने का प्रयत्न न भी किया होता तो भी विदेशी शासन के विरूद्ध राजनीतिक आन्दोलन अवश्यंभावी था। अंग्रेजी शिक्षा का योगदान केवल परोक्ष रूप में था क्योंकि इसने भारतीयों को पाश्चात्य राजनीतिक जीवन का ज्ञान दिया।

24. सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन

S.S.R का विकास :

प्रथमचरण :

1820 से 1870 तक इस दौर में किसी विशेष व्यक्ति द्वारा सुधार के प्रयास किये जैसे राजाराम मोहन राय ईश्वर चन्द्र विद्यासागर **द्वितीय चरण : 1870-1900**

अब सांगठित प्रयास किये जाने लगे और जागरूकता हेतु सामाजिकता की भावना जागृति हुई महाराष्ट्र बगाल, पंजाब में विभिन्न संगठनों की स्थापना हुई।

तितीय चरण (1900-1920) : तिलक के नेतृत्व में यह स्वदेशी आन्दोलनो के बाद इन सुधारो का स्वरूप अब राष्टतवादी हो गया और सांस्कृति राष्ट्रवाद को राजनैतिक चेतना से जोड़ दिया गया।

चतुर्थ चरण (1920-1950) :

गाँधी के नेतृत्व अब इन सुधारो को समर्ग विकास में जोड़ दिया। अब राष्ट्रीय आन्दोलन से कोई भी पक्ष अछूता नहीं रहा। गाँधी ने सामाज सुधारक को कभी भी आन्दोलनो से पृथक नही होने दिया।

पंचम चरण : स्वतंत्रता प्राप्त के वाद इन सुधारो को संविधान के माध्यम से जारी रखा गया। मौलिक अधिकारो व राज्य के नीति निर्देशक तत्वों की विशेष भूमिका है।

उन्नीसवीं सदी में भारत में सामाजिक और धार्मिक जागरण

स्वाधीनता-संग्राम के जन-जागरण में भारतीय इतिहास में अनगिनत व्यक्तियों और संस्थाओं का योगदान है। 19वीं शताब्दी में हुए आंदोलनों ने भारतीयों को सामाजिक और धार्मिक चेतना से आंदोलित किया। जिस प्रकार फ्रांस की क्रांति में वहां के दार्शनिकों और चिंतकों का महत्तवपूर्ण योगदान रहा है, उसी भांति भारत की आजादी में यहां के चिंतकों, दार्शनिकों और समाज सुधारकों का योगदान रहा। 19वीं शताब्दी को भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक और बौद्धिक जागरण का काल कह सकते हैं।

राष्ट्रीय जागरण की प्रमुख धाराएं सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक हैं। पाश्चात्य शिक्षा और विचार के प्रभाव, अनेक सुधारकों के प्रादुर्भाव, ईसाइयत के प्रचार, भारतीय साहित्य और प्रत्र-पत्रिकाओं के योगदान ने अनेक सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों को जन्म दिया।

राजा राममोहन राय

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में इस सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय (1774-1833) और उनके द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज था। डॉ. नंदलाल चटर्जी ने राजा राममोहन राय को प्रतिक्रिया और प्रगति का मध्य बिंदु कहा है। इनका जन्म 22 मई, 1774 को बंगाल के राधानगर गांव में रमाकांत के घर में हुआ। उत्तराधिकार के रूप में इन्हें 'राय' की उपाधि प्राप्त हुई। शिक्षा प्रायः पटना में हुई, जहां इन्होंने इतिहास, धर्म, दर्शन और भाषाओं का अध्ययन किया। 16 वर्ष की आयु में इनकी आस्था मूर्तिपूजा में नहीं रही और इन्होंने फारसी में 'तोहफत-उल-मुवाहेदीन' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें मूर्तिपूजा का खंडन और एकेश्वरवाद की प्रशंसा की। पुस्तक की रचना पर क्रोधित होकर इनके पिता ने इन्हें घर से निकाल दिया। चार वर्ष तक इन्होंने भारत के विभिन्न स्थनों की यात्रा की। पिता द्वारा बुलाए जाने पर वे वापस घर लौटे और विवाह किया। 24 वर्ष की आयु में इन्होंने अंग्रेजी, हिब्रू, ग्रीक, फ्रेंच और लैटिन आदि भाषाओं का अध्ययन किया। कुछ रूढ़िवादी ब्राह्मणों की प्रेरणा से 1799 में इन्हें फिर घर से निकाल दिया गया। बारह वर्ष का कठोर समय इन्होंने अपने दो स्थानीय मित्रों के साथ बिताया। प्रारंभ में टैक्स कलेक्टर की नौकरी की। पिता की मृत्यु पर घरवालों से इनका मेल-मिलाप हुआ और ये परिवार के उत्तराधिकारी बने।।

1815 में उन्होंने 'आत्मीय सभा' की स्थापना की। 1820 में उन्होंने बाइबिल के आधार पर एक किताब भी लिखी। इनके एक ईसाई मित्र ने इन्हें ईसाई बनाने का भी प्रयत्न किया, पर सफलता न मिली। 20 अगस्त, 1928 को राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्म समाज' की स्थान की। उसका उद्देश्य हिन्दू समाज की बुराइयां दूर करना, ईसाइयत के प्रभाव को रोकना और सब धर्मों में आपसी एकता स्थापित करना था। ब्रह्म समाज का स्वरूप भारतीय था और इसे 'अद्वैतवादी हिन्दुओं की संस्था' कहा जा सकता है। इसका उद्देश्य हिन्दू धर्म को रूढ़ियों से मुक्त कर नया रूप देना था। यह मूर्तिपूजा के बहिष्कार, अवतारवाद के विरोध, ईश्वर की एकता और जीवात्मा की अमरता में विश्वास करता था। एक रूसी विद्वान के अनुसार, 'ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने ब्रह्म समाज की गतिविधियों में हर तरह से रुकावटें डालीं और बुद्धिवादियों को गुमराह करने की कोशिश की।'

राममोहन राय बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में भी अपनी योग्यता को प्रदर्शित किया। तत्कालीन समाज

में प्रचलित सती-प्रथा का उन्होंने डट कर विरोध किया। वास्तव में सती-प्रथा के विरोध की प्रेरणा उन्हें उस समय हुई, जब 1811 में उनके भाई जगमोहन की मृत्यु पर उनकी भाभी को जबरदस्ती सती करा दिया गया। इस प्रथा को बंद करने के लिए उन्होंने समाजव्यापी आंदोलन चलाया और ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक को कानून बनाने में सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक कुरीतियों, जैसे- बहुविवाह, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, छुआछूत और जाति-प्रथा की जटिलता को रोकने के उन्होंने भरसक प्रयत्न किया और विधवा-विवाह, अंतर्जातीय विवाह, स्त्री-शिक्षा और महिलाओं को संपत्ति में उत्तराधिकार का हिस्सा दिलाने के लिए प्रत्यन किया। बाद में यही ब्रह्म समाज का सामाजिक कार्यक्रम बन गया।

राममोहन राय ने आह्वान किया कि भारतीय तब तक उन्नति नहीं कर सकते, जब तक वे पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान को आत्सात न कर लें। वास्तव में वह न तो अतीत की प्रत्येक बात को ठीक समझते थे, और न ही पश्चिम को जैसा-का-तैसा अपनाने को कहते थे। वह तर्क और बुद्धि के आधार पर बात मानने को कहते थे। राजा राममोहन राय ने अंग्रेजी भाषा के अध्ययन पर बल दिया। कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की।

समाचार-पत्रों की आजादी के प्रति भी उन्होंने जन-जागरण किया। स्वयं कई पत्र निकाले। राजनीतिक समानता और कानूनी सुधारों के प्रति चेतना जगाई। उन्होंने सेना में भारतीयों को ऊंचे पद देने और उसके भारतीयकरण की मांग की। बंगाल में जमींदारों से पीड़ित कृषकों की हालत सुधारने के लिए जनमत को जगाया। भूमिकर हमेशा के लिए निर्धारित करने को कहा। भारतीय वस्तुओं पर निर्यात-कर हटाने को कहा। उन्होंने धन का निष्कासन (Economic Drain) दूर करने के लिए यूरोपीयों को स्थाई रूप से भारत में बसने को कहा।

राममोहन राय अंतर्राष्ट्रीयता के भी पुजारी थे। उन्होंने विभिन्न देशों की संसदों में से एक-एक सदस्य लेकर अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस बनाने का सुझाव दिया। पासपोर्ट प्रणाली को हटाने का सुझाव दिया। वह विश्व में स्वतंत्रता, समानता और प्रजातंत्र के समर्थक थे।

विद्वान लेखक सत्येन्द्रनाथ मजूमदार के अनुसार वे प्रथम हिन्दू थे जो विलायत गए। उन्होंने ब्रह्म समाज के माध्यम से अपने धर्म, परंपरा, विश्वास का त्याग न करके यूरोप की सभ्यता से सामंजस्य स्थापित करने को कहा। परिणामस्वरूप जहां तमाम यूरोप में ईसाइयत की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही थी, वहां भारत में शासकों का धर्म होने पर भी उसकी प्रगति नाममात्र की थी। वास्तव में राममोहन राय ने अपने विचारों को उपनिषदों एवं वेदों पर आधारित कर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता को स्थापित किया और अनेक कुरीतियों पर कटु प्रहार कर समाज में तर्क व स्वतंत्रता की भावना एवं बौद्धिक जागरण लाए। वह उस महान सेतु के समान थे, जिस पर चढ़कर भारतवर्ष अपने अथाह अतीत से अज्ञात भविष्य में प्रवेश कर सकता था।

देवेन्द्रनाथ टैगोर और ब्रह्म समाज

राममोहन राय के पश्चात ब्रह्म समाज का नेतृत्व रवीन्द्रनाथ टैगोर के पितामह महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर (1817-1905) ने लिया। 1839 में उन्होंने 'तत्त्वबोधिनी सभा' बनाई, जो 1842 में ब्रह्म समाज में मिला दी गई। उनके प्रभाव से ईश्वर चंद्र विद्ययासागर और अक्षय कुमार दत्त जैसे विचारक भी ब्रह्म समाज के सदस्य बने। उन्होंने बंगला भाषा में 'तत्त्वबोधिनी' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित की। उन्होंने और उनके अनुयायी अक्षय कुमार दत्त ने ब्रह्म समाज से ईसाइयत के प्रभाव को दूर करने की कोशिश की। दत्त ने कहा कि 'मुझे डर है कि कहीं वे 'हिन्दू' शब्द ही न भूल जाएं और अपने को विदेशी नाम से पुकारें।' 1846 में जब देवेंद्रनाथ के पिता का देहांत हुआ और ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते उन्हें मृत्यु संस्कार करने को कहा, तब उन्होंने इसे मूर्तिपूजा अनुष्ठान कहकर करने से मना कर दिया। इससे उनकी लोक निंदा हुई 1905 में उनका देहांत हो गया।

इन्हीं दिनों केशव चंद्र सेन (1838-1884), जिनकी आयु केवल 19 वर्ष की थी, ब्रह्म समाज के संपर्क में आए। केश्व चंद्र सेन 'जॉन दी बैप्टिस्ट', ईसा मसीह और सेंट पॉल के जीवन से बहुत प्रभावित थे। अत: शीघ्र ही उनका देवेन्द्रनाथ से टकराव हो गया। 1866 में ब्रह्म समाज क्रमश: 'ब्रह्म समाज और 'आदि ब्रह्म समाज' में बंट गया। 1870 में केश्व चंद्र सेन इंग्लैंड गए। उन्होंने वहां 6 महीने के प्रवास में लगभग 70 व्याख्यान दिया। स्थान-स्थान पर ईसाई मिशनरियों ने उनका स्वागत किया। कइयों को लगा कि वे ईसाई बनेंगे। केशव चंद्र सेन ने अनेक सामाजिक सुधारों-अंतर्जातीय विवाह, स्त्री-शिक्षा और विधवा-विवाह पर बल दिया। उन्होंने इसके साथ ही बाल-विवाह, बहुविवाह, जाति-प्रथा की कटु आलोचना की। अल्पायु से ही उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह कूच-बिहार के अल्पायु राजकुमार से कर दिया। वह यद्यपि स्वयं बाल-विवाह के विरोधी थे, पर यह कहकर कि 'ईश्वर का आदेश है कि यह विवाह हो जाना चाहिए, 'विवाह की स्वीकृति दे दी। इस घटना से उनकी प्रतिष्ठा को धक्का लगा। अत: इससे ब्रह्म समाज एक बार पुन: दो भागों में बंटा। केशव चंद्र सेन का समाज 'आदि ब्रह्म समाज' व शेष 'साधारण ब्रह्म समाज' कहलाया। 1884 में उनकी मृत्यु पर मैक्समूलर ने कहा था कि 'भारत ने अपना श्रेष्ठतम पुत्र खो दिया है।'

ब्रह्म समाज ने राजा राममोहन राय, देवेन्द्रनाथ टैगोर, केशव चंद्र सेन जैसे समाज सुधारकों के नेतृत्व

में अनेक धार्मिक और सामाजिक सुधारों को दिशा दी। जहां उन्होंने पुरानी रूढ़ियों व अंधविश्वासों को छोड़ने को कहा, मूर्तिपूजा, अवतारवाद को त्यागने को कहा, वहीं धर्म ग्रंथों के मूल तत्त्व, मानवीय दृष्टिकोण, तर्क और बुद्धि पर आधारित चिंतन को प्रोत्साहित किया। समाज सुधार में भी उन्होंने अनेक कुरीतियों को त्यागने और महिलाओं की दशा में सुधार करने पर बल दिया तथा जातिवाद और छुआछुत का विरोध किया।

अत: यह कहना गलत न होगा कि ब्रह्म समाज से भारतीय जनजीवन में जागृति आई। ईसाइयत की आंधी को रोका गया। भारतीयों को पाश्चात्य दर्शन और दिशा के अध्ययन के लिए प्रेरित किया गया। इससे प्रेरणा लेकर स्थान-स्थान पर नई-नई संस्थाओं का जन्म हुआ। हेनरी डिरोजियो (1809-1839), ईश्वर चंद्र विद्यासागर और महादेव गोविंद रानाडे ने प्रयत्न किए, परन्तु यह कहना पड़ेगा कि ब्रह्म समाज इतना प्रभावी न हो सका। आंतरिक झगड़ों से उसके बार-बार टुकड़े होते गए। यह अधिकतर पढ़े-लिखे वर्ग को ही प्रभावित कर सका।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

19वीं शताब्दी के समाज सुधारकों और शिक्षाविदों में ईश्वर चंद्र विद्यासागर का स्थान प्रमुख व्यक्तियों में है। राजा राममोहन राय की भांति उन्होंने समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में अदम्य साहस और कठोर परिश्रम का परिचय किया। इनका जन्म 1820 में एक अत्यंत गरीब परिवार में हुआ था। परिश्रम और कठोर साधना से वे संस्कृत कॉलेज में प्रधानाचार्य बन गए। वे भारत के प्राचीन साहित्य और पाश्चात्य ज्ञान के महान पंडित थे।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का सामाजिक क्षेत्र में अतुल योगदान था। उन्होंने महिलाओं की सामाजिक दशा सुधारने के लिए बड़े प्रयत्न किए। उन्होंने भारत की हिन्दू विधवाओं की दीन-हीन दशा देखकर विधवा पुनर्विवाह के लिए आंदोलन चलाया। 1855 में इसके लिए एक पत्रक भी प्रकाशित किया। उन्होंने समूचे देश में इसके लिए आंदोलन चलाया और 1856 में इसको कानूनी मान्यता दिलवाई। इस कानून के अंतर्गत पहला विधवा-विवाह उनकी ही देखरेख में हुआ। उन्होंने 1856-1860 के बीच लगभग 25 विधवाओं के पुनर्विवाह कराए। इसके अलावा उन्होंने बाल-विवाह और बहुविवाह का विरोध किया।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने शिक्षा और भाषा की उन्नति के लिए भरसक प्रयास किए। उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने संस्कृत कॉलेज में गैर-ब्राह्मणों को भी प्रवेश दिया। उन्होंने बंगला भाषा में स्वयं एक वर्णमाला 'वर्ण परिचय' तैयार की ओर बंगला साहित्य में गद्य शैली के विकास व शिक्षा के विस्तार के लिए कॉलेज की स्थापना की। उनके द्वारा अनेक स्कूल खुलवाए गए। उन्होंने महिलाओं में उच्च शिक्षा को बढ़ावा दिया। इसके लिए 1849 में कलकत्ता में बैथुन स्कूल की स्थापना की। इस स्कूल का मुख्य उद्देश्य महिला-शिक्षा को प्रोत्साहन देना था। शीघ्र ही उनका बैथुन स्कूल महिला शिक्षा का केंद्र बन गया, परन्तु इसके लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर को कठोर संघर्ष और सामाजिक बहिष्कार भी सहना पड़ा था। सरकारी निरीक्षक रहते हुए उन्होंने लड़कियों के लिए 35 विद्यालय स्थापित किए थे।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर एक महान शिक्षाविद्, सुधारक के साथ अत्यंत दयावान ओर सहृदयी व्यक्ति थे। उनके व्यक्तिगत जीवन की अनेक घटनाओं से अनेक लोगों ने प्रेरणा ली। वे दीनहीनों की आर्थिक मदद, विद्यार्थियों की अध्ययन में सहायता ओर महिलाओं की प्रगति में सदैव तत्पर रहते थे। वे एक महान मानवतावादी व्यक्ति थे।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

प्रसिद्ध राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' के रचयिता, बंगाल के महान उपन्यासकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1838-1894) ने भारतीय जनजीवन में, विशेषकर बंगाली समाज में एक नई सोच और चेतना जागृत करने का कार्य किया। इनका जन्म 26 जून, 1838 को चौबीस परगना के कांठालपाड़ा में हुआ था। इनके पिता यादव चंद्र चट्टोपाध्यास धार्मिक विचारों के थे और घर में साधु-संतों का आना-जाना रहता था। इनकी शिक्षा कांठालपाड़ा, मेदिनीपुर, हुगली और कलकत्ता में हुई। बंकिम बचपन में पढ़ाई-लिखाई में निपुण थे। मैकॉले द्वारा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा नीति के अंतर्गत 1857 में स्थापित कलकत्ता विश्वविद्यालय के वे पहले स्नातक थे। अंग्रेजी साहित्य के साथ-साथ उन्होंने वैदिक और प्राचीन संस्कृत साहित्य का सूक्ष्म अध्ययन किया।

बंकिम चंद्र बी.ए. पास करते ही डिप्टी मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त हो गए और कुछ काल बाद डिप्टी कलेक्टर के पद पर पहुंच गए। वे 1891 तक सरकारी नौकरी करते रहे। जैसोर, तेगुआ (कांथी), खुलवा और जहाजपुर स्थानों पर नौकरी करते हुए उन्हें बंग-जीवन के दर्शन हुए, इसके अलावा अंग्रेजी शासन की मनोवृत्ति पता चली तथा अनेक कटु अनुभव हुए।

उन्होंने बंगला भाषा में अपनी रचनाओं से भारतीयों में नवजागरण किया। 1872 में 'बंगदर्शन' नाम से एक मासिक-पत्रिका बहरामपुर से निकाली। बंकिम चंद्र की सभी उपन्यास, लेख इसी पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुए, जो बाद में पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित हुए।

उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा बंगाल में सामाजिक चेतना जागृत की। उन्होंने अपने विभिन्न पत्रों के माध्यम से बंगाल में प्रचलित विधवा-विवाह, बाल विवाह, बहुविवाह और जातिच्युत होने के भय का वर्णन किया। उन्होंने जातीय नियमों की जटिलता

का विरोध किया। उन्होंने नारी व्यथाओं, नारी यातनाओं और नारी संघर्ष का सजीव चित्रण कर समाज में चेतना जागृत की।

उन्होंने सांस्कृतिक और आधात्मिक जागरण में यथेष्ठ योगदान दिया। वे राजनीतिक परिवर्तन से पूर्ण सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जागरण को महत्त्व देते थे। हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता बताते हुए उन्होंने ज्ञान और कर्म के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने ईश्वर की अनन्य भक्ति, अनासक्त भाव से कर्म, इंद्रिय संयम, अहंकार रहित ज्ञान और दान का स्वरूप जैसे अनेक विषयों की चर्चा की है। उन्होंने देश की उन्नति के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार उपयोगी बताया, परंतु इसका उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक करने को कहा। वे ज्ञान और तकनीक में पाश्चात्य सहायता प्राप्त करने के समर्थक थे।, परंतु उसके अंधानुकरण के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम की भावना जगाई। 'आनंदमठ' उनका विश्वविख्यात उपन्यास माना जाता है। इसमें उद्धृत 'वंदेमातरम्' आजादी का नाद, मूलमंत्र और प्रेरणा-स्त्रोत बन गया।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने अपनी विविध रचनाओं के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना जागृत की और भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता का भाव पैदा किया।

रामकृष्ण और विवेकानंद

रामकृष्ण परमहंस (1834-1886) बंगाल के एक अत्यंत गरीब, अनपढ़ संत पुरुष थे। बचपन से ही ईश्वर भक्ति की इनमें अद्‌भुत लगन थी। अनेक बार भक्ति करते-करते वे अत्यंत विह्‌वल होकर संज्ञाहीन हो जाते थे। रोमारोलां ने इसकी भाव विह्‌वलता का वर्णन करते हुए लिखा कि 'यदि वह यूरोप में होते, तो उनकी बड़ी दुर्दशा होती। जरूर ही मानसिक चिकित्सा का रोगी मानकर पागलखाने में भेज लिया जाता।' सात वर्ष की आयु में ही इनके पिता का देहांत हो गया था। कुछ काल बाद कलकत्ता में गंगा के पूर्वी तट पर दक्षिणेश्वर में काली महादेवी का एक मंदिर बनवाया गया ओर तभी से वे काली के अनन्य भक्त हो गए। रामकृष्ण की भेंट प्रसिद्ध भैरवी और तोतापुरी जैसे संतों से हुई। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने इस्लाम और ईसाई धर्म के द्वारा भी ईश्वर का साक्षात्कार किया। निष्कर्ष रूप से उनका विचार था कि संसार के सीभी धर्म सच्चे रूप से ईश्वर तक पहुंचने के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं। रामकृष्ण परमहंस ने सभी धर्मो की एकता, ईश्वर की अनन्य भक्ति, मानव-सेवा और आध्यात्मिक जीवन को महत्त्व दिया।

रामकृष्ण परमहंस के परम शिष्य स्वामी विवेकानंद (1863-1902) हुए। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है, 'यदि कोई भारत को समझना चाहता है, तो उसे विवेकानंद को पढ़ना चाहिए।' रामधारी सिंह दिनकर का कथन है, 'रामकृष्ण, विवेकानंद एक ही जीवन के दो अंश, एक ही सत्य के दो पक्ष हैं। रामकृष्ण अनुभूति थे, विवेकानंद उनकी व्याख्या बनकर आए थे।' रामकृष्ण, हिन्दूधर्म की यदि गंगा थे, तो विवेकानंद उस गंगा के भगीरथ थे। इन दोनों का मिलन रहस्यवाद और बुद्धिवाद का मिलन कहा गया है।

विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1836 को कलकत्ता में हुआ। उन्होंने भारतीय दर्शन के साथ स्टुअर्ट मिल, हरबर्ट स्पेंसर, शैली, हेगेल और वर्ड्‌सवर्थ की रचनाओं को भी ध्यान से पढ़ा था। वह फ्रांस की क्रांति, नेपोलियन के रोमांचकारी जीवन और ईसा मसीह के जीवन से अत्यधिक प्रभावित थे। तत्कालीन धार्मिक और बौद्धिक नेताओं से उनकी भेंट हुई। नवंबर 1880 में रामकृष्ण से उनकी प्रथम भेंट हुई और शीघ्र ही विवेकानंद उनके भक्त बन गए। रामकृष्ण ही एकमात्र व्यक्ति थे, जिन्होंने विवेकानंद के इस प्रश्न, 'क्या आपने ईश्वर को देखा है?' का उत्तर 'हां' में दिया था। शायद रामकृष्ण परमहंस से विवेकानंद की भेंट न हुई होती, तो वे दुनिया के सबसे बड़े नास्तिकों में होते।

विवेकानंद 1891 में बिना किसी को साथ लिए नामहीन, अनजान भिखारी की भांति, यात्रा पर निकल पडे। उन्होंने भारत की यात्रा पर यहां की गरीबी, भुखमरी और दयनीय दशा का प्रत्यक्ष अनुभव और दर्शन किया। साथ ही उन्होंने भारत की विशालता और विविधता का भी ध्यान आया। अत: दो वर्ष तक भारत के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करते हुए उन्हें भारत की समस्याओं का ज्ञान हुआ। 1893 में शिकागों में हो रहे सर्वधर्म सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया। वहां 'भाइयों और बहनों' के आत्मीयता से पूर्ण शब्दों का उच्चारण कर उन्होंने संसार की जनता को मोह लिया।

1897 में उन्होंने अपने गुरू के नाम पर रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होंने हिन्दू संस्कृति का उद्‌घोष किया और यहां के धर्म और संस्कृति की विशेषता बताई। उन्होंने समाज में भारत के गौरवपूर्ण अतीत के प्रति वर्ग की भावना जाग्रत की। साथ ही अंधविश्वासी और कट्टरपंथी न बनने को कहा। विवेकानंद ने अपने जीवन दर्शन में पूर्व एवं पश्चिम के समन्वय की बात कही। साथ ही ईसाइयत के कुप्रचार का भंडाफोड़ किया। विवेकानंद ने वेदांत का प्रचार और सर्वधर्म की एकता के विश्वास व्यक्त किया।

स्वामी विवेकानंद ने सामाजिक दृष्टि से भी समाज सेवा और नारी सम्मान को महत्त्व दिया। छुआछूत का कटु विरोध किया। उन्होंने एक बार कहा था, "हम में से अधिकतर अभी न वेदांती हैं न पुराणपंथी और नही तांत्रिक। असल में हम हैं 'छुआछूतपंथी'। रसोई घर हमारा मंदिर है, पकाने के बर्तन हमारा

उपास्य देवता है और 'मत छुओ, मैं पवित्र हूं' हमारा मंत्र है। अगर यह एक शताब्दी तक और चलता रहा तो हम सब पागलखाने में होंगे।"

स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीयता के पोषक थे। उन्होंने भारतवासियों में आत्मविश्वास की भावना पैदा की, दुर्बलता को पाप बताया और शक्ति की पूजा का आह्वान किया। कुछ वर्षों के लिए सभी देवी-देवताओं की पूजा छोड़कर भारत मां की पूजा करने को प्रेरित किया। देश के नवयुवकों से कहा, 'उठो, जागो और तब तक न रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो।' उन्होंने पश्चिम के अंधानुकरण की कड़ी आलोचना की। उन्होंने एक स्थान पर कहा-

'वीरो, साहस का अवलंबन करो, गर्व से कहो कि मैं भारतवासी हूं। प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है, तुम चिल्लाकर कहो कि अज्ञानी भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, दलित भारतवासी मेरा भाई है.... भारतीय समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवाड़ी और वृद्धावस्था की काशी है।'

इतना ही नहीं स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिक पुत्री सिस्टर निवेदिता ने बंगाल के अनेक क्रांतिकारियों और समाज सेवियों को प्रत्यक्ष रूप से सहयोग भी दिया।

स्वामी विवेकानंद ने वेदांत के आधार पर धर्म और अध्यात्म को सर्वोच्च स्थान दिया। वे समाज सुधार एवं राजनीतिक पुनरुत्थान से पूर्व धार्मिक अभ्युत्थान को आवश्यक मानते थे। उनका निश्चित मत था कि भारत की आत्मा धर्म और अध्यात्म में निवास करती है। उन्होंने कहा था-

'यदि कोई हिन्दू आध्यात्मिक नहीं है, तो मैं उसे हिन्दू नहीं कहता। भारत की तितर-बितर फैली हुई आध्यात्मिक शक्तियों को एकत्रित करके उसकी राष्ट्रीय एकता स्थापना की जानी चाहिए।'

वे अध्यात्म को राष्ट्र का मेरुदंड मानते थे। अपना विचार है कि हम अपने प्राचीन पूर्वजों से चली आई, इस अमूल्य विरासत, अध्यात्म को पकड़कर कदापि ढ़ीला न होने दें। वे धर्म को तर्क और अनुभूति के आधार पर आंकने को कहते हैं।

'किसी बात पर यह सोचकर विश्वास न करो कि तुमने उसको किसी पुस्तक में पढ़ा है, किसी बात पर इसलिए विश्वास मत करो कि किसी ने ऐसा कहा है, अपितु तुम स्वयं सत्य की खोज करो।'

वे धार्मिक चेतना और सामाजिक प्रगति को एक दूसरे से जुड़ा हुआ मानते हैं, इसलिए उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों, रूढ़िवादिता, खोखले रीति-रिवाजों को दूर करने पर बल दिया। उन्होंने जाति-प्रथा की जटिलता, छुआछूत और अन्य कुरीतियों को समाप्त करने और नारी सम्मान, नारी शिक्षा के उत्थान के लिए प्रेरणा दी।

सामाजिक सुधारों में वह लोगों की अज्ञानता, अनाथों की सहायता और गरीबों की कठिनाइयों को दूर करने को प्राथमिकता देते थे। उनका विचार था कि गिरे हुए की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। वे शिक्षित भारतीयों को संबोधित करते हुए कहते थे-

'जब तक भारत में करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से ग्रसित होकर जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तब तक मैं प्रत्येक उस व्यक्ति को देशद्रोही समझूंगा, जो उनके खर्च से शिक्षित होने के बाद उनके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं देता।'

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद के विचारों का देश-विदेश में बड़ा प्रभाव हुआ। सुभाष चंद्र बोस ने लिखा है कि 'उनमें बुद्ध का हृदय और शंकराचार्य की बुद्धि थी तथा वह आधुनिक भारत के निर्माता थे।' गांधी जी ने कहा है कि 'स्वामी विवेकानंद के लिए किसी परिचय की जरूरत नहीं, उनका नाम ही प्रेरणा है।' रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'सृजन की प्रतिभा' कहा। अमेरिका में विवेकानंद अपने युग में 'तूफानी हिन्दू' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अत: निश्चित ही भारत के नवजागरण में विवेकानंद का बहुत बड़ा योगदान है।

स्वामी दयानंद और आर्य समाज

राजा राममोहन राय ने जहां ईसाइयत के विरुद्ध पहले मोर्चे पर लड़ाई लड़ी, जो रक्षा के बंधन का मोर्चा था, वहां स्वामी दयानंद (1824-1883) ने आक्रमण प्रारंभ कर दिया, क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की नीति ही है। स्वामी दयानंद का जन्म गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर एक ब्राह्मण परिवार में 1824 में हुआ। इनके बचपन का नाम मूलशंकर था। एक बार शिवरात्रि के पर्व पर उन्होंने एक चूहे को शिवलिंग से खाद्य सामग्री ले जाते देखा। उन्हें लगा कि जो भगवान अपनी रक्षा नहीं कर सके, वह अन्य की रक्षा कैसे करेंगे। बस यही घटना उनके जीवन की परिवर्तनकारी घटना साबित हुई। स्वामी पूर्णानंद से उन्होंने संन्यास की दीक्षा ली और अब वे दशनंद कहलाने लगे। उन्होंने मथुरा जाकर स्वामी विरजानंद से ज्ञान प्राप्त किया, जिसमें उन्होंने संसार को वेदों का ज्ञान देने को कहा। 1872 में कलकत्ता में इनकी भेंट ब्रह्म समाजी नेता केशव चंद्र सेन से भी हुई, जिसमें केशव चंद्र ने उन्हें संस्कृत बोलने की बजाए हिन्दी में व्याख्यान देने का सुझाव दिया। 10 अप्रैल, 1875 को उन्होंने 'आर्य समाज' की स्थापना की और उसमें 28 नियमों का समावेश किया।

बाद में दिल्ली, पंजाब का दौरा करते हुए लाहौर में आर्य समाज की स्थापना की गई और केवल दस नियम बना दिये गए। जोधपुर में कुछ विरोधियों ने इनको कांच पीसकर पिला दिया, जिसके कारण 30 अक्टूबर, 1883 को दीवाली के दिन इनका

देहावसान हुआ।

स्वामी दयानंद ने धार्मिक अंधविश्वास, राजनीति, शिक्षा, समाज सुधार-सभी ओर आक्रामक रुख अपनाया। 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से जहां वेदों की महत्ता को संसार के सम्मुख रेखा, वहां वाममार्ग, देवी भागवत, मूर्तिपूजा तथा बौद्ध, जैन, ईसाई और मुस्लिम-विभिन्न संप्रदायों एवं मतों के अंधविश्वासों और रूढ़ियों का खंडन किया। अपने जीवन का उद्देश्य 1867 में हरिद्वार कुंभ के अवसर पर पाखंड-खंडनी पताका फहराकर स्पष्ट किया। उन्होंने अंधविश्वास और अज्ञान को हटाने के लिए शिक्षा पर विशेष बल दिया। उन्होंने निराकार परमेश्वर की सत्ता को महत्त्व दिया और मूर्तिपूजा, अवतारवाद और बाहरी दिखावे का डटकर विरोध किया। ईसाई मिशनरियों के क्रियाकलापों की कटु आलोचना की और पारंपरिक भारतीय सभयता और संस्कृति के प्रति स्वाभिमान पैदा किया।

शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी दयानंद व उनके अनुयायियों का विशेष योगदान है। अनेक स्थान-स्थान पर डी.ए.वी. स्कूलों, कॉलेजों, गुरुकुलों एवं कन्या पाठशालाओं की स्थापना हुई। एक ओर पाश्चात्य शिक्षा शैली पर लाला हंसराज ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया, वहीं भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति पर आधारित गुरुकुलों की स्थापना स्वामी श्रद्धानंद ने की।

स्वामी दयानंद ने आश्रम व्यवस्था को महत्त्व दिया और वर्ण व्यवस्था को गुण व कर्म के अनुसार ही मानने को कहा। छुआछूत-प्रथा का विरोध किया और नारी के प्रति सम्मान को बढ़ावा दिया। बाल-विवाह, कन्या-वध, पर्दे की प्रथा जैसी कुरीतियों का विरोध किया।

राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानंद ने स्वदेशी, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वराष्ट्र पर बल दिया। संभवत: वे स्वराज्य के पहले संदेशवाहक थे। स्वामी दयानंद ने बताया कि 'कोई कितना ही कहे परंतु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि व उत्तम होता है।' एनी बेसेंट ने कहा था कि 'दयानंद पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीयता का नारा लगाया।' दयानंद ने विदेशी शासन की कटु आलोचना की और इसका कारण आपस की फूट, अशिक्षा, बाल-विवाह, वेदों का कुप्रचार और देशभक्ति का अभाव बताया। स्वामी दयानंद ने भारत की दासता को अपना मूल रोग बताया। अंग्रेज सरकार उनकी आक्रामक वाणी से इतनी आतंकित हुई कि लॉर्ड नार्थब्रुक (1872-1876) ने स्वामी दयानंद के पीछे गुप्तचर छोड़ दिया और उसकी सूचना ब्रिटिश सरकार को भी दी गई। स्वामी दयानंद ने भारतीय रियासतों के पतन का मूल कारण उनका भोग-विलासी जीवन बताया। वस्तुत: स्वामी दयानंद की प्रेरणा के देशभक्ति और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत नवयुवकों की एक श्रृंखला खड़ी हुई। लाला हंसराज, पं. लेखराज और स्वामी श्रद्धानंद जैसे व्यक्ति इसी श्रेणी में आते हैं। लाला लाजपतराय ने लिखा कि 'स्वामी जी ने देशभक्ति और देश सेवा का बीज हमारे हृदय में बोया।' बाल गंगाधर तिलक, अरविंद घोष, सुभाष चंद्र बोस, लाजपतराय और श्यामजी कृष्ण वर्मा और अनेक नेता उनके विचारों से प्रभावित हुए।

इसमें संदेह नहीं कि स्वामी दयानंद ने सोए भारत के नवयुवकों को झकझोर कर खड़ा किया। स्वदेश प्रेम और स्वाभिमान की भावना जगाई, पर इसके साथ यह कहना भी गलत न होगा कि उन्होंने एक नूतन अंधविश्वास को भी जन्म दिया कि वेदों में त्रिकाल ज्ञान सन्निहित है। आर्यावर्त की सीमाएं विंध्याचल पर्वत पर आकर समाप्त हो गई और यह दक्षिण भारत में नहीं फैला। साथ ही इनके अनुयाइयों ने सिद्धांतों के मंडन के स्थान पर दूसरे मतों के खंडन करने की प्रवृत्ति ज्यादा विकसित की।

ज्योतिबा फुले

19वीं शताब्दी के उपरोक्त सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों ने जहां मुख्यत: उत्तर भारत में हलचल मचाई, वहीं पश्चिम और दक्षिण भारत में कथित निम्न जातियों में भी चेतना जगाई। जाति-प्रथा की जटिलता का विरोध और समानता के सिद्धांत ने इन आंदोलनों को बढ़ावा दिया। अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त कानून में समानता, रेल, तार, डाक व्यवस्था, शिक्षा, साहित्य और समाचार-पत्र-सभी ने इनमें चेतना जगाई।

इन निम्न कहलाने वाली जातियों के संघर्ष में ज्योतिराव गोविंदराव फुले (1827-1890) के नाम महत्त्वपूर्ण है। इनका जन्म माली परिवार में हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि इनके पूर्वज पेशवाओं को पुष्प और फूल-मालाएं भेजते थे। अत: इन्हें फुले कहा जाता था।

ज्योतिराव बचपन से ही अत्यंत शीलवान थे। स्कॉटिश मिशन स्कूल में पढ़ते हुए उन्हें मानव अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी मिली। वे शिवाजी और जॉर्ज वाशिंगटन के जीवन से प्रेरित हुए। उन्होंने टॉमस पेन की 'राइट्स ऑफ मैन' पुस्तक पढ़ी थी और वासुदेव बलवंत फड़के से निर्भयता का पाठ। उनको अध्ययन से लगा कि सभी धर्मों में कुछ समानताएं हैं।

उन्होंने पिछड़ी जातियों में जागृति लाने के लिए प्रयत्न किए। उनको सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान दिलाने के लिए कई कार्य किए। उन्होंने नारी शिक्षा के लिए प्रयत्न किए। 1851 में पूना में एक कन्या विद्यालय खोला। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह के लिए प्रयास किए। उन्होंने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इसका उद्देश्य समाज में पिछड़े और उपेक्षित वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाना था। उन्होंने कई विद्यालय और अनाथालय भी खोले। ज्योतिराव ने कई ग्रंथ भी प्रकाशित किए, जैसे- 'धर्म तृतीय रत्न', 'इशारा' और 'शिवाजी की जीवनी'। 1872 में

उन्होंने एक पुस्तक 'गुलामगीरी' भी लिखी। इन ग्रंथों के द्वारा इन्होंने ब्राह्मणों के प्रभुत्व को चुनौती दी।

इन्होंने हटर कमीशन के सम्मुख अपना आवेदन किया, जिसमें बतलाया गया कि ईसाई मिशनरियों का उद्देश्य न ही देशभक्ति पूर्ण है और न केवल शिक्षा तक सीमित है।

शीघ्र ही ज्योतिराव अपने समाज सुधार कार्यो से प्रसिद्ध हो गए थे। उन्हों को 1876 में पूना नगर पालिका का सदस्य भी बनाया गया। 1888 में इन्हें लोग 'महात्मा' कहने लगे। जन-समाज में ये ज्योतिबा फुले के नाम से विख्यात हुए। 28 नवंबर, 1890 को इनका देहांत हो गया।

सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों का प्रभाव

उपरोक्त प्रमुख आंदोलनों के अतिरिक्त विभिन्न प्रांतों में ऐसे अनेक आंदोलन, संप्रदाय और व्यक्ति हुए जिन्होंने समाज में चेतना जगाई-मुसलमानों में अलीगढ़ और देवबंद आंदोलन, सिक्खों में सिंह सभा और बाद में गुरुद्वारा सुधार आंदोलन हुए और दक्षिण में थियोसोफिकल सोसायटी बनाई गयी। इसी प्रकार हिन्दू समाज में प्रार्थना समाज, राधास्वामी मत, सनातन धर्म सभा, देव समाज, पारसियो में रहनुमाई भजदयासन समाज (1851) आदि थे। इसी भांति गोपाल हरि देशमुख, के. टी. तेलंग, गोपाल गणेश आगरकर, आर. जी. भंडारकर, दादाभाई नौरोजी, नौरोजी फिरदौनजी, अन्ना दुरै और स्वामी रामतीर्थ जैसे विभिन्न व्यक्तियों ने धार्मिक और सामाजिक सुधारों में योगदान दिया।

19वीं शताब्दी में हुए प्राय: इन सभी सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों के क्रियाकलापों को ध्यान से देखने पर कुछ बाते समान दिखाई देती हैं। प्रथम, प्राय: सभी सुधारकों ने अपने चिंतन में मानव की तर्कबुद्धि, विवेक और स्वतंत्र विचारों पर बल दिया। अत: तर्कवाद तथा वैज्ञानिक और मानवीय दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला। साथ ही पश्चिम के अंधानुकरण को रोका गया और इसके लिए सभी ने शिक्षा के महत्त्व को समझा। सभी संस्थाओं द्वारा अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों में स्कूल और कॉलेज खोले गए। सभी ने नारी शिक्षा पर बल दिया।

दूसरे, सभी सुधारकों ने जाति-प्रथा की जटिलता और छुआछूत पर करारे प्रहार किए। कुछ आंदोलनों का मुख्य मुद्दा ही ये बन गया। इस आधार पर सभी ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना पर बल दिया और समाज में एकता की दिशा निधारित की।

तीसरे, सभी ने सामाजिक कुरीतियों पर कटु प्रहार किए, विशेषकर विवाह संबंधी सुधारों के लिए आंदोलन हुए। चौथे, सभी ने धार्मिक दृष्टि से रूढ़िवादिता, अंधविश्वासों, पाखंडों और कुप्रथाओं को छोड़ने पर बल दिया।

पांचवें, इन सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों ने आगामी राष्ट्रीय आंदोलनों की भूमिका तैयार की। समाज में व्यापक और देशव्यापी दृष्टिकोण जाग्रत किया। इन आंदालनों से आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और देशभक्ति की भावना बढ़ी। राष्ट्रीय चेतनाआई। छठे, नकारात्मक दृष्टिसे इस आंदोलन ने परस्पर प्रतियोगिता, स्पर्धा और कटुता को भी बढ़ावा दिया। इससे विभिन्न संप्रदायों में परस्पर तनाव उत्पन्न हुए। इसने सांप्रदायिक, हिंसात्मक दंगों और संगठानों को बढ़ावा दिया, जिसका लाभ उठाकर ब्रिटिश शासकों ने बीसवीं शताब्दी में परस्पर विभेद की नीति को भरपूर आगे बढ़ाया।

परंतु यह सोचना नितांत गलत होगा कि इन आंदोलनों ने भारतीय समाज और चिंतन को पूर्णत: बदल डाला। वस्तुत: ये धार्मिक और सामाजिक आंदोलन पुरातन ओर नवीनता, प्राचीन आस्था और नव बुद्धिवाद, परंपरा और आधुनिकता, अध्यात्मवाद और भौतिकतावाद, राष्ट्रीयता और सांप्रदायिकता के विचरों से ओतप्रोत थे। भारतीय ने न तो पाश्चात्य शिक्षा अथवा उसके दर्शन को पूरी तरह अपनाया और न ही परंपरावादी अतीत को पूरी तरह से नाकारा। सभी आंदोलनों में परंपरा और प्रगति का अद्‌भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। ये सभी आंदोलन प्राय: मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग की उपज थे, जौ शनै: देश के सभी वर्गों तक पहुंचने का प्रयास कर रहे थे। इन सभी आंदोलनों ने समाज, शिक्षा और संस्कृति के विकास में महत्त्वपूर्ण सहायता की। संक्षेप में इन आंदोलनों ने राष्ट्रीयता की जड़ों को सींचा, जिसका पौधा बींसवी शताब्दी में अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित हुआ। इन आंदोलनों ने देश की नई पीढ़ी को देश के नेतृत्व के लिए तैयार किया।

- शिक्षा के प्रसार में भी आर्य समाज की प्रमुख भूमिका थी। इसके सदस्यों लाला हंसराज ने DAV कॉलेज की स्थापना की तो दुसरी तरफ स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा गुरकुल कांकड़ी की स्थापना की गई।
- वेलिनटाई चिरौल ने आर्य समाज को भारतीय अशान्ति का जनक कहा है। इसी की पुस्तक इन्डिया है।

थियोसोपिकल सुसाइटी

- 1875 में मैडम ब्लावत्सथी और कर्नल अल्काट द्वारा न्यूयार्क में इसकी स्थापना की गयी।
- 1886 में मद्रास के निकट अडियार में इसका मुख्यालय बनाया गया।
- थियोसिफिकल दर्शन हिन्दु व बौद्ध व जर्धुष्ट (पारसी) को अपना आधार मानता था और भारतीय प्राचीन संस्कृति का समर्थक है।

- 1893 में आयरलैण्ड की फेवियन समाजवादी विचारक एनी वेसेन्ट, भारत आयी और इस संस्था से जुड़कर इसे और लोकप्रियता प्रदान की।
- 1898 में वनारस में सेंटल स्कूल की स्थापना की और इसी की प्रेरणा के आधार पर 1916 में मालवीय ने B.H.U. की स्थापना की।

अलीगढ़ मुस्लिम आन्दोलन

- सर सैयद अहमद मुस्लिम समाज में व्याप्त कुरूतियों व रूढ़वाधिताओं को समाप्त करने के लिए आधुनिक शिक्षा को अति महत्वपूर्ण मानते थे।
- सर सैयद ने 1875-77 में एग्लों मोहम्मडन अर्गेरऐटल स्कूल की स्थापना की जिसे 1920 में AMU नाम दिया गया। इसकी स्थापना में अग्रेजों ने सहायता की। इसके पहले प्रधानाचार्य थियोद वैग वने।
- सैयद अहमद ने दास प्रथा को समाप्त करने की बात की। कुरान पर एक टीका लिखी तथा तहजीव डल अखलात नामक पत्र निकाला।
- 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद अग्रेजों ने इनका साथ लेकर क्रांग्रेस को कमजोर करना चाहा इसी सन्दर्भ में वनारस के राजा सितारे हिन्द शिव प्रसाद गुप्त व सैयद अहमद के नेतृत्व में इन्डियन प्रेतियोटिक ऐसोशिऐशन की स्थापित किया।

देववन्द स्कूल

- 1866-77 में देववन्द नामक स्थान पर एक स्कूल खोला गया। जिसये इस्लाम में कुरान आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना था तथा मुसलिम समाज में बढ़ते पाश्चात्य मूल्यों के प्रसार को रोकना था।
- इसके संस्थापक मौहम्मद कासिम ननोतवी व राशिद गंगोही थे।
- इस संस्था ने कांग्रेस का समर्थन किया और सैयद की संस्था के विरूद्ध फतवा जारी किया।

मुख्य विन्दु :

- 19वी सदी के प्रारम्भिक दशको में भारतीय समाज विभिन्न रूढ़वादिताओं अन्धविश्वासो जटिलताओं से घिरा था जिसमें नारी की स्थित अपने न्यूनतम स्थिर पर आ चुकी थी। और निम्न जातीय छुआ-छूत जैसा अमानवीय व्यवहार किया जा रहा था। वस्तुत: इन दोनों वर्गो की शैक्षिणिक स्थित अति दयनीय थी।
- आधुनिक भारत में सामजिक धार्मिक सुधार आन्दोलन इस लिए भी विशिष्ट हो जाते है क्योंकि ये उपनिवेशक शासन के विरुद्ध उत्पन्न हुए जबकि लगभग शेष विश्व में कोई सुधार अपनी सरकारो के तहत हुआ है।
- यह आन्दोलन सामाजिक धार्मिक सुधार कहलाया क्योंकि भारत में समाज और धर्म इस तरह से जुड़े है कि इन्हे अलग ही नही किया जा सकता। वास्तव में तत्कालीन समाज में जो बुराईयों प्राप्त थी उन्हें धर्म का ही आवरण दिया था। अत: विना धर्म सुधार के समाज सुधार सम्भव नहीं था। इसी लिए प्राय: सभी समाज सुधारकों ने धर्म सुधार के भी प्रयास किये मूर्ति पूजा और देवोभव आदि की तीव्र आलोचना की भारत का S.S.R इस दृष्टि से धर्म निरपेक्ष था क्योंकि उसका वास्तविक लक्ष्य धर्म नहीं समाज सुधार था।
- 19वी सदी तक हिन्दू और मुस्लिम समाज दोनो की रूढ़वादिताये इतनी बढ़ चुकी थी कि चेतना आने पर उनमें सुधार अवश्यमभावी हो चुके थे। इसी समय आधुनिक शिक्षा से युक्त नवोदित मध्यम वर्ग ने महसूस किया कि यदि समाज सुधार के प्रयास न हुए तो हमारी संस्कृति ब्रिटेन संस्कृति में विलीन हो जायेगी।

  ईशाई मिशनरियो द्वारा किया जा रहा धर्म प्रचार भी सुधारको के लिए उत्प्रेरक का कार्य करता है।

  मानववाद : मानव के प्रति

  मानवतावाद : मानवाधर्म

S.S.R के अभिलक्षण :

मानवतावादी :

अब चिन्तन का विषय मनुष्य कल्याण हो गया अर्थात अब कोई भी सुधार मानव की स्थित के अनुसार प्रासंगिक व अप्रासगिक माना जाने लगा।

लौकिकतावाद :

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने इस सन्दर्भ में कहा कि ''ईश्वर के वारे में सोचने के लिए अभी मेरी पास वक्त नहीं है पृथ्वी पर ही वहुत काम किया जाना वाकी है।''

सुधारात्मक :

इसका लक्ष्य भारतीय समाज में आमूल परिवर्तन नहीं करना समाज और धर्म में व्यापत बुराईयो को दूर करना था। अर्थात क्रमिक तरीके से सुधार करना।

तर्कवाद व वुद्धिवाद की प्रधानता :

शिक्षा :

S.S.R का प्रमुख अस्त शिक्षा ही थी क्योंकि सुधारको का आकलन था कि समाज की जड़िता का मूलकारण अज्ञान है विदित है किस भी प्रकार के सुधारको ने शिक्षा प्रसार का

समर्थन किया।

विशेष :

(a) इन सुधारो की आत्मा धर्मनिरपेक्ष थी क्योंकि इसका वास्तविक लक्ष्य समाज सुधार था।

(b) कानून एवं संविधान के माध्यम से भी सामाजिक धार्मिक सुधारो को आगे बढ़ाया गया। जिसमें 1829 सती प्रथा निषेध, 1856 का विधवा पुर्नवा नियम, 1891 में लड़कियो की विवाह हेतु उम्र सीमा निधारित। यहाँ स्पष्ट हो जाना चहिए की अग्रेजो ने मुख्यत: दो विन्दुओ को ध्यान में रखकर ये सुधार किये। उन्हे नवोदित मध्यम वर्ग की प्रशासनिक परिसचालन में आवश्यकता थी और यह पढ़ा लिखा वर्ग समाज सुधार के प्रति जागरूक था।

अपनी श्वेत व्यक्ति के बोझ सिद्धान्त के अनुसार अपनी सत्ता का औचित्य सिद्ध करना था

25. भारतीय अधिनियम और संवैधानिक सुधार

1773 का नार्थ का रेग्यूलिटिंग एक्ट :

इस एक्ट के द्वारा ब्रिटिश संसद भारतीय मामलों में हस्तक्षेप आरम्भ करती है जिसके दो मुख्य कारक थे :

1. कम्पनी द्वारा लगातार युद्धों में संलग्न रहने के कारण उन्हें ध न की आवश्यकता हुई और उन्होंने ब्रिटिश संसद से मांग की।
2. वाह्य राजनैतिक परिदृश्य जिसमें अमेरिका जैसा समृद्ध उपनिवेश स्वततंत्रता संग्राम के वातावरण में जा चुका था।

प्रावधान :

- भारत पर शासन के लिए एक प्रशासक मण्डल बनाया गया (1+4) जिसमें बंगाल का गर्वनर जनरल तथा चार पार्षद होते थे और कोई भी कानून बहुमत से ही पारित हो सकता था।
- इस एक्ट के द्वारा कलकत्ता में उच्चतम न्यायालय की स्थापना हुई जिसके मुख्य न्यायधीश एंलिजा हम्पे।

1784 का पिट्स इण्डिया एक्ट :

भारत पर बोर्ड ऑफ कट्रोल तथा वोर्ड ऑफ डायरेक्टर का दौहरा नियंत्रण

- पिट्स से पहले Fox ने इंडिया विल प्रस्तुत किया जिसमें कम्पनी की राजनैतिक व व्यापारिक दोनों शक्तियां शीमित करने की बात की गई इस विल का भारी विरोध हुआ और Fox की मिली जुली सरकार गिर गई यह पहला और अन्तिम अवसर था। जब भारतीय विषय पर ब्रिटिश सरकार गिरी हो जब 1784 में ब्रिटश मंत्री ने केवल राजनैतिक नियंत्रण की बात की।

विशेष :

- 1773 के एक्ट में संशोधन कर पार्षदों की संख्या चार से घटाकर तीन कर दी गई और 1786 में गवर्नर जनरल को वीटो की शक्ति दी गई।
- तवाकुल करमान टाइमस मैगजीन द्वारा सर्वाधिक विद्रोही महिला का खिताब यमन में मानवाधिकार कार्यकर्ता।

1813 का एक्ट

1. इग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति से उत्पन्न नये पूंजीपति समूह ने संसद पर दबाव डाला कि भारत जैसा लाभदायक बाजार सभी के लिए खोला गाए इसीलिए भारत पर कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया अपवाद स्वरूप चाय व चीन के साथ व्यापार पर कम्पनी का एकाधिकार बना रहा।
2. भारत में शिक्षा व साहित्य की उन्नति के लिए एक लाख रुपये प्रतिवर्ष अनुदान रखा गया।
3. ईसाई धर्म प्रचारकों को भारत आने की छूट।

1833 का एक्ट

1. कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार पूर्णतः समाप्त।
2. बंगाल का गर्वनर जनरल अब भारत का गर्वनर जनरल हो गया।
3. संहिता आयोग के लिए विधि का गठन किया जिसका अध्यक्ष मैकाले को रखा गया।

- 1835 से भारत में आधुनिक/अंग्रेजी शिक्षा को अपनाया जो मैकाले के टपकन सिद्धांत पर आधारित थी।
- सरकारी सेवाओं में जातिय व नस्लीय भेदभाव पर रोक लगाने की वात की गयी।

1853 का एक्ट :

1. भारत में सभी सेवाओं में खुली प्रतियोगिता द्वारा नियुक्ति का प्रस्ताव। किन्तु व्यवहारिक रूप में यह 1858 में ही लागू हो सका।
2. कम्पनी के निर्देशकों की संख्या 24 से घटाकर 18 कर दी गई और विधि सदस्य को गर्वनर जनरल की कार्यकारिणी में स्थाई सदस्यता दे दी गयी।
3. अब कम्पनी को 20 वर्षों के लिए चार्टर न देकर सम्राट की इच्छा पर छौड़ दिया गया।

1858 का एक्ट : कम्पनी के ताबूद में अन्तिम कील।

- 1857 के महा विद्रोह के वाद ब्रिटिश संसद ने भारतीय प्रशासन का दायित्व अपने हाथों में ले लिया और गर्वनर जनरल की पदवी वायसराय हो गयी।
- 1784 से भारत पर चला आ रहा दौहरा नियंत्रण अब समाप्त हो गया और एक नये पद भारत राज्य सचिव की नियुक्ति हुई।

1861 का अधिनियम :

- भारत में पोर्ट फोलियों सिस्टम या विभागीय प्रणाली की नीव रखी गयी।
- वायसराय को अध्यादेश जारी करने की शक्ति दी गई।

- IPC और CRPC, हाईकोर्ट एक्ट पारित हुआ और 1865 में वम्बई, मद्रास, कलकत्ता में हाईकोर्ट स्थापित हुए।
- भारत में पहली बार (1860-61) आयकर लगाया गया।

1892-93 का अधिनियम :

1. भारत में निर्वाचन प्रणाली का आरम्भ (अप्रत्यक्ष निर्वाचन) उसी एक्ट के द्वारा सुरेन्द्र नाथ वनर्जी, आशुतोष मुखर्जी, गोखले जैसे नेता विधान सभा के सदस्य बने और उन सदस्यों को बजट पर प्रश्न पूछने का अधिकार भी दिया गया।

1909 का मार्ले मिन्टो अधिनियम :

- 1892 के एक्ट से प्रारम्भ निर्वाचन प्रणाली का विस्तार और गैर सरकारी सदस्यता को विधान परिषद में शामिल किया जाने लगा। परिषद के सदस्यों की अधिकारित में भी वृद्धि करते हुए अल्पकालिक प्रश्न पूछने कुछ विषयों पर मत देने का अधिकार दिया गया।
- वायसराय की कार्यकारणी में प्रथम भारतीय सदस्य के रूप में S.P. सिन्हा की नियुक्त हुई।
- इस एक्ट के द्वारा मुस्लिम वर्ग के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली की व्यवस्था की गई और इस तरह अंग्रेजों ने फूट डालो राज्य करों को व्यवहारिक बना दिया। (इस एक्ट को हितवादी निरकुशता कहा गया।)

1919 का मॉटैक्यू चैम्सफोर्ड सुधार : 1917 में मॉटेक्यू की अगस्त घोषणा में पहली बार भारत के लिए उत्तरदायी सरकार की बात की गई इसी का विस्तार 1919 के एक्ट में देखा जा सकता है।

प्रावधान :

- इस एक्ट की सबसे बड़ी विशेषता प्रान्तों में द्वैध शासन लागू करना है केन्द्र में तो पहले जैसी ही प्रशासनिक व्यवस्था रही किन्तु प्रान्तों में कुछ विषय उत्तरदायी सरकार को सोप दिये। प्रान्तों में आरक्षित विषय गर्वनर और उसकी परिषद के पास बने रहे किन्तु अस्तांतरित विषय चुने हुए मंत्रियों के दायित्व में रख दिये गये।
- सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली का और विस्तार कर सिक्खों को भी शामिल किया गया।
- भारत राज्य सचिव का वेतन अब लंदन से दिया जाने लगा और वायसराय के कुछ अधिकारों को लेकर भारतीय उच्चायुक्त पद का सृजन हुआ
- भारत में केन्द्रीय विधान सभा को द्विसदनात्मक बना दिया बाद में इसी एक्ट के माध्यम से प्रत्यक्ष निर्वाचन की नीव रखी गयी।

1935 का भारत सरकार अधिनियम

- इसकी सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि इसमें अखिल भारतीय संघ के निर्माण की योजना रखी गयी। जिससे ब्रिटिश प्रान्तों का शामिल होना अनिवार्य था। किन्तु देशी रियातों का शामिल होना वैकल्पिक था। (संघ तभी अस्तित्व में आ सकता था जब अधिक प्रतिनिधित्व व अधिक जनसंख्या वाली रियासते इसमें शामिल हो)।
- इस एक्ट के द्वारा 1919 के प्रावधान को और विस्तृत कर प्रांतों में पूर्व उत्तरदायी सरकार की नीव रखी गयी और द्वैध शाशन केन्द्र में लागू कर दिया गया।
- भारत में संघीय न्यायालय, संघीय बेंक की स्थापना की गयी। 1932 के मैकडोलन पंचाग और पूना पेक्ट के तहत निर्वाचित व्यवस्था को नियोजित किया गया और साम्प्रदायिक निर्वाचन व्यवस्था को नियोजित किया गया और साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली को विकसित किया गया।
- साइमन कमीशन की अनुशंशा पर वर्मा को भारत से अलग एक राष्ट्र वना दिया। सिन्धु को मुम्बई से अलग कर नया प्रान्त बनाया गया।